श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ (पंजी) की वार्षिक स्मारिका

# माणिभद्र

**39वां पुष्प वि. सं. 2054 सन् 1997**

☆ दिनांक 3-9-97 ☆ भादवा सुद द्वितीया बुधवार ☆ महावीर जन्म वांचना दिवस

सम्पादक मण्डल

सम्पादन
मोतीलाल भड़कतिया

सदस्य

राकेश मोहनोत
राजेन्द्र कुमार लूनावत
गुणवन्तमल सांड
संजीव कुमार जैन

प्रकाशक :
श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ (पंजी) जयपुर
**आत्मानन्द जैन सभा भवन**
घी वालो का रास्ता, जयपुर-302 003
फोन : 563260/569494

मुद्रक :
खुशबू आफसेट प्रिन्टर्स
41, एकता मार्ग, घाटगेट रोड, आदर्श नगर, जयपुर □ फोन : 609038

॥ श्री ऋषभदेवाय नम ॥

# प्राचीन बरखेड़ा तीर्थ जीर्णोद्धार में योगदान हेतु

## विनम्र निवेदन

की ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि

जगद्गुरू जेनाचार्य अकबर प्रतिबाधक र्य विजय श्री हीरसूरीश्वरजी म सा स ० मे सम्राट अकबर के निमत्रण पर इस क्षेत्र म ण करते हुए फतेहपुर सीकरी पधारे थे। इसका । इसी श्रीसघ के अन्तर्गत चन्दलाई ग्राम मे । जिनालय मे मिलता है । 17वीं शताब्दी मे शिष्या ने इस क्षेत्र म घूम-घूम कर जैन धर्म ।चार प्रसार किया था और उसी समय इस न बरखेडा ग्राम मे स्थित श्री ऋषभदेव स्वामी वेताम्बर जिनालय का निर्माण होना भी बताया । है।

किदवन्ती यह भी है कि बरखेडा ग्राम से त्र स्थान पर भूगर्भ से निकलने के पश्चात् जब ाडी मे रखकर प्रतिमाजी को ले जा रहे थे तो स्थान पर आकर गाडी रूक गई और किसी भी त मे आगे नहीं बढ सकी। तब इसी स्थान पर रजी का निर्माण करा कर प्रतिमाजी को प्रतिष्ठित ा गया था।

न विम्ब

जयपुर-कोटा के राष्ट्रीय राजमार्ग सख्या ' पर जयपुर से 30 किलोमीटर दूर शिवदासपुरा पास बरखेडा ग्राम मे यह तीर्थ स्थित है। पास म प्रसिद्ध जैन तीर्थ श्री पदमप्रभुजी स्थित है। यहा त्रा के लिए आने वाले श्वेताम्बर यात्रीगण बरखेडा ाकर ही सेवा-पूजा करते है।

प्रथम तीर्थकर भगवान श्री ऋषभदेव स्वामी ो प्रकट प्रभावी प्रतिमाजी 35 इची मनोरम एव मनोज्ञय है जिसके पाषाण से प्रतीत होता है कि यह प्रतिमाजी सात आठ सौ वर्ष पुरानी है एव तीन सौ वर्ष पुराना जिनालय होने से यह महिमामय तीर्थ है।

पूर्व जीर्णोद्धार

सुरम्य सरोवर किनारे स्थित यह जिनालय काल के थपेडो से ग्रसित होता रहा एव समय-समय पर जीर्णोद्धार भी होते रहे। अतिम जीर्णोद्धार वि स 1984 ई सन् 1927 के फाल्गुन मास मे होना पाया जाता है । यहाँ पर फाल्गुन सुदी मे वार्षिकोत्सव सम्पन्न होने के साथ-साथ यात्रिया का निरन्तर आवागमन बना रहता है।

पुन जीर्णोद्धार की योजना

पुन जीर्णोद्धार कराने के बारे मे चितन मनन चलते रह। आखिर मे पूज्य महत्तरा साध्वीजी म सा एव पूरे समाज द्वारा लिये गये सकल्प के साथ मूर्ति उत्थापन के बाद कार्यारम्भ हो गया। इसका विस्तृत विवरण पूर्व मे प्रकाशित माणिभद्र के अक मे दिया जा चुका है । गच्छाधिपति आचार्य श्रीमद् विजय इन्द्रदिन्न सूरीश्वरजी म सा के शुभाशीर्वाद, आचार्य श्री नित्यानन्दसूरीजी म सा के मार्गदर्शन एव शासन दीपिका महत्तरा साध्वी श्री सुमगलाश्रीजी म सा की सद्प्रेरणा निश्रा एव मार्गदर्शन मे 1 दिसम्बर 1995 से निर्माण कार्य प्रारम्भ हुआ जो निरन्तर अबाध गति से जारी है। मण्डावर सहित गम्भारे का निर्माण कार्य पूर्ण होकर शिखर का निर्माण कार्य प्रारम्भ हो गया है। रग मण्डप के लिए प्लेट फार्म भी तैयार हो गया है।

बाहर से बस व कारो द्वारा यात्रीगण आते ही रहते है । यात्रियो के आवागमन को देखते हुए इसी तीर्थ मे यात्रियों के आवास हेतु पिछले वर्ष साधारण द्रव्य द्वारा निर्मित कराए गए आवास गृह पर एक मजिल और चढाने का कार्य भी जारी है जो शीघ्र ही पूर्ण हो जाएगा ।

**आर्थिक योगदान हेतु विनम्र निवेदन**

ऐतिहासिक तीर्थ स्थलो की कडी मे यह स्थल भी अपने आप मे बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है । योजना विशाल एव महत्वाकाक्षी है जिसकी पूर्णता श्रद्धालुओ के सतत् सहयोग से ही सम्भव है । श्री आणदजी कल्याणजी, श्री नाकोडाजी, श्री चन्द्रप्रभु भगवान का नया मदिर, चैन्नई, श्री शखेश्वर पार्श्वनाथ ट्रस्ट, श्री आत्मानन्द सभा बम्बई आदि विविध संघो एव ट्रस्टो ने इसकी महत्ता को स्वीकार कर आर्थिक सहयोग प्रदान किया है । फिर भी योजना की पूर्णता हेतु अभी बहुत कुछ करना शेष है । जिनालयो एव ट्रस्टो मे जमा देव द्रव्य की धनराशि का तत्काल एव सही सदुपयोग करने का यह स्वर्णिम अवसर है ।

अब तक इस कार्य पर देवद्रव्य से करीब 55 लाख एव साधारण द्रव्य से करीब 10 लाख का खर्चा किया जा चुका है जबकि अनुमानित योजना लगभग डेढ करोड की है ।

पूर्व घोषित योजनाओं मे कतिपय पूर्ण होने के पश्चात् अब निम्न कार्यो में विशेष धनराशि प्रदान करने हेतु निम्न योजनायें उपलब्ध हैं :-

1 शिखर रू 18, 11,111)

2. रंग मण्डप

खम्भे व पाट 11,11,111

दादरी 11, 11,111

सामरण 12,11,111

3 त्रि-चौकी 9,11,111

4 सम्पूर्ण जिनालय के मार्बल के पाटिए एवं फर्श 15,11,111)

हर व्यक्ति विशेष के लाभार्थ एक ईट का नकरा 3111) रू. निर्धारित किया गया है जिनके नाम भी शिला लेख पर अंकित किए जावेंगे ।

अतः भारतवर्ष के समस्त संघों, पेढियों, तीर्थ-ट्रस्टियो एव प्रत्येक श्रद्धालु भाई बहिन से विनम्र निवेदन है कि ऐसे महान एवं ऐतिहासिक तीर्थ के जीर्णोद्धार में उपरोक्त योजनाओं में अथवा भावनानुसार ईटों के आधार पर अथवा एकमुश्त अधिक से अधिक आर्थिक योगदान करने की कृपा करें ।

बरखेडा तीर्थ के सम्पूर्ण वहीवट का हिसाब तपागच्छ सघ जयपुर के अधीन है । तपागच्छ संघ जयपुर पंजीकृत सस्था है जिसका सम्पूर्ण हिसाब आडिट होकर प्रतिवर्ष प्रकाशित किया जाता है ।

अपने आर्थिक सहयोग का नगद/चैक/ड्राफ्ट श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ, जयपुर के नाम से भिजवाने की कृपा करें ।

*विनीत*

| हीराभाई चौधरी | उमरावमल पालेचा | मोतीलाल भडकतिया |
|---|---|---|
| अध्यक्ष | सयोजक बरखेड़ा तीर्थ एव जीर्णोद्धार समिति | संघ मंत्री |

**श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ (पंजी) जयपुर**
**श्री आत्मानन्द जैन सभा भवन**
घी वालो का रास्ता, जोहरी बाजार, जयपुर-302 003
फोन : 563260/569494

# बरखेड़ा आदिनाथ प्रभु

सा श्री पद्मरेखाश्रीजी मा सा , जयपुर

(तर्ज सावन का महीना .. .)

**प्रभु भक्ति से तुटे भव बन्धन**

बरखेडा तीरथ मे बिराजे आदिनाथ
यात्रा करने चालो, है तीन भुवन के नाथ।
मूरत मगलकारी विभुकी
सूरत सलोनी आदि प्रभुकी
दर्शन करके नैना पावन हुए आज
सामने सरोवर जल छलकाते
वृक्ष हरे-भरे है लहराते
दृश्य मनोहर सुदर दिव्य है जिन दीदार
प्रभु दर्शन से कर्म कट जाते
पूजन से मन वाछित पाते
सूरतरु सम जिनवर है मुक्ति के दातार
तेरे गुणो की जपु नित माला
आतम घर मे होवे उजियाला
पुण्योदय से दर्शन मिले है जयकार
वरखेड़ा मडन आदि जिनेश्वर
नैया पार लगाओ दीनेश्वर
आतम ज्योति जलादो, मिटा दो अधकार
ॐकार शिशु 'पद्म का वदन
प्रभु भक्ति से दूटे भव वन्धन
शाश्वत शाति दायक वीतरागी जिनराज

# भगवान श्री ऋषभदेव स्वामी

श्री जैन श्वे. तपागच्छ संघ (पंजी.) जयपुर

# आचार्य श्री कलापूर्णसूरीश्वरजी म.सा. का

## शुभ-सन्देश

शोलापुर
दि. 27-7-97

श्री तपागच्छ संघ, जयपुर - धर्मलाभ । "माणिभद्र" वार्षिक स्मारिका अंक द्वारा आध्यात्मिक विचारों का प्रचार-प्रसार करने का जो उद्देश्य रखा है, वह उत्तम है।

चार गति के जीवों में मोक्ष का अधिकार मात्र मनुष्य को मिला है । इस मनुष्य जीवन का सच्चा मूल्यांकन एवं उपयोग मोक्ष की साधना में ही करना चाहिए।

प्रत्येक सुज्ञ मनुष्य को यह विचार करना है कि मेरी जीवन यात्रा मोक्ष मार्ग की तरफ आगे जा रही है या पीछे हट रही है । भौतिक सुख, सम्पत्ति और अहंकार में फंसकर मनुष्य अपना जीवन हार जाता है । असंख्य जन्मों के पश्चात् यह मिले हुए मनुष्य जन्म की करुण स्थिति बन जाती है ।

सभी मनुष्यों को सद्‌बुद्धि मिले यह माणिभद्र के अंक द्वारा जिन शासन की एवं लोगों के जीवन की उन्नति हो इसका सन्देश-उपदेश का सुन्दर प्रचार करते रहो, यही शुभकामना,

—कलापूर्णसूरी

# अनुक्रमणिका

♣ बरखेडा तीर्थ की यात्रा के लिए अवश्य पधारिए ♣

# पूज्य गुरु चरणों में शत्-शत् नमन एवं कोटि-कोटि वन्दन

*(तर्ज :—सावन का महीना, पवन करे शोर .....)*

वाणी सुणबा आओ, गुरु के दरबार ।
पुण्य रतन चन्द्र गुरुदेवा, देसी विपदा टार । वाणी सुणबा.. ....

उम्मेद मल सा. री या मूरत प्यारी, मनडे ने भावे, म्हॉ सगलॉ सूँ न्यारी,
पिस्ता देवी का नन्दन री, महिमा अपरम्पार । वाणी सुणबा ........

जन्म हुआ गुरुजी का झॉसी के अन्दर, दीक्षा ली गुरुजी ने अहमदाबाद आकर,
त्याग और तप ही हैं इनके जीवन का मुख्य आधार । वाणी सुणबा .........

अध्यात्मयोगी गुरुवर रामचन्द्रजी उनके शिष्य आप आप मौनी तपस्वी
उत्कृष्ट सायमधारी वन्दन बार हजार । वाणी सुणबा..............

पद्मरेखाश्रीजी आई मूरत प्यारी, मॉ सरस्वती की इनपे हुई कृपा भारी,
कच्छ देश को दिपाया, इन्होने शानदार । वाणी सुणबा . . ...... .

ॐकारश्रीजी की शिष्या हैं आप पावन प्रशातगिरा आपकी साथ
आत्मानद भवन मे शोभे चतुर्विध सघ । वाणी सुणबा...............

आत्म भवन मे इन्होने तपस्याए करवाई, 'दीपक एकासणा' और 'पचरगी' की धूम मचाई,
शत्रुजय मोदक तप का लगाया श्री सघ मे ठाठ । वाणी सुणबा . ..........

'सुमति मडल' थारे चरणो मे आया, पूजा सीखण री म्हे तो आश भर ल्याया,
'सुशीला' की भूल-चूक करजो अब माफ । वाणी सुणबा .... ..........

सुशीला छजलानी
अध्यक्षा,
श्री सुमति जिन श्राविका मण्डल,
जयपुर (राज.)

श्री पार्श्वचन्द्र सूरि संतानीय अध्यात्म योगी श्री रामचन्द्रजी म.सा. के

शिष्यरत्न ओजस्वी प्रवचनकार

## मुनिराज श्री पुण्यरत्नचन्द्रजी म.सा.

आपकी पावन निश्रा में संवत् 2054 वर्ष 1997 की चातुर्मासीय आराधनाएं जयपुर में सम्पन्न हो रही है।

# सम्पादकीय....

अडतीस वर्ष पूर्व संघ के आगेवानों द्वारा प्रारम्भ की गई ''माणिभद्र'' स्मारिका प्रकाशन की कडी में यह 39वां अंक श्रीसंघ की सेवा में प्रस्तुत करते हुए हार्दिक प्रसन्नता एवं सन्तोष है।

सौभाग्य से इस वर्ष युग प्रधान दादा साहब श्री पार्श्वचन्द्रसूरीजी के सन्तानीय मुनिराज श्री पुण्यरत्नचन्द्रजी म सा एवं पू सा- श्री ऊंकार श्रीजी म. सा. की विदुषी सुशिष्या अध्यात्मरत्ना साध्वी श्री पद्मरेखाश्री जी म. आदि ठाणा-3 का चातुर्मास सम्पन्न हो रहा है। जैन एकता के नारे को मूर्त रूप देने का तपागच्छ संघ का यह अनुकरणीय उदाहरण है।

चातुर्मास काल में परम्परागत रूप से सम्पन्न होने वाली विविध तपस्याओं आराधनों के साथ विविध आयोजन यहां सम्पन्न हुए है और हो रहे है। साथ ही बरखेडा तीर्थ जीर्णोद्धार का कार्य भी अबाध एवं द्रुत गति से निरन्तर जारी है।

पूर्व अंक में बरखेडा तीर्थ के मूलनायक भगवान आदिनाथ स्वामी का चित्र प्रकाशित किया गया था। जिस प्रकार प्रतिमाजी की मुखाकृति अलौकिक, दर्शनीय एवं चमत्कारिक है उसी के अनुरूप उनका प्रकाशित चित्र भी आकर्षण का केन्द्र बिन्दु रहा। इस चित्र की अत्यधिक मांग होने से इस अंक में भी वही चित्र पुनः प्रकाशित किया जा रहा है।

इस अंक को भी पठनीय, संग्रहणीय बनाने में पूज्य गुरू भगवन्तों, साध्वीवृन्द एवं विद्वान लेखकों ने भरपूर सहयोग प्रदान किया है। मूर्ति पूजा की ऐतिहासिकता को प्रतिपादित करने वाले लेख तो मुमुक्षुओं के लिए चिन्तनीय हैं ही, सांसारिक जीवन के विविध पक्षों पर भी विद्वान लेखकों ने अपनी रचनाओं का सृजन किया हैं।

इसमें यह उल्लेख करना उचित होगा कि लेखकों की मान्यतायें और विचारधारायें अपनी है उनसे सम्पादक मण्डल की सहमति का कोई सम्बन्ध नहीं है। सत्यासत्य का निर्णय तो स्वयं पाठकों को ही करना है। असावधानीवश रही हुई अशुद्धियों के लिए सम्पादक मण्डल अग्रिम रूप से क्षमाप्रार्थी है।

आशा है पूर्ववत यह अंक भी विचारक, चिंतक, विद्वदगण सभी के लिए उपयोगी सिद्ध होगा।

*जय महावीर,*

*सम्पादक मण्डल*

# श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ, (पंजी.) जयपुर
# की
# स्थायी प्रवृत्तियों

1 श्री सुमति नाथ भगवान का तपागच्छ मन्दिर, घी वालो का रास्ता, जयपुर

2 श्री सीमधर स्वामी मन्दिर, पॉच भाइयो की कोठी, जनता कॉलोनी, जयपुर

3 श्री रिखब देव स्वामी तीर्थ (जीर्णोद्धारान्तर्गत नव-निर्माण), ग्राम बरखेड़ा (जिला जयपुर)

4 श्री शातिनाथ स्वामी मदिर, ग्राम चन्दलाई (जिला जयपुर)

5 श्री जैन चित्रकला दीर्घा एव भगवान महावीर के जीवन चरित्र-भित्ती चित्रो मे सुमति नाथ भगवान का तपागच्छ मन्दिर, घी वालो का रास्ता, जयपुर

6 श्री आत्मानन्द जैन सभा भवन, घी वालो का रास्ता, जयपुर

7 श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ उपाश्रय, मारूजी का चौक जयपुर

8 नूतन भवन स 1816-18, घी वालो का रास्ता जयपुर

9 श्री वर्धमान आयम्बिल शाला, आत्मानन्द जैन सभा भवन, जयपुर

10 श्री जैन श्वे भोजनशाला, आत्मानन्द जैन सभा भवन, जयपुर

11 श्री जैन श्वे मित्र मण्डल पुस्तकालय एव सुमति ज्ञान भण्डार

12 श्री समुद्र-इन्द्रदिन्न साधर्मी सेवा कोष

13 स्वरोजगार प्रशिक्षण, उद्योग शाला, सिलाई शाला

14 जैन उपकरण भण्डार, घी वालो का रास्ता, जयपुर

15 "माणिभद्र" वार्षिक स्मारिका

# ''जिन खोजा तिन पाईया''

—मुनिराज श्री पुण्यरत्नचन्द्र जी म.सा., जयपुर

विशाल सागर को अनेक नामों से पुकारा जाता है जिसमें एक नाम रत्नाकर भी है। सागर के तल में विविध रत्न पडे हैं अतः इसका रत्नाकर नाम भी सार्थक है । लेकिन सागर में रहे रत्न जिसको पाने है उसको सागर की गहराई में जाना पडता है। जो गहरे पानी में गोता लगाता है उसके ही हाथ में रत्न चढ़ते है। जो गहराई में जाने के परिश्रम से डरकर किनारे पर ही खडा रह जाता है उसे तो सिर्फ शंख व छीपले ही हाथ चढते है।

अतः कवि ने ठीक ही कहा है कि—

''जिन खोजा तिन पाईया, गहरे पानी पेठ
बोरी ढुंढन मैं गई, रही किनारे बैठे''

आध्यात्मिक जगत में भी यही बात लागू पडती है। जिन्होंने आत्मिक सुख व शाश्वत शांति पाने का लक्ष्य बांधा उन्होंने भीतर में खोजना शुरू किया। बाहर से दृष्टि बंद करके भीतर दृष्टि लगाई। गहराई में गोता लगाया और एक दिन चैतन्य मूर्ति ज्ञानानंदमय भगवान आत्मा का साक्षात्कार किया।

महात्मा आनंदघन जी ने अजितनाथ प्रभु की स्तवना करते लिखा....

''चरम नयण करी मारग जोवतोरे, भूल्यों सयल संसार
जेणे नयणे करी मारग जोईये रे, नयण ते दिव्य विचार''

बाहर की चर्म दृष्टि से देखता हुआ सारा संसार भटक गया है। जिस दृष्टि से सच्चामार्ग दिखता है उसको दिव्य नयन की संज्ञा दी है।

श्रीमद् राजचन्द्र जी ने आत्मसिद्धिजी में लिखा-

'एक होय तीन काल में परमारथ को पंथ्'

भूतकाल में भी यही मार्ग था, वर्तमान में भी यही मार्ग है और भावी में भी यही मार्ग रहेगा। जिसको सच्चिदानंद भगवान आत्मा को पाना है ढूंढना है खोजना है उसको अंतर की गहराई में डूबकी लगानी होगी । विभाव से हटकर स्व-स्वभाव मे आना पडेगा।

प्राणी मात्र की चाहना है मुझे सुख मिल जाय मेरे दुःख मिट जाय। किन्तु शांति चाहते हुए भी शांति को नही पा रहा है। क्योंकि बाहर के साधनों में सुख नहीं वह न तो सिर्फ दुःख को कुछ समय के लिये दूर हटा सकते है। आज आदमी सुख की चाह में बडे बडे साधनों से सज्ज होता चला आ रहा है। अलग-अलग सेटो से सज्ज हो रहा है जैसा कि सोफासेट, डीनर सेट, टी. वी.

सेट, टेबल सेट, अन् ब्रेकेबल सेट, जेवर मोती के सेट, पिकनिक सेट आदि, फिर भी मस्तिष्क तो अप-सेट ही है।

आज धार्मिक जगत मे भी व्यक्ति धर्म के नाम पर क्रियाये कर रहा है फिर भी अशात है। अत अलग-अलग देवो की उपासना मे लगा है यहाँ वहाँ देवी देवताओ की सेवा मे दौड-भाग कर रहा है फिर भी वह अशात है।

पूजा करने वाला, जाप करने वाला, बरसो से सामायिक करने वाला भी यही कहता है शाति नहीं है, शाति का मार्ग दिखाइये। व्यवहारिक दुनिया मे भी अशाति, धार्मिक दुनिया मे भी अशाति ऐसा क्यो ? एक ही कारण है हमने धर्म की गहराई मे डुबकी नहीं लगाई सिर्फ बाह्य क्रिया के किनारे घूमते रहे है।

"धर्म क्रिया मे नहीं, तत्त्व मे छिपा है
धर्म सतह पर नहीं अतर के धरातल मे है
धर्म शब्दो मे नहीं धर्म अनुभव मे रहा है"

शक्कर की मिठास शब्द मे नहीं पदार्थ मे छिपी है। हजारो बार शक्कर बोलने से, मिश्री का नाम रटने से जीभ मीठी नहीं होती, मुँह मे रखने से ही मिठास का अनुभव होता है। जैसे मिश्री की मिठास शब्दा मे नहीं पदार्थ मे है वैसे ही आत्मा की शाति सिर्फ शब्दो मे या किताबो मे नही मिलेगी वह मिलेगी आत्मा की अनुभूति मे।

एक बार की बात है महात्मा आनदघन जी गुफा मे निवास कर रहे थे। कुछ भक्तो की टोली वदनार्थ आई। सूर्यास्त हो चुका था। सुन्दर सध्या खिली थी। नैसर्गिक सौन्दर्य मन को मोह रहा था। भक्त लोग आकर महात्मा से कहने लगे। गुरुदेव ! गुफा के गहरे अधकार से बाहर आइये, देखिये तो सही कितना सुदर है सध्या का अनुपम सौदर्य। दख के दिल बाग-बाग हो जायेगा।

गुफा मे स्थित गुरुदेव ने कहा-आप अदर आइये यहा पर भी एक अपूर्व सौदर्य खिला है जिसका पानकर हम धापते ही नहीं। तुम इस सध्या का आनद लो। बाह्य सध्या तो क्षणभर मे विलीन हो जायेगी, भीतर की सध्या सदा बहार खिलती ही रहेगी। तुम बाह्य से देखते हो, हम भीतर मे देखते है। महात्मा की बात सुनकर भक्त जन शर्मिंदे हो गये, अपनी बाह्य दृष्टि पर।

बस हमने भी आज तक बाह्य को देखा अब भीतर की गहराई मे जाकर अपूर्व आनद के खजाने को पाले और जन्म-जन्म का दारिद्रय मिटा ले। सदा के लिये सुखी बन जावे, यही मगल कामना।

☆☆☆

ॐ ह्रीं अर्ह नमः

# पहचानो अपने आपको

पू. श्री ऊँकारश्री जी म. की शिष्या
**सा. श्री पद्मरेखाश्रीजी म.सा.**, जयपुर

समग्र विश्व में दो तत्त्वों का आधिपत्य है। एक है जड तो दूसरा है चेतन। अकेला जड निष्क्रिय है तो अकेला चेतन भी पर से निष्क्रिय है। सघर्ष है जड चेतन के मिलने में। यह संघर्ष अनादि काल से चला आ रहा है और तब तक चलता ही रहेगा जब तक आत्मा विभाव दशा से हटकर स्वभाव दशा में नही आयेगी। निश्चय से आत्मा का स्वरूप सिद्धों के समान है। आत्मा अनन्त शक्तियों की पुंज है, लेकिन अष्ट कर्म के आवरण के कारण वह स्वरूप छिपा हुआ है, जैसे बादलों के पीछे सूर्य का प्रकाश छिप जाता है।

आत्मा ज्ञानमय-दर्शनमय चारित्रमय वीतरागता प्रभुता-विभुता आदि गुणों की निधान है, फिर भी जड की संलग्नता के कारण वह पापी, क्रोधी मानी लोभी-कामी आदि की संज्ञा पा रही है। तीन भुवन के स्वामी बनने की समर्थता धरने वाली आत्मा चारगति संसार में, चौरासी के अवतारों में जन्म लेकर दर-दर की ठोकर खा रही है।

महात्मा आंनदघनजी ने श्री सुमतिनाथ परमात्मा की स्तवना करते हुए आत्मा को तीन विभागों में बांटा है।

त्रिविध सकल तनु घरगन आत्मा,
बहिरातम धुरिभेद सुज्ञानी
बीजो अंतर आतम तिसरों,
परमातम अविच्छेद सुज्ञानी
सुमति चरण कज आतम अरपणा

एक ही आत्मा कर्म की तारतम्यतावश- बहिरात्मा अंतरात्मा व परमात्मा के स्वरूप में विभक्त होती है।

**बहिरात्मा**—जो पुद्गल को अपना मानकर उसमें ही आशक्त है। देह- आत्मा को एकरूप मानकर सांसारिक बाह्य भावों में रम गया है। पुद्ग्लिक मोटाई से अपना प्रभुत्व मान रहा है। पंचभूत से बने शरीर से आत्मा का कोई अलग अस्तित्व है ऍसा जिसको स्वप्न में भी ख्याल नहीं है वह बहिरात्मा है।

**अंतरात्मा**—दूसरी अवस्था है अंतरात्मा की। बाह्य में भटकती हुई आत्मा को प्रबल पुण्योदय से सद्गुण का सुयोग मिलता है तब सद्गुरू के सद्बोध से राग-द्वेष की प्रबल ग्रंथी को तोडकर आत्मा का साक्षात्कार करता है। देह- आत्मा का भेद विज्ञान करता है जैसे क्षीर-नीर का भेद हंस करता है। अब वह संसार में रहने के बावजूद भी जल में कमलवत् निर्लेप रहता है, वह है अंतरात्मा।

**परमात्मा**—आत्मा की तीसरी अवस्था है परमात्मपद की।

आत्मानुभूति करके साधक जैसे-जैसे साधना की दिशा में आगे बढता है वैसे वैसे आत्मा

की निर्मलता बढती जाती है। चारित्र मोहनीय कर्म को क्षय करके क्षपक श्रेणी पर आरूढ होकर चार घाति कर्मो को नष्ट करके केवल ज्ञान की प्राप्ति करता है, उसको कहते है परमात्मा।

देह-वाणी-मन व बुद्धि से भिन्न आत्म स्वरूप को अज्ञानवश आज तक हमने नहीं जाना है, न माना है, न मानने को हम तैयार है जिस दिन दर्शन मोहनीय कर्म का परदा दूर होगा तब उस राजपुत्रवत् अपने आप मे आत्मा सा परमात्मा का भान होगा। किसी गाव मे राजा का दो-तीन साल का लडका खेलते-खेलते बाहर निकल गया राजमहल से। सयोगवश किसी को भी ध्यान नहीं रहा। वह चलते-चलते गाव क एक कौने मे पहुँचा। अब वह अपने आपको अकेला महसुस कर रोने लगा। पास मे झोपडी मे बैठी भिखारिन ने बच्चे का रोना सुना। बाहर आई। अकेले बच्चे को देख वात्सल्य भाव से गोदी मे उठा लिया। बच्चा रो रोके सो गया। जागने पर उसे रोटी खिलायी। इधर राजा ने राजपुन गुम होते ही खोजबीन शुरू की लेकिन भाग्यवश कोई भी उधर की ओर नहीं आया जहा राजपुत्र था। भिखारन बडे प्रेम से अपने बच्चो के साथ उसका भी पालन करने लगी। एक गाव से दूसर गाव घुमकर जीवन निर्वाह करने वाला यह परिवार का एक ही काम था। भीख मागकर खाना। राजपुन भी भिखारी के बच्चो के साथ रहकर भिख मागना सीख गया। 10 साल बीत गये। एक दिन वापस वह भिखारी परिवार उसी गाव मे आया जिस गाव का राजपुत्र था। भिखारी के बच्चो के साथ अपन को भिखारी माननेवाला राजपुत्र राजमार्ग पर भीख मागने निकला। राजमत्री की नजर उन बच्चो पर गिरि। देखा, यह लडका जिसकी शक्ल बिल्कुल हमारे राजा जैसी है। शका हुई शायद कहीं राजपुत्र न हो। पास जाकर बच्चो से पूछा कहाँ है तुम्हारा स्थान ! बच्चो ने स्थान बताया। मत्रीश्वर का भिखारन से पूछने पर मालूम हो गया यह लडका उनका नही है। फौरन राजा-रानी को बुलाया सब पूछताछ व चेहरे चिन्ह से निशक मान लिया यही हमारा राजपुत्र है। ईनाम देकर बच्चे को अपने साथ चलने को कहा। लडका दौडकर भिखारिन की गोद मे लिपट गया मैं नहीं जाऊँगा। मुझे मत ले जाओ माँ मुझे बचा ले रोने लगा। दिल धडकने लगा। आखिर राजा ने जबरदस्ती लडके को खींच लिया। राजमहल म उसका निहलाया-धूलाया-अच्छे कपडे पहनाये। खिलाया-पिलाया चार दिन मे लडका समझ गया कि वास्तव मे यह लोग मेरे से प्यार कर रहे है। रानी भी अपने बच्चे को समझाती है। बेटा ! तू भिखारी नहीं राजपुत्र है। भीख मागना तेरा काम नहीं तेरा काम तो भीख देने का है। मै तेरी मा हूँ। तू मेरे से बिछड गया था। अब यह सब सुनते सुनते राजपुत्र को भी विश्वास हो गया कि मै भिखारी नहीं राजपुत्र ही हूँ। अपन आपको राजपुत्र समझते ही शूरवीरता का स्त्रोत बहने लगा। जीवन मे नया जोश आ गया। ओरो का हुक्म उठाने वाला अब हुक्म करने लगा।

ठीक एसी ही हमारी दशा है। परमात्मा शक्ति के मालिक आज हम अपने आपको भय से ग्रस्त मान रहे है कदम-कदम पर कायरता दिखा रहे है। जिस दिन दर्शनमाहनीय हटगा उसी दिन हमारी आत्मा भी कहेगी कि हम पापी नही रागी नहीं, द्वेषी नही हम है अनत शक्ति के मालिक भगवान आत्मा। हम है सिद्ध स्वरूपी आत्मा। सद्गुरू के सद्बोध द्वारा बहिरात्म भाव मिटाकर अतरात्म दशा प्रगटकर परपरा से परमात्म पद को प्राप्त कर यही मगल अभिलाषा।

☆

# ऐसे थे पार्श्व दादा गुरुदेव

*पूज्य प्र. सा. खांति श्री जी म. सा.की शिष्या*
***शासन प्रभाविका पू. सा. श्री ऊँकार श्री जी म.सा.***
*राजनांद गांव*

आबू पर्वत की तलेटी में बसा हुआ हमीरपुर गॉव। पिता वेलगशाह के घर माता विमला देवी की कुक्षी से वि. सं. 1537 चै. सु. नवमी के मंगलदिन में चॉद के स्वप्न से सूचित पोरवाल वंश में सूर्य समान एक तेजस्वी बालक का जन्म हुआ। नाम रखा गया पारसकुमार।

नव साल की आयु में ही पूर्व संस्कार का धनी पारसकुमार आचार्य श्री साधुरत्नसूरिजी के चरणों में जीवन सोंपकर अणगार बना। ओजस्वी प्रतिभा व अद्‌भुत प्रज्ञा के कारण मुनि पार्श्वचन्द्र जी 19 साल की आयु में आचार्य पद पर आसीन हुए।

कच्छ, गुजरात, सौराष्ट्र, मालव व मरूधर देश में विचरण करके अपूर्व शासन प्रभावना की। विविध साहित्य रचना के द्वारा शासन की सेवा की। सभी संघों ने मिलकर युगप्रधान पद से पूज्यश्री को अलंकृत किया।

रत्नावली, कनकावली, सर्वत्रोभद्र, मृत्युंजय आदि अनेक उत्कृष्ट तपों के साथ अर्तर्मुखी साधना में निमग्न गुरूदेव ने वि. सं. 16 12 मि. सु. तीज के दिन जोधपुर नगर में अंतिम विदा ली। पंचोटिया पहाड के ऊपर स्थापना कर गुरू भक्ति का आदर्श स्थापित किया।

श्री वादिदेवसूरिजी से श्रीमद् नागपुरीय तपागच्छ नाम से चला आ रहा गच्छ दादा गुरुदेव के अद्‌भुत प्रभावक्ता के कारण उन्हीं के ही नाम से प्रचलित हुआ। जो आज वर्तमान में भी श्री पार्श्वचन्द्र सूरि गच्छ के नाम से प्रचलित है।

प्रभाविका पूज्य दादा गुरूदेव श्री के योगशक्ति की संक्षिप्त झलक

**अहिंसा का सन्देश सुनाया**

गुजरात प्रदेश के खंमात नगर में आज बडी प्रसन्नता थी लोक सूरिदेव के प्रवेश के लिये बडी तैयारियॉ करने में जुडे हुए थे। आबाल वृद्ध सभी को बडा हर्ष था कि आज कई लम्बे समय के बाद परम प्रभावक पू. गुरूदेव श्री का स्थंमन पुर की धरती पर पदापर्ण होगा। आधि, व्याधि से संतप्त लोगों को समाधि प्रधान करने वाली वीरवाणी का अमृतपान मिलेगा।

लोग जुलुस के लिये खडे तैयार थे उसी समय एक दूसरा जुलुस भी निकला था। राजा नवाब की और से। जिसमें गौमाता को साज सजाकर बाजे गाजे के साथ कूरबानी के लिये ले जा रहे थे।

दया के पुजारी श्री सघ के आगेवानो ने जाकर पूज्य गुरूदेव श्री से बात कि कि आज आपके पावन पर्दापण हमारी नगरी मे हो रहे है और इसीदिन एक गाय की बलि होगी । आपश्री के पर्दापण के मगल दिन मे कूरबानी ? हम नहीं चाहते यह अबोल जीव की हत्या हो । गुरूदेव ! आपश्री कुछ कीजिये और तुरन्त ही गुरूदेव श्री ने अपनी योग शक्ति से अमी-मत्रीत वासक्षेप देकर श्रावको से कहा जाओ यह गाय के उपर डाल दो ।

गुरूदेव श्री के आदेशानुसार वासक्षेप डाल दिया । वासक्षेप डालते ही गाय अद्रश्य और रस्सी कसाईयो के हाथ मे । यह बात नवाब को विदित होते ही विस्मयता की साथ गुरूदेव की पास हाजीर हुआ । क्षमा मागकर कसाईयो को मुक्त करने की याचना की जो उसी जगह पे स्थमीत हो गये थे । गुरूदेव श्री ने परमात्मा महावीर का अहिसा का सदेश सुनाया और जलाद भी मुक्त हो गये ।

गुरूदेव श्री की वाणी से प्रभावित होकर नवाब ने जघन्य कृत्य के लिये क्षमा याचना की और सदा के लिये अपने राज्य से बलि बन्द करवा दी । इस घटना स सारी खमात नगरी म अहिसा धर्म एव जिन शासन की जय जयकार हो गई ।

**एकता का साम्राज्य बनाया**

गुजरात मे शखेश्वर तीर्थ के पास बसे राधनपुर गॉव मे श्री पार्श्वचन्द्रसूरि दादा गुरूदेव श्री बिराज रहे थे । उस वक्त शहर मे हिन्दु मुस्लिम के बीच डगल हो गया । एक दूसरे को मारने के लिये उतारू हो गये । हाथ मे लकडियॉ, तलवार, चाकू, लोहे के सरिये आदि हाथ मे जो भी आया वह लेकर एक दूसरे को मारने लगे, राघनपुर का बाजार युद्ध का मैदान बन गया ।

श्रावको ने आकर शहर की परिस्थिति से गुरूदेव को वाकिफ किया । सभी जीवो के प्रति वात्सल्य भाव व करुणाभाव से भावीत हृदय वाले गुरूदेव का दिल द्रवीत हो उठा, तुरन्त ही श्रावक वर्ग के साथ जा पहुँचे बाजार के बीच । अहिसा के अवतारी शाति के दूत गुरूदेव का बाजार मे आगमन होते ही मानो अमृतरस का छींटकाव हुआ । क्रोध से उग्र बना टोला शात हो गया ।

दोनो पक्ष के बीच खडे गुरूदेव ने एकता शाति व विश्व मैत्री एव महावीर की करूणा का सदेश सुनाया । वेर से वैर नही शमता, प्रेम से वैर शमता है । जीव मात्र से प्रेम करो लोही खुदा रहम करेगा और ईश्वर प्रेम करेगा । जैसे साप मत्र से शात हो जाता है । वैसे ही गुरू का उपदेश सुनकर सभी का क्रोध शात हो गया । दोनो पक्ष के बीच एकता व स्नेह का साम्राज्य छा गया ।

यह था गुरुदेव श्री की आत्मशक्ति व योग साधना का बल । ऐसे योग शक्ति व आत्म शक्ति के धारक पूज्य दादागुरूदेव श्री पार्श्वचन्द्रसूरिश्वर जी महाराजा के चरणो मे शत शत

वदन अभिनदन ।

☆

# श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ (पंजी) जयपुर

नव निर्वाचित महासमिति वर्ष १९९७-९९

श्री राकेश कुमार मोहणोत
संयुक्त संघ मन्त्री
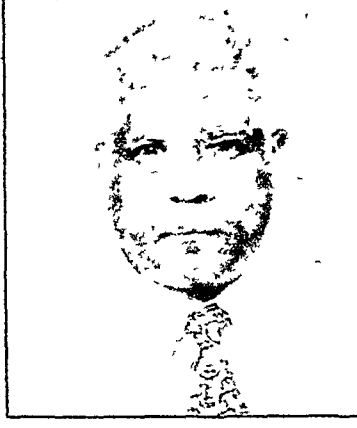
श्री दान सिंह करणावट
कोषाध्यक्ष
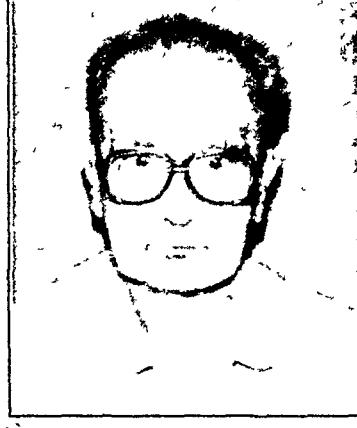
श्री जीतमल शाह
भण्डाराध्यक्ष
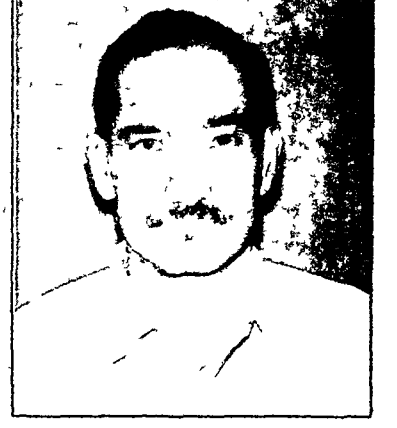
श्री खिमराज पालरेचा
मन्दिर मन्त्री

श्री तरसेम कुमार पारख
उपाध्यक्ष
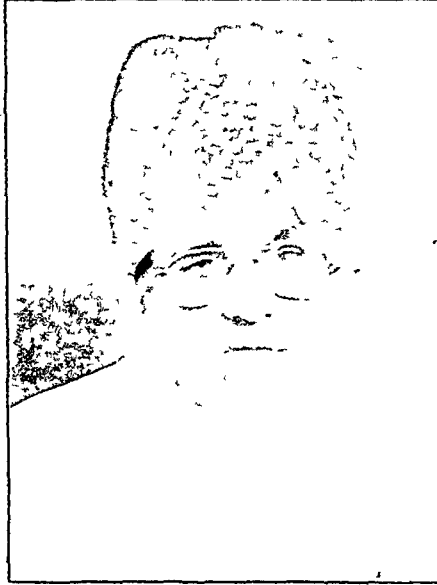
श्री हीराभाई चाधरी
अध्यक्ष
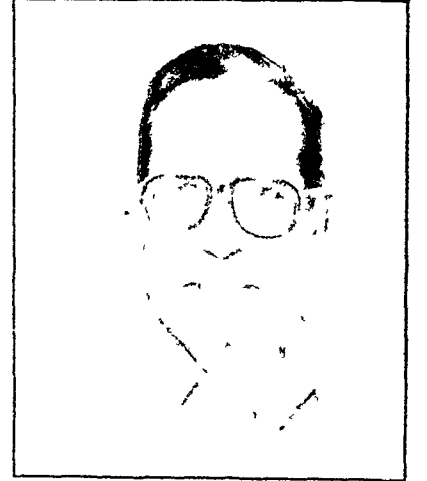
श्री मोतीलाल भडकतिया
संघ मंत्री
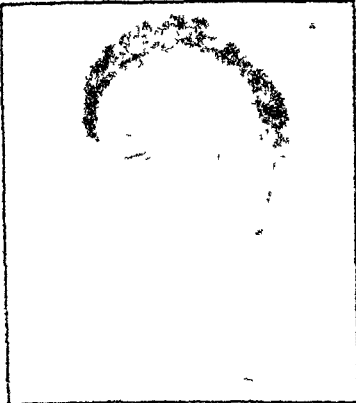
श्री अभय कुमार चारडिया
उपाश्रय मन्त्री
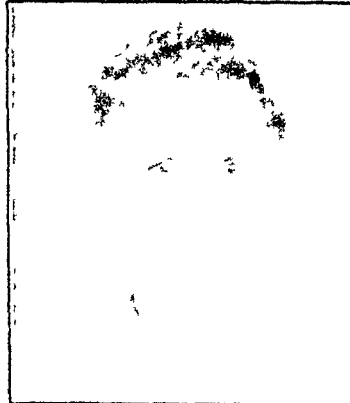
श्री सुभाष चन्द छजलानी
आयम्बिलशाला, भोजनशाला मंत्री

श्री गुणवन्तमल सांड
शिक्षा मन्त्री

श्री उमरावमल पालेचा
संयोजक, वरखेड़ा तीर्थ
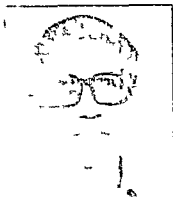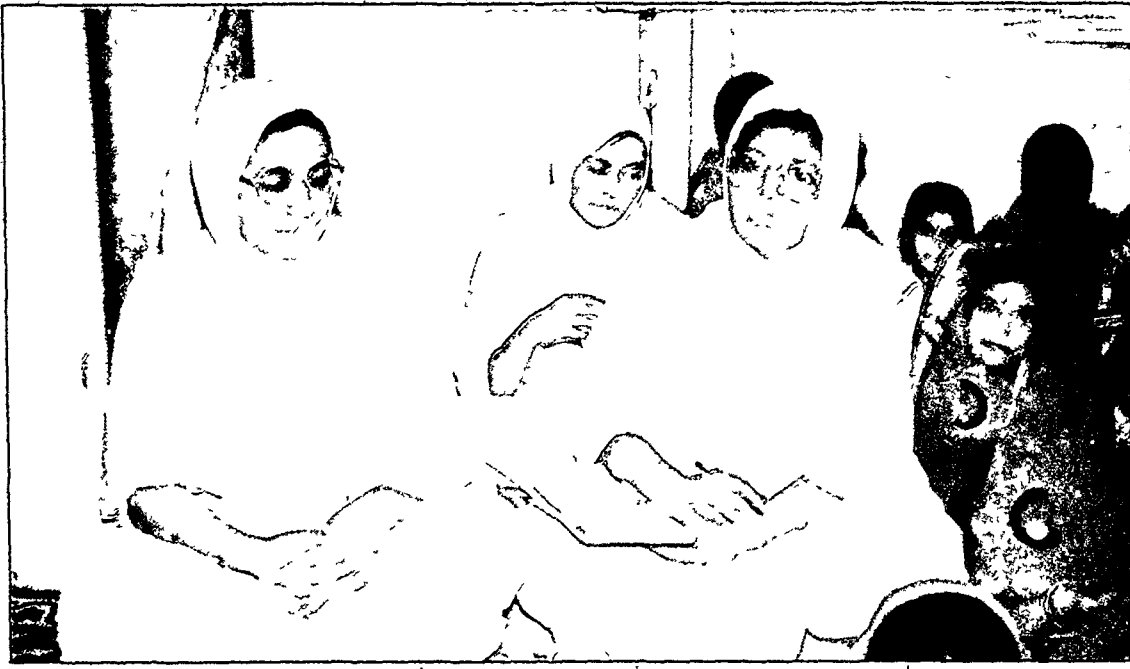
चातुर्मास वर्ष 1997 में विराजित साध्वी श्री पद्मरेखाश्रीजी, सा. श्री पावनगिराश्रीजी एवं सा. श्री प्रशान्तगिराश्रीजी म.
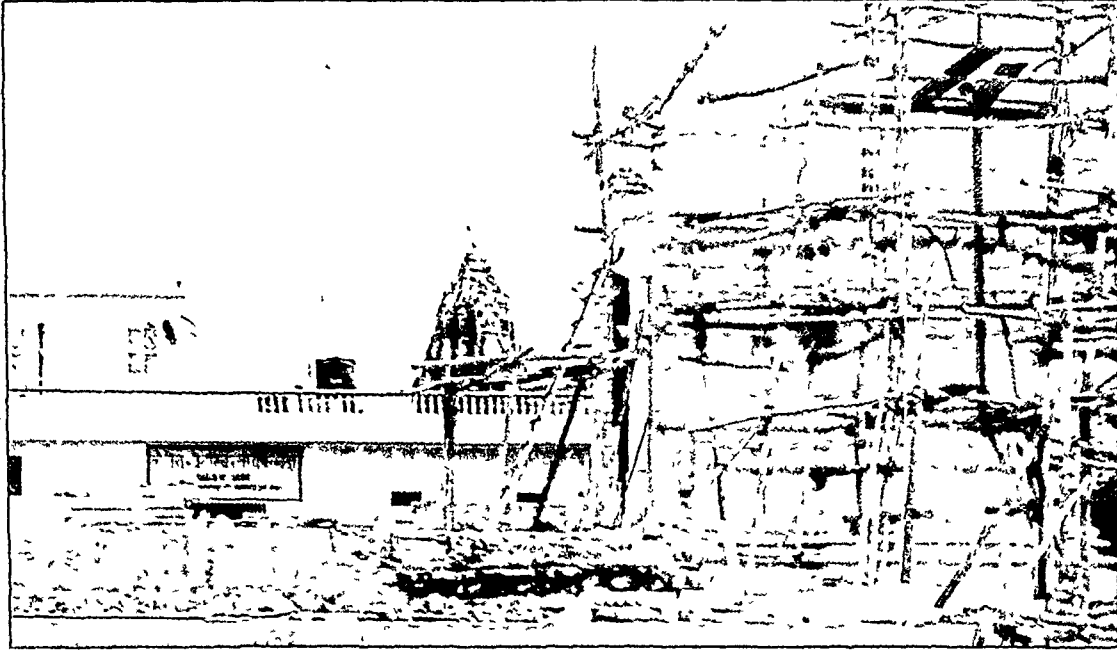
जीर्णोद्धारान्तर्गत निर्माणाधीन श्री ऋषभदेव भगवान का तीर्थ, ग्राम वरखेडा

---

## महासमिति वर्ष 1997-99 में स्थायी आमंत्रित सदस्य

श्री विजय कुमार सेठिया
अध्यक्ष, आत्मानन्द सेवक मण्डल

श्रीमती सुशीलादेवी छजलानी
अध्यक्षा, सुमति जिन श्राविका संघ

श्री चिन्तामणि ढड्ढा
मंत्री, मन्दिर ऋषभदेव भगवान ट्रस्ट

तपागच्छ संघ, जयपुर के अन्तर्गत आयोजित महिला स्वरोजगार पशिक्षण शिविर का समापन समारोह 27-6-97

माननीय श्री गुलावचन्द कटारिया
शिक्षा मत्री राजस्थान सम्बोधित करते हुए।
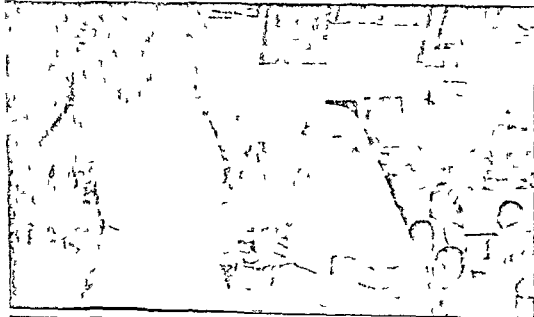
श्री के एल जेन
अध्यक्ष स्टॉक एक्सचेंज पारितोषिक वितरित करते हुए।

माननीय अतिथि पशिक्षणार्थियो द्वारा निर्मित सामग्रिया का अवलोकन करते हुए।

# मानव जीवन की सफलता धर्माचरण से है

*प. पू. शासन दीपिका*
*महत्तरा सा. श्री सुमंगला श्री जी म.सा.*
*रूपनगर, दिल्ली*

प्रत्येक प्राणी सुख चाहता है किन्तु जब तक यह मोह माया मे फँसा रहता है, तब तक ससार मे भ्रमण करता हुआ नाना दुख भोगता रहता है। दुखो से मुक्ति पाने के लिए जैनाचार्यो ने श्रावक और श्रमण धर्म की आराधना का उपदेश दिया है। जो प्राणी (मनुष्य) श्रमण धर्म का पालन करने मे अक्षम होते है उन्हे आत्म सुख-शान्ति की प्राप्ति हेतु श्रावक धर्म के परिपालन की प्रेरणा जैनाचार्यो ने दी है। श्रावक का आचरण श्रमण जीवन का प्रथम सोपान है। इसी कारण श्रावक धर्म की भी आगम मे पहली प्रशसा की गयी है क्योकि गृहस्थाश्रम मे उचित आचार का पालन करने वाला श्रावक महान् पुण्य का भोक्ता होता है।

महामत्री तेजपाल नीतिशास्त्र के प्रकाण्ड पंडित थे। धार्मिक साहित्य का भी उन्होने गहराई से अध्ययन किया था, पर जीवन मे धर्म रमा नही था। ज्ञान और आचरण मे एकरूपता न होने से जीवन अपूर्ण प्रतीत हो रहा था।

मुजाल नामक श्रावक जो महामत्री का निजी गुमाश्ता था उसने सोचा कि मेरा कर्त्तव्य है कि मै महामत्री को सही प्रेरणा दूँ। एक दिन समय देखकर महामत्री से पूछा- स्वामी आप ताजा भोजन करते है या ठडा भोजन करते है।''

गुमाश्ते की यह बात सुनते ही तेजपाल की ऑखों में क्रोध की रेखाएँ चमक उठी। उन्होने तिरछी नजर से देखा, पर यह सोचकर कि यह गाव का रहने वाला गँवार है इसलिए बोलने की सभ्यता अभी तक नही आई है। उन्होने बिना कुछ कहे अपनी दृष्टि फेर ली।

मुजाल ने एक दिन और समय देखकर पुनः उसी प्रश्न को दोहराया किन्तु तेजपाल ने उस दिन भी उनकी बात टाल दी। जब तीसरी बार यह बात ही कही गई तो मत्री की भौहे तन गई। उन्होने कहा मूर्ख कही का, बोलने का विवेक भी नही हैं। मुंजाल कहता है स्वामी ? अपराध को क्षमा करें, पर दोनों मे एक तो अवश्य ही मूर्ख होगा न ?

मत्री ने आश्चर्य से उधर देखा तुम्हारा क्या तात्पर्य है ? लगता है तुम्हारी बात में कुछ रहस्य रहा हुआ है।

मुजाल ने नम्रता पूर्वक कहा-स्वामी आप जो इस सरस भोजन को कर रहे हैं, अर्थात् इस विराट् ऐश्वर्य और आनद का उपभोग कर रहे है, वह पूर्व जन्म के पुण्य का ही फल है, इसलिए वह ताजा भोजन नही, बासी भोजन है क्योंकि धर्म के अनुसार इस समय आचार पालन का नही है, ताजा भोजन तो आचरण के अनुसार होता है। मुंजाल कहता है महामंत्रीजी ताजा भोजन का स्वाद् कुछ ओर ही होता है। ताजा भोजन क्या है और वह किस प्रकार का होता है ? यदि आप जानना चाहते है तो आचार्य श्री विजयसेन सूरिजी के पास चलिए वे आपको समझायेंगे। महामत्री तेजपाल उसी समय मुंजाल-श्रावक के साथ आचार्य भगवन्त के पास गया और ताजा-बासी भोजन का मर्म पूछा। आचार्य श्री ने कहा जो यहाँ पर तुम ऐश्वर्य का उपभोग कर रहे हो

वह सारा पूर्वभव मे किये पुण्य का ही फल है। जब तक इस जीवन म धर्म के अनुसार दान सेवा परोपकार आदि आचरण स पुण्य कर्म नही करग ता पुन पुण्य के भोक्ता कैसे बनगे ?

महामत्री तेजपाल ने आचार्यश्री से धम का मर्म समझकर श्रावक धर्म का पालन किया था।

श्रावक शब्द का आशय श्रद्धा विवेक और क्रिया की एकता है उनके अनुरूप जिनवाणी पर श्रद्धावान होकर विवेकपूर्ण ढग से देव गुरू और धर्म की भक्ति को क्रिया द्वारा अपने आचरण म उतारने वाला ही श्रावक कहलाता है। जो दान शील, तप और भाव की आराधना करता हुआ आठ प्रकार के कर्मो का विनाश करता है। एक जिज्ञासु एक सत के पास जाकर सविनय कर जाडकर पूछने लगा कि महात्मा जी ? ऐसा कोई उपाय बताय जिससे मानसिक शान्ति प्राप्त हा। बुद्धिमान सत न उसे नगर श्रेष्ठी के पास भेज दिया और उससे कहा उसके पास रहने से तुम्हे शान्ति मिल सकती है।

जिज्ञासु व्यक्ति सेठ से बोला- मुझे शान्ति का मार्ग बताइये। सेठ ने उसके चेहरे के भावो का पढकर कहा कुछ दिन मर पास रहिय। स्वत ही शान्ति प्राप्त हा जायगी।

वह व्यक्ति सेठ के साथ रहने लगा। कुछ दिन साथ रहने के बाद भी उस व्यक्ति को कुछ भी प्राप्त नहीं हा सका। सेठ अपने धन्धे व्यापार मे जुटा रहा उस सेठ का व्यापार अनेक नगरा म फैला हुआ था अनेक प्रकार का धन्धा था। वह सीधा सादा भक्त सोचने लगा कि इसे स्वय को ही शान्ति नहीं है तो मुझे कैसे शान्ति देगा। उस सत ने मुझे यहा कैसे भेज दिया है ?

एक दिन सेठ का मुनीम घबराया हुआ रोता आया और बोला सेठ जी ? आपको लाखा का नुकसान हो गया माल से भरा जहाज तूफान के कारण समुद्र मे डूब गया है। सेठ जरा भी विचलित नही हुआ। पुण्य कर्म को जानने वाला सेठ बाला मुनीम जी शान्ति रखिये, क्या परेशान हो रहे है ? डूब गया ता डूब गया। ऐसा हाना था हो गया। अब हाय तावा करने से क्या हागा। भक्त सेठ के शान्तिमय जीवन का दखकर प्रभावित हो गया।

कुछ दिन व्यतीत हो जान क बाद मुनीम जी सेठ क पास दौड-दौडे आय और खुशी से बोले- बधाई हो सेठ जी ? जहाज सुरक्षित किनारे पर पहुँच गये है। माल की कीमत भी दुगुनी बढ गई है, अत अपन का बहुत मुनाफा हागा।

सेठजी ! वही समतुलय चितवृत्ति मे थे काई खुशी या दुख नहीं। सेठ को देखकर भक्त ने पूछा। सेठ जी। आपका शाक और खुशी दोना तरह के समाचार मिले परन्तु आपके चेहरे पर कोई बदलाव नहीं आया ? क्या बात है ? सेठ जी कहते है, य तो अपने द्वारा किय गये शुभ-अशुभ आचरण का ही परिणाम था। इसमे क्या दुख और खुशी होगी ?

सच्चा सुख तो प्राप्त होन के बाद जाता ही नहीं। अत हम अपने जीवन को सच्चा सुख का भोक्ता बनाने का ही प्रयास कर।

श्रावक धर्म का पालन करते हुये भी अनेका आत्मा न धर्माचरण के द्वारा दिव्य सुखा को प्राप्त किया। आज इतिहास के पन्ना मे स्वर्णिम अक्षरो स उन महापुरूषा का नाम अकित किया गया है।

अत मोहमाया के बधनो से अपने आप को अलग करते हुय आत्म कल्याणकारी आराधना को लेकर मानव जीवन को सुखी और सफल बनाये इसी शुभेच्छा के साथ--

एक चक्के से रथ चल नहीं सकता<br>
तेल बाती बिन दीप जल नहीं सकता<br>
शिव सिद्धि की चाह रखने वालो !<br>
धर्माचरण क बिन साध्य फल नहीं सकता॥

# अनादिकाल मूर्तिपूजा–जिन प्रतिमा पूजन अनिवार्य

*प. पू. आचार्य देव श्रीमद् विजय कमलरत्न सूरीश्वरजी म सा. के पट्टधररत्न*
***अनुयोगाचार्य प. पू. दर्शनरत्नविजय जी म. सा., जोधपुर***

1. भरत चक्रवर्ती ने भी जिनमंदिर बनवाये थे। शास्त्रीय प्रमाण—

**थुभसय भाउगाणं चउव्वीसं चेव जिणघरेकासि।**
**सव्वजिणाण पडिमा, वण्ण–पमाणेहिं नियएहिं ॥**

(आवश्यक सूत्र)

**भावार्थ–** एक सौ भाइयों के एक सौ स्तूप और चौबीस तीर्थकर के जिनमंदिर बनवा कर उसमें सर्व तीर्थकर की प्रतिमा अपने वर्ण तथा शरीर के प्रमाण सहित निर्माण करवा कर श्री अष्टापद पर्वत पर भरत चक्रवर्ती ने प्रतिष्ठित करवाई।

2. श्री पार्श्वनाथ चरित्र और हरिवश चरित्र में इस प्रकार का उल्लेख आता है कि-

गत चौबीसी के दामोदर नाम के तीर्थकर भगवान को आषाढी नाम के श्रावक ने पूछा कि- हे भगवन्। संसार से मेरा निस्तार कब होगा ? तब श्री दामोदर भगवन्त ने उसको बताया कि आगामी चौबीसी के तेवीसवें तीर्थकर श्री पार्श्वनाथ भगवान के तुम गणधर बनोगे तब तुम्हारा मोक्ष होगा। ऐसा सुनकर प्रभु पार्श्वनाथ की प्रतिमा उसने बनवाई थी। श्री शुभवीर विजयजी महाराज कृत ''शंखेश्वर पार्श्वनाथ स्तवन'' में भी उक्त बात का वर्णन आता है। जैसे कि—

संवेगे तजी घर वासो, प्रभु पार्श्व के गणधर थाशो
तव मुक्तिपुरी में जाशो, गुणीलोक मे वयणे गवाशो रे,
*शंखेश्वर साहिब साचो।*
इम दामोदर जिनबाणी, आषाढी श्रावके जाणी।
जिन वंदी निज घर आवे, प्रभु पार्श्व की प्रतिमा भरावे रे।
*शंखेश्वर साहिब साचो।*

उसी आषाढी महा श्रावक द्वारा निर्मित श्री पार्श्वनाथ प्रभु की वही प्रतिमा आज भी भारत के गुजरात राज्य में श्री शंखेश्वर तीर्थ के भव्य बावन जिनालय में मूल नायक भगवान स्वरूप विराजमान है। जिसकी आज भी लाखों नर नारी अष्टप्रकारी पूजा करते चले आ रहे है, एवं आचार्यादि साधु भगवतो द्वारा भी दर्शनीय-वंदनीय है, जो प्रत्यक्ष प्रमाण है।

3. श्री आवश्यक सूत्र में वग्गुर नामक श्रावक ने पुरिमताल नगर में श्री मल्लिनाथजी का जिनमंदिर बनवा कर, सम्पूर्ण परिवार सहित जिन प्रतिमा की पूजा की ऐसा अधिकार आता है। यथा—

तत्तोय पुरिमताल, वग्गुर इसाण अच्चए पडिमं।
मल्लिजिणाययणं पडिमा, अन्नाएवंसिबहुगोट्ठी ॥

4 भारत के प्राचीन वास्तु शास्त्री विश्वकर्मा का नाम सुप्रसिद्ध है और उसके द्वारा रचित ''अपराजित'' नाम के ग्रंथ के आधार से 'प्रासादमंडन' आदि ग्रन्थों के रचयिता 'मंडन' नामक के शिल्पी ''प्रासादमंडन'' ग्रंथ के आठवें अध्याय में लिखते हैं कि—

प्रतिष्ठा वीतरागस्य, जिनशासन मार्गतः।
नवकारै : सूरिमंत्रैः, सिद्धा केवलिमाषिता।-87-।

प्रासादो वीतरागस्य, पुरमध्ये सुखावहः ॥
गुरूकल्याणकारश्च, चर्तुर्दिश्यां प्रकल्पयेत्।-88-॥

भावार्थ- श्री वीतराग देव (प्रतिमा) की प्रतिष्ठा श्री जिनशासन के विधान से नवकारमत्र और सूरि मत्रो से करना सिद्ध है और केवलज्ञानी द्वारा भाषित है ॥-87-॥ श्री वीतरागदेव का जिनमदिर नगर मे होना सुखावह है, महाकल्याण को करने वाला है । मदिरो मे चारो दिशा मे श्री जिनबिबो का मुख होवे वैसा निर्मित करना चाहिये ।

उपर्युक्त शास्त्रीय पाठो से निर्विवाद, नि शक, सिद्ध है कि जिनमदिर और जिनमूर्ति ओर उसकी उपासना शास्त्रसिद्ध और वह भी सनातन है ।

5 ''चेत्य''

1 अभिधान चितामणिकोश मे चैत्य शब्द का अर्थ ''चैत्य जिनोक स्तदिवम्बम्'' किया है । जिसका अर्थ जिन मदिर जिन प्रतिमा होता है ।

2 श्री आवश्यक सूत्र मे कायोत्सर्ग नाम के पॉचवे अध्याय मे उल्लेख है कि—

अरिहत चेइयाण त्ति- अशाका-द्यष्टमहाप्रातिहार्यरूपा पूजामर्हन्तीत्य र्हन्तस्तीर्थ करास्तेषा चैत्यानि प्रतिमालक्षणानि अर्हुच्चैत्यानि । इयमत्र भावना-चित्तमन्त - करणतस्य भावे कर्मणि वा वर्णदृढादिलक्षणे घमि कृते चैत्य भवति तत्रार्हता प्रतिमा प्रशस्तसमाधिचित्तोत्पादनादई-च्चैत्यानि भण्यन्ते ।''

भावार्थ- चैत्य अर्थात्- अशोक आदि आठ महाप्रातिहायो से युक्त अरिहत तीर्थकर परमात्मा की प्रतिमाएँ । अरिहत भगवान की प्रतिमा चित्त की प्रशस्त समाधि के उत्पादक होने से वे अरिहत की प्रतिमाएँ चैत्य कही जाती है । आवश्यक सूत्र की चूर्णि मे भी चैत्य का अर्थ अरिहतो की प्रतिमाएँ किया है ।

3 श्री सूर्य प्रज्ञप्ति वृत्ति मे कहा है कि-

''चैत्य तच्च सज्ञाशब्दत्वात् देवताप्रतिबिम्बे प्रसिद्ध ततस्तदाश्रय भूत यद्देवताया गृह तदप्युपचारात् चैत्यमिति''

भावार्थ- चैत्य यह सज्ञा-शब्द होने से भगवान के प्रतिबिब मे प्रसिद्ध है। प्रतिबिब यानी जिन प्रतिमा की प्रतिष्ठा जहॉ होती है उसको भी चैत्य कहा जाता है । अर्थात् जिन प्रतिमा प्रतिष्ठित है उस जिन मदिर को भी चैत्य कहा जाता है ।

1444 ग्रथो के रचयिता महान् आचार्य श्री हरिभद्रसूरीश्वर जी म सा का कथन है कि ''चेइयसद्दो रूढो जिणिदपडिम त्ति दिट्ठो । चैत्य यानि जिन प्रतिमा । जिन प्रतिमा का स्थान जिनमदिर है । इसीलिए चेत्य का अर्थ जिन प्रतिमा और जिनमदिर स्पष्टत सिद्ध है ।

4 काशी के मध्य शास्त्रार्थ मे समस्त पण्डितो को पराजित कर वहीं पर न्यायविशारद पदवी से अलकृत महामहोपाध्याय श्री यशोविजयजी महाराजा द्वारा रचित ''प्रतिमा शतक'' नाम के अप्रतिम ग्रथ के आठवे श्लोक मे वर्णन है कि—

ज्ञान चैत्यपदार्थमाह, न पुनर्मूर्ति प्रभो र्यो द्विषन् ।

वद्य तत्तदपूर्ववस्तुकलना दृष्टार्थसचार्यपि ।

धातुप्रत्ययरूढिवाक्यवचन व्याख्याम जानन्नसौ ।

प्रज्ञावत्सु जड श्रिय न लभते काको मरालेष्विव ॥ 8 ॥

उपर्युक्त पद्य से निर्विवाद सिद्ध है कि धातु प्रत्यय, रूढि, वाक्य और वचन की व्याख्या को नहीं जानने वाले और द्वेषी ''चैत्य'' पद का अर्थ ज्ञान करते है परन्तु प्रभु की प्रतिमा नहीं

करते। ऐसे जडबुद्धि वाले हंस की सभा में जैसे कौआ शोभा को नहीं पाता वैसे बुद्धिशालियों के समूह में प्रतिष्ठा को नहीं पाते।

उपर्युक्त तथ्यों से निर्विवाद सिद्ध है कि ''चैत्य'' का अर्थ जिन मंदिर एवं जिन प्रतिमा होता है इसके विपरीत अर्थ करने वाले गलत हैं।

6. श्री आवश्यक सूत्र की वृत्ति में कथन है कि -गौतम।

''सामिणा पुखंववागरियं अणागए गोयम-सामिम्मि जह जो अट्टापदं विलग्गइ चेइयाणि च वदइ धरणिगोयरो सो तेणे-व भवग्गहणेण सिज्जति।

भावार्थ- जो अष्टापद पर्वत पर स्थित जिन मंदिर में जिन प्रतिमाओं के दर्शन वंदन करता है वह उसी भव में सिद्धि पद-मोक्ष को पाता है। भगवान के इस कथन से, श्री अष्टापदतीर्थ की यात्रा के श्री गौतमस्वामी के भावों को जानकर भगवान ने उन्हें अनुज्ञा दी जिससे वे प्रफुल्लित होकर अष्टापद-स्थित मंदिर में जिन प्रतिमाओं के दर्शन वंदन करके आये।

इससे भी निर्विवाद सिद्ध है कि साक्षात जिनेश्वर भगवान की विद्यमानता में भी जिन मंदिर में जिन प्रतिमाओं के दर्शन वंदन पूजनादि करना, जिनेश्वर भगवान का ही विधान हैं।

6. श्री नंदीसूत्र में उल्लिखित, श्री महानिशीथ सूत्र में उल्लेख है कि—

काउंपि जिणाययणेहिं, मंडियं सव्वमेयणीवड्ढं।

दाणाइ चउक्केणं, सड्ढो गच्छेज्जअच्चुयं जाव न परं॥

जो पुरुष जिन मंदिर का निर्माण करावे उसको बारहवें देवलोक तक की प्राप्ति हो सकती हैं।

7. श्री नंदिसूत्र में उल्लिखित, श्री अंगचूलिया आगम में कहा है कि ''तिहिनटखत मुहुत्त रविजोगाइय पसन्नदिवसे अप्पा वोसिरामि।

''जिणभवणाइ'' पहाणखित्ते गुरूं वंदित्ता भणइ इच्छकारि तुम्हे अम्हं पंच महव्वयाइं राइभोयण-छट्ठाई आरोवावणिया।

भावार्थ- जिनमंदिर में भी दीक्षा देने का विधान है। इससे भी अनादिकालीन मूर्तिपूजा सिद्ध होती है।

8. श्री उपासकदशांग सूत्र के प्रथम अध्ययन में उल्लेख है कि-

आनंद आदि 10 महाश्रावकों के भी जिनमंदिर एवं जिन प्रतिमा के अतिरिक्त अन्यतीर्थ कि से देव-हरिहरादिक के दर्शन वंदन-पूजन नहीं करने की प्रतिज्ञा थी। इससे भी सिद्ध होता है कि वे जिन मंदिर जिन प्रतिमा के पूजक थे। मात्र इतना ही नहीं, समवायांग सूत्रउपादशांग सूत्र के उल्लेखानुसार आनंदादिक 10 श्रावकों के घर में जिन मंदिर भी थे।

9. श्री सूत्र कृतांग (सूयगडांग) सूत्र के दूसरे श्रुतस्कंध के छठे अध्ययन में कथन है कि-

पीतीय दोण्ह दूओ पुच्छणमभयस्स पत्थवे सोउ।

तेणावि सम्मदिट्ठित्ति होज्ज पडिमा रहंमि गया दट्ठुं संबुद्धो रक्खिआ य॥

भावार्थ- अभयकुमार ने आर्द्रकुमार को जिन प्रतिमा भेजी, उस मूर्ति को देखकर आर्द्रकुमार समकित पाया।

10. अंतिम राजर्षि उदायन राजा की प्रभावती राणी ने अपने अंतपुर (रहने के महल) में जिन मंदिर बनवाया था जिसमें प्रभावती रानी रोज त्रिकाल (प्रभात- मध्याह्न और सायंकाल) पूजा

करती थी। जिसका उल्लेख श्री आवश्यक सूत्र नियुक्ति मे इस प्रकार है—

अतेउर चेइयधर कारिय पभावईए पहातातिं

सझ अच्चेइ, अन्नया देवी पाज्जइ राया वीणा वायेइ ॥

श्री उत्तराध्यपन सूत्र क अध्ययन 18व मे भी इसका उल्लेख हे।

11 श्री नदिसूत्र मे वर्णित श्री महाकल्प सूत्र मे पाठ है कि—

' चेइयालएसुति सझ चदणवुप्पधूववत्थाइहि अच्चण कुणमाणा जाव जिणहरे विहरति से तेणटठेण गोयमा जो जिणपडिम पूएइ सो नरो सम्मदिट्ठि जाणियव्वो। जो जिणपडिम न पूएइ सो पिच्छादिट्ठि जाणियत्वो। मिच्छादिट्ठिस्स नाण न हवइ चरण न हवइ मुक्ख न हवइ। सम्मदिट्ठिस्स नाण चरण मुक्ख च हवइ से तेणट्ठेण गोयमा सम्मादिट्ठिसडढेहि जिणपडिमाण सुगध पुष्पफचदण-विलेवणेहि पूजा कायव्वा''

12 आनद ओर कामदेवादिक जो जैनी महाश्रावक थे वे सब प्रतिदिन तीन वक्त श्री जिन प्रतिमा की पूजा करते थे तथा जो जिन पूजा करे सो सम्यक्त्वी और जो न करे सो मिथ्यात्वी जानना। इत्यादि कथन भी इसी सूत्र से स्पष्ट सिद्ध है।

13 श्री नदीसूत्र मे उल्लिखित, श्री महाकल्प सूत्र मे कहा है कि—

''गायमा नाणदसण चरणट्ठयाएँ गच्छेज्जा
जे केइ पोसहशालाए पोसह बभयारी जओ जिणहरे न गच्छेज्जा तओ पायच्छित्त हवेज्जा। गोयमा। जहा साहू तहा भाणियटव छट्ठ अहवा दुवालसग पायच्छित हवेज्जा।

भावार्थ—चरमतीर्थकर भगवान श्री महावीर स्वामीजी फरमा रहे हे कि साधु एव श्रावक ज्ञान दर्शन और चारित्र अर्थे प्रतिदिन जिन मदिर म दर्शन वदन पूजनादि के लिये जावे। जिस दिन न जावे तो छठ्ठ अर्थात् दो उपवास प्रायश्चित आवे।

14 श्री व्यवहार सूत्र मे कथन है कि—

''जत्थेव सम्मम-चियाइ चेइयाई पाणिज्जा।
कप्पसेसस्स सतिए आलोइत्तए वा ॥

अर्थात्- आचार्य, गच्छाधिपति आदि को यदि बहुश्रुत गीतार्थ का सयोग न मिले तो ''चेइया'' यानी जिन प्रतिमा के समक्ष जाकर आलाचना करनी चाहिये। इससे जिन मदिर-जिन-प्रतिमा का होने की अनिवार्यता सिद्ध होती है।

*नास्तिक को मूर्ति मे पत्थर दिखता है*
*आस्तिक को मूर्ति मे प्रभु प्रतिमा दिखती है,*
*धर्मात्मा को मूर्ति मे परमात्मा ही दिखते है ॥*

एक ऐतिहासिक सत्य

# राजा खारवेल का शिलालेख एवं कलिंगजिन ऋषभदेव

*वर्धमान तपोनिधि प. पू आ. श्री विजय भुवन भानुसूरीश्वरजी म. सा. के शिष्य*

***पंन्यास श्री भुवनसुंदर विजयजी म.सा.***

*(अजीतनाथ जैन मंदिर मालदास स्ट्रीट, उदयपुर )*

''विषमकाले जिनबिंब जिनागम, भवियणकुं आधार'' इस पंचम कलिकाल में भविक जीवों को संसार पार करने के दो रास्ते हैं, एक जिनेश्वर भगवान का मंदिर-मूर्ति और दूसरा जिनेश्वर भगवान की वाणी-आगम शास्त्र । इस विश्व का सर्वप्रथम जिन मंदिर हमारे देश का भारत नाम जिनके नाम से पडा है, वे भरत चक्रवर्ती ने भगवान श्री ऋषभदेव के निर्वाण स्थल अष्टापद पर्वत पर बनाया था । इसी प्रकार बाकी के 23 तीर्थकरों की निर्वाण भूमि सम्मेत शिखर, गिरनारजी, पावापुरी आदि पर जिनमंदिर निर्माण हुए और वे भक्ति व आस्था के केन्द्र बने हुए हैं । यद्यपि जिनमंदिर व मूर्तिपूजा के समर्थन में आगम शास्त्र-आप्त वचन तो प्रमाण है ही है, इतिहास भी इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है और प्रत्यक्ष प्रमाण के लिए अन्य किसी भी प्रमाण की आवश्यकता नहीं होती।

उडीसा राज्य के पूरी जिले में भुवनेश्वर नामक का एक शहर है। उस के पास में 3 कि मी. की दूरी पर एक पहाडी है, जिसके उपर विश्व प्रसिद्ध जैन गुंफाएँ आयी हुई है । हम जिस की चर्चा करने जा रहे हैं उस गुंफा का नाम हाथी-गुंफा है। आज यह पहाडी उदयगिरि व खंडगिरी नाम से प्रसिद्ध हैं ।

पूर्व काल में उदयगिरि का नाम कुमार पर्वत था और खंडगिरि का नाम कुमारी पर्वत था। हाथी-गुंफा की एक विशाल कुदरती दिवार पर एक शिलालेख उत्कीर्ण है। यह विशाल शिलालेख आज से करीब 2200 वर्ष पूर्व में हुए जैन सम्राट खाखेल के जीवन का इतिहास कह रहा है ।

यह विशाल शिलालेख एक कुदरती विशाल चट्टान पर उकेरा गया है। पुरालेख 84 चोरस फुट के विशाल क्षेत्र में लिखा हुआ है। जिसमें कुल 29 पंक्तियाँ (लाइनें) उत्कीर्ण की गयी है। पत्थर की सपाटी साफ नहीं है, किन्तु अक्षर गहन उत्कीर्ण किये हुए है। लेख की लिपि-अक्षर सम्राट अशोक के बाद के मालुम होती है। सारा लेख गद्य में है। उसकी भाषा अर्ध मागधी-जैन प्राकृत मिश्रित अपभ्रंश है, सरल नहीं है ।

लेख के प्रारम्भ में अर्हतों और सिद्धों को नमस्कार किया है । लेख के आसपास मुगुट, स्वस्तिक, नंधावर्त, अशोकवृक्ष जैसे जैन सांस्कृतिक मंगल प्रतीक उकेरे हुए है। सम्राट राजा खारवेल का 23 वर्ष का जीवन वृतांत इसमें संहब्ध हुआ है।

इस महत्वपूर्ण लेख से राजा खारवेल, उनका जैनत्व, जैनधर्म में मूर्तिपूजा की मान्यता इत्यादि अनेक तथ्य उजागर होते है, यथा-आज भारत देश के जिस प्रदेश का नाम उडीसा है, उसे पूर्व के काल में कलिंग देश के नाम से जाना जाता था। आज से करीब 2200 वर्ष पूर्व में उस देश में एक महान् जैन शासन प्रभावक, चक्रवर्ती जैसा पराक्रमी, साधुप्रेमी, जैन धर्मानुयायी राजा हुआ था। जिस का नाम खारवेल था। उसके दूसरे नाम भिक्खुराय, महाराज, महामेघवाहन, कलिंगाधिपति

आदि भी थे।

प्रतापी राजा खारवेल के पिताजी का नाम बुद्धराय था। बुद्धराय जब राज्य करते थे तब मगधदेश का सम्राट राजा नद ने कलिग देश पर चढाई की थी और बुद्धराय पर विजय प्राप्त कर, उसकी हीरा-मोती आदि सम्पत्ति को वह उठा ले गया था। साथ ही साथ वह कलिगदेश मे विख्यात सुप्रसिद्ध आदिनाथ भगवान की मूर्ति जिसका नाम था कलिगजिन उसे भी साथ ले गया। इस प्रकार मगधाधिपति ने कलिग को नीचा दिखाया था। यह बात बुद्धराय के मन मे बहुत चुभती थी।

बुद्धराय के पराक्रमी पुत्र का नाम खारवेल था। पिता बुद्धराय ने मरते वक्त खारवेल को दो प्रतिज्ञा करवायी थी, कि-(1) मगधदेश सम्राट राजा नद द्वारा उठा ले जायी गयी ऋषभदेव की प्रतिमा को कलिग मे वापस लौटाना और (2) भगवान श्री महावीर देव की वाणी ' आगमो'' की सुविहित मुनियो द्वारा वाचना करवाना।

खारवेल का जन्म ई सन् पूर्व 207 मे हुआ था। उसने युवराज पद 25 वर्ष की आयु मे ही ई सन् पूर्व 192 मे प्राप्त किया था। सम्राट महाराज्याभिषेक पद ई सन् पूर्व 177 मे प्राप्त हुआ था।

राजा खारवेल ने मगधदेश पर चढाई करके ई सन् पूर्व 172 मे मगधनरेश सम्राट बृहस्पति मित्र (पुष्यमित्र) को पराजित करके प्राण प्यारे कालिगजिन की प्रतिमा को कलिग देश मे वापस लौटाकर पिता के समक्ष की हुई दो प्रतिज्ञा मे से एक को पूर्ण किया था। उस प्रतिमा को उसने विशाल जिनमदिर बनवाकर बडे महोत्सव के साथ उसमे प्रतिष्ठित करवायी थी। इस प्रकार का उल्लेख हाथीगुफा स्थित शिलालेख से प्राप्त होता है।

सम्राट खारवेल द्वारा अपने 13 वर्ष (वीर निर्वाण सवत् 316 से 329 तक) के शासन काल मे किये गये सभी महत्त्वपूर्ण कार्यो को शिलालेख मे उट्टकित किया गया है। इस प्राचीनतम लेख से उस समय मे जैनो की जाहोजलाली व मूर्तिपूजा आदि का सत्य प्रगट होता है। भगवान महावीर द्वारा प्रबोधित पन्थ के अनुयायिओ मे कोई भी प्राचीन से प्राचीन राजा का नाम अगर शिलालेख द्वारा मिला हो, तो वह अकेले राजा खारवेल का है। यह शिलालेख जैनियो के लिए अपार गौरव व कीर्तिस्तम्भ रूप है।

हाथीगुफा के इस शिलालेख पर सबसे प्रथम अग्रेज विद्वान मिस्टर ए स्टर्लिंग की दृष्टि ई सन् 1825 मे पडी थी। तब से गत 175 वर्ष से यूरोपीय और भारतीय पुरातत्वा और इतिहास विदो मे इसकी चर्चा है। अनेक लेख और पुस्तक इस सबध मे अनेक भाषाओ मे प्रकाशित हुए है। सम्राट खारवेल द्वारा निर्माणित जिनमन्दिरो के स्थापत्य और मूर्तिपटो का भी कला मर्मज्ञो ने बहुत उहापोह किया है और सुदर एव निराला अनुभव प्राप्त किया है।

इस शिलालेख की पक्ति बारह मे लिखा है कि-

नदराजनित सग्रजिनस राज गहरतन पडिहारहिअ मगधे विसुव नयरि (पक्ति-12) विजाधरू लेखिल बरानि सिहरानि निवेसयति

उक्त प्राकृत का सस्कृत इस प्रकार है—

नदराजनीतस्य अग्रजिनस्य मगधे वासय नगरि विद्याधरोल्लेखिताम्बर शिखराणि निवेशयति

**अर्थ** – नदराज द्वारा उठा ले जाई गई प्रथम जिन की (प्रतिमा को) मगध मे एक शहर बसाकर स्थापना करता है। उसके शिखर इतने ऊँचे हैं कि उनके ऊपर बैठकर विद्याधरो आकाश

को खिंचते हैं।

(प्राचीन जैन लेख संग्रह' प्रथम भाग संग्राहक-सम्पादक मुनि जिन विजयजी)

जैन धर्म का मौलिक इतिहास पृ 235 खंड तीन में लिखा है कि—नंदराजा द्वारा (पूर्व में) ले जाये गये कलिंग जिन सन्निवेश तथा मगध के धन को भी वह (राजा खारवेल) ले गया।

इस प्रकार कलिंग जिन को पुनः अपने पास प्राप्त कर और उसे अपने जीते हुए प्रदेश में विशाल जिनमंदिर बनवाकर पुनः प्रतिष्ठित किया था। इस प्रकार राजा खारवेल ने अपने पिता बुद्धराज की इच्छापूर्ति की एवं कलिंगदेश की प्रजा की प्राणभूत प्रतिमा को वापस लौटाकर कलिंग के गौरव को पुनः स्थापित किया था।

सम्राट खाखेल ने ई. सन् पूर्व 170 में अपने राज्य काल के तेरहवे वर्ष में चारों ओर से ज्ञानवृद्ध और तपोवृद्ध निर्ग्रथ साधुओं का कुमारी पर्वत पर सम्मेलन करवाया था और जिनमंदिर का निर्माण करवा कर महापूजा करवायी थी।

इस शिलालेख के विषय में विद्वानों और इतिहासविदों का अभिप्राय मननीय है, यथाः-

(1) हाथीगुंफा में तीर्थकरों की मूर्तियां एवं वंदनविधि जैनियों की रीति मुजब है। (डा. राजेन्द्रलाल मित्र)

(2) डा भगवान लालजी इंद्रजी लिखते है कि -हाथीगुंफा राजा खाखेल द्वारा निर्मित है, क्योंकि लेख की अंतिम 29वीं पंक्ति में खारवेल का नाम उट्टंकित है। इस लेख की मिति मौर्य संवत् 165 (यानी ई. सन् 157) है।

(3) खंडगिरि पर अनेक गुंफाएँ उट्टंकित है, जो बौद्ध और जैन सम्बन्धित है-यथा हाथीगुंफा, अनन्त गुफा आदि। हाथीगुंफा यह राजा खारवेल द्वारा निर्मित है। लिपि के अक्षरों से यह विदित होता है कि ई. सन् पूर्व दूसरे या तीसरे सैका में यह उट्टंकित की गई है।

(ले.- बाबू मोहन लाल गांगूली, पुस्तक- 'ओरीस्सा के प्राचीन एवं मध्यकालीन ध्वंसावशेष')

(4) हाथीगुंफा वाला खारवेल का शिलालेख ई सन् पूर्व 200 का है।

(ले. :- फरग्युसन और बरगेसनी, पुस्तकः- 'केव-टेम्पल्स ओफ इंडिया. पृ.67)

(5) इस लेख की 16वीं पंक्ति में यह लिखा है कि राजा खारवेल ने उदयगिरि पर्वत के पत्थरों में ही कमरें तथा देवालय और स्तम्भ युक्त तहखाने बनवाये। (प्राचीन शिलालेख संग्रह-पृ. 23)

(6) उदयगिरि का मूलनाम कुमार पर्वत और खंडगिरि का कुमारी पर्वत था। इससे यह सिद्ध होता है कि कुमारी पर्वत यह खंडगिरि था, और जिसके ऊपर राजा खारवेल ने निर्ग्रथ श्रमणों की परिषद् भरी थी। (एपिग्राफिक इन्डिका, अक्टूबर 1915, पृ. 166)

(7) ई. सन् पूर्वे 165 में कलिंग के राजा खारवेल ने मगध पर चढाई की थी। वहाँ के लोग साहसिक कहे जाते थे- कलिंग साहसिक। खारवेल तथा उनके पूर्वज जैन थे, क्योंकि उन्होंने निर्ग्रथ श्रमणों की पर्षद् की व देवालय बंधवाया। (महाकवि माघ रचित-स्वप्न वासवदत्ता के गुजराती अनुवाद ''सांचू स्वप्न'' ग्रन्थ की प्रस्तावना में ले गुर्जर साहतर श्री केशवलाल हर्षदराय ध्रुव)

(8) कलिंग की प्रजा में ब्राह्मण, बौद्ध और जैन यह तीनों धर्म का प्रचार था, किन्तु परिबल जैनों का था, क्योंकि कलिंग में जैन निर्ग्रथों की संख्या अधिक थी।

(ले.-Watter's Yuan Chwang. II.

p 198)

(9) हाथीगुफा लेख मे इस बात का वर्णन है कि- राजा खाखेल मगध राजा को पराजित कर जैन तीर्थकर की प्रतिमा उडीसा ले गया।

(पु प्राचीन भारतीय स्तूप, गुहा एव मदिर'' ले - प्रोफेसर डा वासुदेव उपाध्याय पटना विश्व विद्यालय )

(10) कलिग के सर्व प्राचीन उपलब्ध पुरातत्त्व विशेष जेन है और इस देश मे अत्यन्त प्राचीन काल से ही जेन तीर्थकरो की प्रतिष्ठा रही प्रतीत होती है, इस देश और राज्य के इष्ट देव 'कलिग जिन' कहलाते थे। विद्वानो मे इस विषय मे मतभेद है कि ये 'कलिगजिन' आदि या अग्रजिन प्रथम तीर्थकर ऋषभदेव थे या भद्दलपुर (कलिग देशस्थ भद्राचलम् या भद्रपुरम्) मे उत्पन्न दसवे तीर्थकर शीतलनाथ थे अथवा 23 वे तीर्थकर पार्श्वनाथ थे। किन्तु महावीर के जन्म के पूर्व भी इन जनपद मे उक्त कलिगजिन की प्रतिष्ठा थी इसमे सन्देह नहीं है।

(*पुस्तक* -भारतीय इतिहास एक दृष्टि पृ 180-181
*लेखक* - डा ज्योतिप्रसाद जेन
*प्रकाशक* - भारतीय ज्ञान पीठ काशी)

(11) महावीर निर्वाण सवत् 103 (ई सन् पूर्व 424) मे मगधनरेश नन्दिवर्धन ने कलिग पर आक्रमण किया और उस राज्य को अपने साम्राज्य का अग बनाया। सभवतया वह स्वय जैनी था, अत कलिग की राजधानी मे प्रतिष्ठित कलिग जिन की भव्य मूर्ति को अपने साथ लिवालाना और अपनी राजधानी पाटली पुत्र मे प्रतिष्ठित करने का लोभ सवरण न कर सका।

(भारतीय इतिहास एक दृष्टि पृ 171)

(12) बहुत प्राचीन समय से कलिग (जिसमे उडीसा का अधिकाश भाग सम्मिलित था) जैन धर्म का गढ था। ईसा पूर्व चौथी शताब्दि मे ही कलिग मे जैन धर्म की नींव पड़ चुकी थी। यह बात कलिग के चेदी राजवश के महामेघवाहन कुल के तृतीय नरेश खारवेल (ईसा पूर्व प्रथम शती) के हाथीगुफा शिलालेख से सिद्ध होता है। इस शिलालेख मे जो अर्हतो और सिद्धो को नमस्कार के साथ प्रारम्भ होता है, शक्तिशाली शासक यह बताता है कि- ''वह कलिग की उस तीर्थकर मूर्ति को पुन ले आया जो पहले एक नन्दराजा द्वारा बलपूर्वक ले जायी गयी थी। (पुस्तक - जैनकला एव स्थापत्य खड 1 पृ 77

*लेखक* - अमलानद घोष (भूतपूर्व महानिदेशक भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण)

*सपादक* - भारतीय ज्ञान पीठ नई दिल्ली)

(13) राजा खारवेल के शिलालेख के विषय मे बगाली विद्वान आसिम कुमार चेटर्जी लिखते हे कि- ईसा की पूर्व 4थी शताब्दि मे 'कलिग जिन' की प्रतिमा प्रसिद्ध थी, जिस को नदराजा उठा ले गया था, बाद मे राजा खाखेल ने उसको वापस लौटायी।''

यथा King Kharavela also, we are told set up In his Capital the Jina of Kalinga (Kalinga Jina) which was taken away from Kalinga by King Nanda

(Asim Kumar Chatterjee, Culcutta University

बुक - ''A comprehensive History of Jainisam" Page 84)

राजा खारवेल के इस शिलालेख से भगवान महावीर के पूर्व मे भी जिन मदिर-जिन मूर्ति व मूर्तिपूजा को ऐतिहासिक समर्थन मिलता है। आशा है सत्यान्वेषी को इस लेख से सत्यप्राप्ति का मार्ग प्रशस्त बनेगा। ☆

# संवत्सरी का गुंजन–अहंकार का विसर्जन
# संवत्सरी का सन्देश–क्षमापना

*पूज्य पंन्यासप्रवर श्री जिनोत्तम विजय जी गणिवर्य म.*

क्षमा की पूर्ण प्रतिष्ठा हमारे अन्तस् के तमस् को दूर कर देती है, आत्म-प्रकाश फैला देती है। आज का दिन वर्ष में एक बार आने के कारण संवत्सरी या सांवत्सरिक के नाम से प्रचलित है। आज पर्युषण महापर्व की पूर्णाहुति है। विविध जप-तप आराधना में पर्युषण का समय व्यतीत हुआ। अत्यन्त हर्ष एवं प्रमोदमय वातावरण रहा। आज का पर्व क्षमा की विशेषता पर आधारित है।

क्षमा शब्द का अर्थ है- जाने-अनजाने यदि मन, वचन, काया से किसी प्रकार की कोई त्रुटि हुई हो तो उसके विषय में त्रिकरण से माफी मांगना। क्षमापना का सन्देश देता हुआ यही पर्व 'अहकार विसर्जन' को संबल देता है। क्षमा कहने से या क्षमापर्व मनाने से हमारा जीवन क्षमाशील नहीं बन सकता। क्षमा वह कर सकता है जो शक्ति रहते हुए भी अहंकार के आवरण से आवृत न हो। क्षमा, वह कर सकता है जो अहिंसा को आत्मसात् कर चुका हो, अहिसा को अपने जीवन एवं दर्शन का व्यवहार बना चुका हो। क्षमा वीरों का भूषण है, कायरों का नहीं। कहा भी है-

*'क्षमा वीरस्य भूषणम्'*

भगवान महावीर स्वामी के जीवन-चरित्र में सर्वत्र क्षमाशीलता के दृश्य उपस्थित हैं। आपने पर्युषण में विस्तार से उसे सुना है।

धर्म, तप, संयम आदि आराधना के लिए प्राथमिक आवश्यकता है- अहंकार विसर्जन। तभी साधना सफल हो सकती है। अहंकार विसर्जन के ही दूसरे नाम हैं- नम्रता और विनय। केवल अध्यात्म जगत् में ही नहीं अपितु व्यावहारिक जगत् में भी यह अनिवार्य तत्त्व है।

वास्तव में अहंकार वह विनाशक तत्त्व है जिससे मानवीय ज्ञान के उत्कृष्ट तत्त्व निर्मूल हो जाते है। अहंकार अन्धकार है, विनय प्रकाश। अहंकार क्रोध को जन्म देता है। क्रोध की कराल अग्नि सर्वस्व स्वाहा कर देती है। क्रोध का आवेश अज्ञानता, छिछोरपन तथा असन्तुलित मन एवं मस्तिष्क का परिचायक है।

क्रोध मानवीय जीवन में शैतान का प्रतीक है। शान्ति क्षमा, प्रेम, मैत्री आदि दैवी प्रतीक है। कहा भी है—

क्रोध तो इन्सान को शैतान बना देता है,<br>
अच्छे-अच्छों को हैवान बना देता है।<br>
हमने देखे है, जमाने में बोलते पत्थर,<br>
प्रेम तो पत्थर को भी भगवान बना देता है॥

मनुष्य गलतियों का पुतला है। बहुत सावधानी रखने पर भी कोई भूल या त्रुटि हो ही जाती है। त्रुटि या पाप कृत्य होने पर हमें अपनी अज्ञानता या मोह आदि का अनुशीलन करना चाहिए तथा भूल का पश्चाताप, प्रायश्चित करना चाहिए।

प्रायश्चित्त, हमारे दुष्कर्मो के दृढ बन्धनों को ढीला कर देता है। इतना ही नहीं, वह आत्मा को पापों के जंजाल से मुक्त भी करा सकता है।

जैन सस्कृति मे प्रतिक्रमण-विधान ज्ञात-अज्ञात दृष्कृतो का प्रायश्चित्त ही है । सनातन धर्म मे सन्ध्या प्रायश्चित्त का निदर्शन है । आज का सावत्सरिक प्रतिक्रमण विशिष्ट रूप मे आत्मनिरीक्षण करने का सन्देश देता है ।

भगवान महावीर का कथन है कि जीवन मे विवेक की कमी होने पर ही दुर्घटना घटती है, अपराध होता है, त्रुटि होती है । उन्होने पाप के बन्धन से रहित होने के लिए हमे सन्देश दिया है-

जय चरे, जय चिट्ठे जय आसे, जय सये ।
जय भुजन्तो, भासन्तो पावकम्म न बन्धइ ॥

अर्थात् हमारी सारी क्रियाये विवेकपूर्वक होनी चाहिए । प्रमाद का जीवन मे नामोनिशान भी नही होना चाहिए । प्रमाद अविवक निशानी है । प्रमाद का परित्याग करने वाला सतत साधनाशील व्यक्ति ही अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है ।

प्रमा~ कषायो का उद्गम स्थल है । कषाय हमे जीवनलक्ष्य से भटका देते है क्योकि प्रमाद की अवस्था मे विवेक-जागृति नहीं रहती । विवेक-जागृति के अभाव मे अनेक भूले होती हे, अपराध होते हे । उनका मूल्याकन करने हेतु आज का क्षमापना पर्व हमे सचेत करता है ।

क्षमापर्व सवत्सरी का महनीय सन्देश हमे सचेत करता हुआ यह भी स्पष्ट करता है कि ससार के मुख्य शत्रु है राग-द्वेष । इनके कारण ही वैमनस्य की भीषण ज्वालाये धधकती है । क्रोध का कालुष्य कटुता फैलाता है, वाणी के सौन्दर्य को नष्ट कर देता है । वाणी का सौन्दर्य सत्य, मधुर, एव प्रिय बोलने मे हे । वाणी मनुष्य के चरित्र एव सस्कारो को उजागर करती है । सयमित भाषा का सार्थक प्रयोग भी एक प्रकार का तप है । महात्मा कबीर ने ठीक ही कहा है—

**ऐसी वाणी बालिये, मन का आपा खोय ।**
**औरन को शीतल करे, आपहुँ शीतल होय ॥**

मन मे प्राणी मात्र के प्रति प्रेम, वाणी मे सत्य का सचार, क्रिया मे उदात्त एव उदार भावनाएँ यदि समाहित हो जाये तो जीवन ज्योतिर्मय हो जाता है, सुख-चैन की बशी बजने लगती है, प्रीति का मधुरिम सगीत गूजने लगता है, सद्गुणो की सौरभ महकने लगती हे और तब जीवन सार्थक हो जाता है ।

धर्मप्रेमियो ! सदा ध्यान रखना कि अहकार मन को छूने न पाये । अहकार की आग से समस्त सत्क्रियाये झुलस जाती है । नम्रता, सौहार्द, क्षमाशीलता ही सफलता का मूलमन्त्र है । मूल मन्त्र पर ध्यान दो । अपने जीवन क प्रत्येक व्यवहार मे इसे क्रियान्वित करो । त्रुटि होने पर तुरन्त क्षमायाचना करो । किसी दूसरे की गलती को भी शीघ्र क्षमा करो । कटुता की गॉठ मत बॉधो ।

आज हम क्षमापर्व सवत्सरी के पावन अवसर पर आत्मशुद्धि के लिए ज्ञात, अज्ञात त्रुटियो की समस्त जीवलोक से क्षमायाचना करते हे तथा कामना करते है कि सकल जीवलोक हमे क्षमा प्रदान करेगा । हम सकल्प लेते है कि अपने जीवन मे अहिसा की पूर्ण प्रतिष्ठा, विवेकजागृति तथा विश्वमैत्री के लिए सतत प्रयत्नशील रहेगे । आज का अन्तर्नाद है—

खामेमि सव्वे जीवा, सव्वे जीवा खमन्तु मे ।
मित्ती मे सव्वभूएसु वेर मज्झ न केणइ ॥

*जो कभी भूल न करे, उसे भगवान कहते है ।*
*जो भूल से बचता रहे, उसे इन्सान कहते है ॥*
*जो भूल करके पछताए, उसे नादान कहते है ।*
*जो भूल करके मुस्काये, उसे शैतान कहते है ॥*
*जो भूल से भी न भूले, उसे सावधान कहते है ।*
*जो अपनी भूल से सीखे उसे मतिभान कहते है ॥*

☆

# परमात्म मूर्ति...एक महान् आलंबन

*आ.श्री कलापूर्णसूरीश्वरजी म सा के शिष्यरत्न*

***—मुनि श्री पूर्णचन्द्र विजयजी म.सा.**, सिकन्दराबाद*

*आराधना में आगे बढने के लिए.................*

*उपासना में उज्जवलता लाने के लिए............*

*भक्ति में भव्यता का रंग प्रकट करने के लिए......*

*परमात्मा की मूर्ति एक सफल एवं पुष्ट आलम्बन है।*

नयन और मन मे सम्मिलित बनकर परमात्म-मूर्ति को देखकर जो एक दिव्य भावना एवं भक्ति का पवित्र स्त्रोत भक्त आत्मा के अन्तर पट पर प्रवाहित होता है उसका अद्‌भुत आनन्द वही भक्त अनुभूत कर सकता है, उसे शब्द में सँजोना बडा मुश्किल है।

मूर्ति के प्रतिकृति, प्रतिमा, बिम्ब, अर्चा आदि पर्यायवाची नाम है, जिसके माध्यम से ही हम यह रौद्र एवं दुःखपूर्ण भवसागर पार करने की क्षमता धारण कर सकते हैं।

भवसागर को पार करना है, तिरना है तो प्रवहण या नौका समान जिनमूर्ति है। साक्षात् प्रभु के विरह में प्रभु के जैसे ही कार्य करने की अप्रतिम शक्ति जिनमूर्ति में समाविष्ट हैं।

महान् आचार्यप्रवर द्वारा अंजनशलाका के परम पवित्र मंत्रों से, प्रतिष्ठाविधि के आम्नाय से, लक्षण एवं विधिविधान की प्रक्रिया से प्रतिमा मे प्राण का आरोपण किया जाता है, तब मूर्ति प्राणवान् बनती है, मूर्तिमान् सौंदर्य बन जाती है। मूर्तिकार भी अश्रान्त परिश्रमपूर्वक न सिर्फ मूर्ति वनाता है बल्कि विधिपूर्वक निर्माण में अपनी भावात्मकता को भी संयोजित करता है।

''मूर्ति और पाषाण में क्या भेद है ? कुछ नहीं हैं।'' इस प्रकार कथन अनुचित भी है। सुदृश वस्तु में भी विशेष से असदृश की कल्पना दुनिया में की जाती है। यदि ऐसा न हो तो दुनिया में स्त्रीत्व के समान धर्म से माता, बहन, लडकी आदि में कोई भेद ही नहीं रहेगा।

भारत का ध्वज और दुकान में मिलते त्रिरंगी कपडे में भी कोई फर्क नहीं रहेगा।

रिजर्च बैंक के रुपये नोट का टुकडा एवं कागज के टुकड़े में भी फिर क्या तफाबत रहेगा ?

दुनिया में जब विशेष धर्म के आरोपण से उन वस्तुओं में विशिष्टता की परिकल्पना की जाती है तब सामान्य धर्म गौण बन जाता है। यह सत्य की अवगणना करने का किसी का सामर्थ्य नही है। जैसे-लग्नविधि के परिसंस्कार से थोडे ही क्षणों में स्त्री में पत्नीत्व का आरोपण हो जाता है। त्रिरंगी कपडा जब भारत ध्वज बन जाता है तब उसकी अदब भारत का प्राईम मिनिस्टर भी पूरी तरह से रखता है, कागज जब रूपया बन जाता है तब उसकी कीमत कितनी बढ जाती है, उसी तरह प्रतिमा में देवत्व एवं परमात्मत्व का विन्यास होने से उसका मूल्य अनन्त हो जाता है। तब प्रतिमा श्रद्धालु जन् के लिए एक विशिष्ट आस्था का महान् केन्द्र भी बन जाता है।

कोई कहता है कि मूर्ति तो जड है । जड की उपासना से क्या लाभ ह ? लेकिन याद रहे कि जड की यदि उपेक्षा की गई तो दुनिया का कोई व्यवहार भी नहीं चलेगा । प्रभु का नाम मत्र भी जड है क्याकि वह अक्षर या शब्द है, फिर भी उसे स्मरण करने वाला चेतन होने से उसका स्पष्ट असर सबको अनुभूत हे ।

शास्त्र ग्रन्थो मे पुस्तको मे, तार-टपाल मे न्यूजपेपर मे, जाहेरातो मे ओर वस्तुओ के लेबल मे नाम एव अक्षर के बिना और क्या है ? लेकिन उन्हे पढने से हमे कई प्रकार का ज्ञान, सवेदन मन मे तरग एव लहर पैदा होती है ।

विज्ञान के नित आविष्कार के युग मे जड की शक्ति समझना कठिन नहीं है । रेडियो, टी वी , फोन, केल्क्युलेटर, कम्प्यूटर, प्लेन, कार, रोबोट यन्त्र वगैर जड होते हुए भी कितना कार्यशील रहता है?

तो फिर अनेक शुभ भावना एव विधि के परिष्कार से युक्त प्रभु प्रतिमा मे इतनी प्रभावकता एव चमत्कृति आये इसम कोई आश्चर्य नहीं है ।

कितने लोग कहते है कि मूर्ति तो स्थापना हे, लेकिन स्थापना म भी चमत्कार है । वह निक्षेप एव नय भी है । पूर्वकाल म सती स्त्री जब उसका पति विदेश मे जाता हे तो पति के पादुका या फोटो-चित्र पर ही अपने दिन पसार करती थी । भरत ने भी बडे भ्राता श्रीराम के विरह मे राज्य सिहासन पर पादुका स्थापित की थीं और उसके माध्यम से उनके द्वारा ही राज्य चलता है ऐसा घोपित किया था ।

मूर्ति मे मनोवैज्ञानिक असर भी गहरा है, जो व्यक्ति के मन को भीतर तक छू लेता है । स्थूल स सूक्ष्म की ओर प्रत्यक्ष से परोक्ष की ओर एव सकीर्णता से कोचले मे से निकलकर विशाल अतर व्योम की ओर ले जाने की उसमे सक्षम शक्ति निहित हे । पापी को पाप के गहरे अधेरे मे से निकालकर प्रभु मूर्ति पुण्य के प्रकाश की ओर ले जाने की भी उसमे अद्भुत शक्ति हे ।

नामदेव नामक लुटेरा भी प्रतिदिन परमात्म-मूर्ति के सामने दस मिनट बैठने की प्रतिज्ञा से एक दिन उसके जीवन मे ऐसा चमत्कार हुआ कि उसने सदैव के लिए खून, हत्या, लूट वगैर सब पापो को तिलाजलि दी और वह सत नामदेव बन गया ।

वैजु बावरा भी अपने प्रतिस्पर्धी एव शत्रु सगीत सम्राट तानसेन का खून करना चाहता था लेकिन एक दिन वह किसी मन्दिर म पहुँच गया और वहॉ प्रभुभक्ति मे सगीत के माध्यम से ऐसा तल्लीन बन गया, जिससे उसकी रौद्रभावना खत्म होकर उसने शत्रु तानसेन के साथ शत्रुता मिटाकर पक्का मित्र बना दिया ।

मन्नीश्वर पैथडशा ने आबू के पर्वतीय विभाग मे सुवर्णसिद्धि को सफल करके जब वहॉ के रमणीय जिन-मदिर मे वे आदीश्वर प्रभु की मूर्ति का दर्शन करते है तब अपनी सुवर्ण के प्रति मूर्च्छा खत्म हो जाती है और वहाँ प्रभु क सामने प्राप्त हुई सभी स्वर्ण मुहरा का उपयोग सात क्षेत्र मे ही करने का सकल्प करते है ।

मूर्ति की प्रभावकता के ऐसे कई हजारो प्रसग भूतकाल के और वर्तमानकाल के हे, जो कि अत्यन्त अद्भुत प्रेरणादायक हे ।

यह है मूर्ति की प्रभाविकता ।

यह है मूर्ति का मानसिक गहरा असर ।

मूर्ति एक आकार है और आकार यानी-चित्र का सर्वत्र असर है ।

बच्चों को प्राथमिक ज्ञान देने के लिए सचित्र पुस्तकों का उपयोग किया जाता है । साइंस, भूगोल, हिस्टरी आदि कई विषयों को बडे विद्यार्थियों को सिखाने के लिए भी प्रचुर मात्रा में चित्र, आकार एवं नक्शे आदि का उपयोग किया जाता है । जैनधर्म के तत्त्वों को एवं पदार्थो को समझाने के लिए भी सचित्र पुस्तकों का उपयोग होने लगा है ।

कहा जाता है कि एक और शब्द है और दूसरी ओर सिर्फ एक ही चित्र है तो दोनों में से चित्र का असर ज्यादा रहेगा । विज्ञापन एवं जाहेरात कला के विकास में भी आकार एवं चित्र की ही तो महत्ता है। अकाल के समय का करुण दृश्य एवं कत्लखाने के अतिकरुण चित्र एवं शाकाहार प्रदर्शनी वगैर देखकर आज भी जनसमूह के दिल में अनुकम्पा-जीवदया की भावना पुष्ट हो जाती है ।

चित्र का असर ज्यादा काल तक हमारे मन-भीतर में गहरे रूप में अवस्थित रहता है । इसलिए तो कामुकता एवं वासना को भडकने वाले चित्रों एवं दृश्य देखना ब्रह्मचर्य और जीवन-शुद्धि के लिए नितांत वर्जित है । वर्तमान समय में पाश्चात्य अंधानुकरण से या आधुनिक विलास भर वातावरण से जगह-जगह पर खराब एवं विकृत चित्र दृश्यमान होते जा रहे है । विभत्स और विकृत चेष्टा वाले पोस्टर और सिनेमा- टी. वी. के वीडिओ कैसेट के कामुकता एवं हिंसा की उत्तेजना करने वाले दृश्यों से भारतीय सुसंस्कारी प्रजा में भी नैतिकता एवं संस्कारिता का स्तर कितना घटता जा रहा है । कितनी हिंसा का व्यापार बढा है, यह हम नजरों से देख रहे है ।

आज महती आवश्यकता है कि....

खराबी और भ्रष्टता के सामने सुन्दरता का अधिक फैलाव हो इसलिए हम हमारी संस्कृति के धरोहर समान मन्दिरों का महत्त्व बढायें ....

एक अंग्रेज लेखक ने इस तरफ ब्यान दिया था- यदि भारतीय महाप्रज्ञा का विनाश करना है, तो उसके मूल समान भारतीय संस्कृति का विनाश कर दो क्योंकि संस्कृति मर जायेगी प्रजा अपने आप मर जायेगी, लेकिन संस्कृति को खत्म करना है तो क्या करना ? तो जिससे संस्कृति आज तक इतनी पनपी है, जहाँ से दिव्य प्रेरणाएँ मिलती है ऐसे मन्दिरों को ही खत्म कर दो ।

To kill people to kill sunskriti
To kill sunskriti to kill Temple.

इसी कारण से यदि हममें सद्‌बुद्धि, संस्कारिता एवं दीर्घदृष्टिता है तो हम नन्दिरों का विरोध नहीं बल्कि पूर्ण समर्थन करेंगे । विरोध मन्दिरों का नहीं, अपितु जगह-जगह पर फैल रहे हजारों, लाखों थियेटर, टी. वी. वीडिओ, जी. टी. वी स्टार टी. वी., एम. टी वी. वगैर सैकडों चैनल जो हमारी संस्कृति की अस्मिता को खत्म करने की सुरंगें है उनका ही बहिष्कार एवं विरोध करे ।

नाम, आकृति, चित्र एवं मूर्ति में क्रमशः भावोद्दीपन की शक्ति अधिक निहित है ।

महाराष्ट्र की अजंता एवं इलोरा के गुफामन्दिरों मे जो हजारों सालों के प्राचीन है, उनमें भी कैलाश गुफा का शिल्प जीवंत एवं बेनमून है जहाँ तीर्थकर जिनेश्वरों की भी मूर्ति है, जिन्हें देखते ही मानो हमारे सामने साक्षात् भगवान है ऐसी परिकल्पना साक्षात् होती है ।

आज से करीब दो हजार वर्ष पहले हुए महाराजा सम्प्रति ने सवा करोड जिनप्रतिमाओं का निर्माण करवाया था, उनमें से वर्तमान में भी हजारों प्रतिमाएँ जिनमंदिर में विराजित है, जो अत्यन्त

चित्ताकर्षक एव नयनरम्य है ।

आधुनिक सुप्रसिद्ध भूस्तरशास्त्री विद्वान ने लिखा है कि यदि दस मील की परिधि मे खुदाई की जाय तो जैन सस्कृति का, एक प्राचीन अवशेष तो कम से कम मिलेगा ही ।

भगवान महावीर के पश्चात् महाराजा श्रेणिक, नदीवर्धन उदायी, चण्डप्रद्योत, सम्प्रति, खारवेल चन्द्रगुप्त कुमारपाल आदि अनेक राजाओ ने जैन मूर्तिओ की स्थापना की थी एव जैनधर्म का महत्त्वपूर्ण प्रसार किया था ।

मोहनजोदडो और हडप्पा जो कि करीब 5000 वर्ष पूर्व की सस्कृति थी, उस भूमि के खनन करने से भगवान आदिनाथ की मूर्तियॉ उपलब्ध हुई है ।

प्राचीन भारत मे स्तूप, गुफाऍ, मन्दिरो का अतिशय सर्जन हुआ । बिहार, ओरिस्सा के भुवनेश्वर की उदयगिरि, खण्डगिरि की हाथी गुफाए, सितानवाजल की गुफा नासिक के पास 2 400 वर्ष प्राचीन गुफा, इलोरा के गुफामन्दिर, गुजरात मे गिरनार के, मथुरा के स्तूप ये सब जैनमूर्ति, जैन स्थापत्य एव जैन चित्रकला का बेनमून ज्वलत प्रतीक हे ।

पूरे एशिया म ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया मे आश्चर्यकारी ऐसे शत्रुजय पर्वत (गुजरात) के छोटे विभाग मे हजारो जिनप्रतिमाओ से युक्त अनेकानेक जिनमन्दिरो का निर्माण यह विश्व का अभूतपूर्व रिकार्ड है ।

आबू-देलवाडा, अचलगढ, राणकपुर, कुमारीयाजी तारगा आदि अनेक तीर्थो का इतिहास एव इनकी भव्यता आज भी इतनी ही प्रेरणादायक है ।

कीमती रत्नो से लेकर मामूली रेत से बनी हुई लाखो नहीं, अपितु करोडो जिनमूर्तियो से यह भारतवर्ष की धरातल विभूषित एव मण्डित बनी हुई है और आज भी वह परम्परा अक्षुण्ण चालू है, जिसमे हजारो, लाखा दानप्रेमी भक्तभावुका द्वारा मन्दिरो की भव्यता एव जिनशासन की शोभा वृद्धिगत हो रही है ।

अपनी आत्मा का पवित्र एव महान् बनाने का केन्द्रस्थान मन्दिर है, जहॉ भक्तियोग की उपासना-साधना की जाती है ।

मन्दिर का वातावरण पवित्र होता है, इफेक्टिव और रिसेप्टिव होता है, वहॉ पर निर्मल भावो का, शुभ परणामु का सचय होता हे । जहॉ पर बेठने से बुरे विचार विनष्ट हो जाते है, परमात्मा-मूर्ति देखने से देहाभिमान दूर हो जाता है एव आत्म-विशुद्धि के साथ प्रबल पुण्य का निर्माण होता है ।

जिस प्रकार युद्धप्रयाण के समय सैनिक भरत, बाहुबली, अर्जुन, हनुमान, खारवल, महाराणा प्रताप, शिवाजी जैसे वीरो के आदर्श सामने रखकर अपने मे अतुल शक्ति का सचय करता है, उसी प्रकार आत्मा भी परमात्मा-मूर्ति सन्मुख भक्तियोग के माध्यम से उच्च आदर्श को सामने रखते हुए अपनी आत्म-शक्ति को उजागर करता है एव भगवद्भाव तक पहुँचने की पराकाष्ठा भी कभी प्राप्त कर लेता है ।

वर्तमान मे भी बडे स्थानो मे, प्रमुख मार्ग मे महान् एव राजकीय पुरुषो का स्टेच्यु-प्रतिमा लगाई जाती है जिससे जनता को उनके कार्यो की प्रेरणा मिलती है ।

अमेरिका के न्यूयार्क मे प्रवेश करते ही वहॉ पर स्वातन्त्र देवी का 60 फीट ऊँचा स्टेच्यु बनाया गया हे, जिसे देखने से प्रेक्षक के मन मे

अमेरिकन लोगों की स्वातन्त्र्य की भावना का अनुमान किया जाता है।

मन एक समुद्र जैसा है, उसमें कई लहरें तरंगें पैदा होती रहती है। प्रभु-प्रतिमा दर्शन से भी मन में वीतरागता की भावना जगती है, मन में आनन्द हर्ष की लहरें फैल जाती है, जीवन में उच्च प्रेरणा मिलती है।

जिनेश्वर भगवंत को साक्षात् कल्पवृक्ष की उपमा दी गई है, जिनके पावन दर्शन से दुरित-पापों का ध्वंस होता है, वदन से वांछित इष्ट की प्राप्ति होती है एवं पूजन से लक्ष्मी की पूर्णता मिलती है।

भक्त सिर्फ दर्शन ही नहीं, वंदन, पूजन, ध्यान, स्तवन आदि में उल्लसित एवं लीन बनकर आत्म-संतृप्ति को पाता है।

विश्व में कोई काल या क्षेत्र ऐसा नहीं होगा कि जहाँ पर मूर्ति एवं मूर्तिपूजा का अस्तित्व विद्यमान न हो। अनादिकाल से प्रभु-मूर्ति उनके उपासकों को पवित्र करती आ रही है।

पूर्वोक्त प्राचीन शिलालेख से, गुफा-स्तूपों से, पुराण-वेद शास्त्रों से, आगमों से और भी कई शोध-प्रमाण से जैन मूर्ति की अतिप्राचीनता को निःसन्देह स्वीकार किया गया है, जिसे कोई विद्वान पुरुष अपलाप नहीं कर सकता।

जरा देखिए जैन इतिहास के परिप्रेक्ष्य में भी जहाँ भक्त आत्मा का जिन-मूर्ति के प्रति भक्ति, पूजन, वंदन, सत्कार-दर्शन का अनुपम लाभ कितना मिल गया था ?

आज से करीब लाख वर्ष पूर्व हुए श्रीपाल एवं मयणा सुन्दरी को उज्जैनी नगरी में श्री केशरिया जी ऋषभदेव के प्रभु की मूर्ति समक्ष श्री सिद्धचक्र यन्त्र की भक्ति की और सात सौ कुष्ठ रोगियों के साथ उनका रोग गायब हो गया।

रावण ने अष्टापद पर्वत पर चौबीस तीर्थकरों की मूर्ति सन्मुख मंदोदरी राणी के साथ सुन्दर तालबद्ध संगीतमय प्रभु-भक्ति की पराकाष्ठा में तीर्थकर नामकर्म का निर्माण किया।

आज से करीब 85,000 वर्ष पूर्व श्री कृष्ण की सेना पर जरासंघ ने जरा नामक दुष्ट विद्या छोडी, जिसके दुष्टप्रभाव से सेना मुर्च्छित बन गई, उस समय श्री कृष्ण ने अट्ठम तप के प्रभाव से पद्मावती माता द्वारा श्री पार्श्वनाथ म. भगवान मूर्ति पाताल लोक में से, जो कि अतीत चौबीसी के भव में दामोदर भगवान के समय आषाढ़ी श्रावक ने भराई थी, संप्राप्त हुई और उस मूर्ति के स्नात्र-प्रक्षाल सैन्य सज्ज बनने से श्री कृष्ण ने शत्रु पर विजय पायी; जिसके हर्ष में आकर उन्होंने शंख बजाया तब से वहाँ पर गाँव का नाम शंखेश्वर प्रसिद्ध हुआ और मूर्ति भी शंखेश्वर पार्श्वनाथ के रूप में सुप्रसिद्ध बनी, आज शंखेश्वर तीर्थ वह मूर्ति विश्वभर में सुविख्यात, अतिप्राचीन एवं महाचमत्कारिक मानी जाती है।

पुरुषदानी श्री स्थभंव पार्श्वनाथ भगवान के स्नात्र-जल से नवांगी टीकाकार श्री अभयदेवसूरि जी का कष्ट रोग दूर हो गया था।

श्री सिद्धसेन दिवाकरसूरि ने कल्याणमंदिर स्त्रोत की रचना करते हुए शिवलिंग का प्रस्फुट होकर श्री अवंति पार्श्वनाथ की प्रतिमा प्रगट हुई और जिनशासन की अद्वितीय प्रभावना हुई।

ऐसे एक नहीं, हजारों दृष्टांत है, जिनके आदर्शो से हममें भी श्रद्धा और भक्ति के साथ प्रभु-मूर्ति के श्रेष्ठ आलम्बन के प्रति भावुकता बनी रहती है।

☆

# दादा गुरुदेव श्री पार्श्वचन्द्र सूरि महिमा

*सा श्री पद्मरेखाश्रीजी मा सा , जयपुर*

(तर्ज एक वार वोलो)

एक बार बोलो पार्श्वगुरु नाम
पार्श्वगुरु नाम पुरे वाछित काम एक
पिता वेलगशाह कुल के सितारे
माता विमला देवी नदन दुलारे
हमीरपुर गुरु जन्म का धाम एक
आयु नव साल मे सयम पाया
उन्नीस साल मे सूरी पद पाया
किया उद्धार नागौर ग्राम एक
पाटण शहर मे प्लेग मिटाया
बावन वीरो को उपदेश सुनाया
नित्य भैरवदेव करते सलाम एक
कच्छ गुजरात मरु मालव देश मे
विहार किया हर गाव और प्रात मे
स्वर्ग पधारे गुरु जोधपुर ग्राम मे एक
जोधपुर राय को परचा दिखाया
शहर मे शाति साम्राज्य छाया
ॐकार 'पद्म' का गुरु को प्रणाम एक

# प्राचीन संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में पतनोन्मुख वर्तमान संस्कृति

*सज्जनमणि आर्य्या*

***सा. श्री शशिप्रभाश्रीजी मा. सा., जयपुर***

जीवन को गतिशील, विकासशील व प्रगतिशील बनाने हेतु जीवन मे सुसस्कारों का प्रादुर्भाव होना अति आवश्यक है किन्तु प्रश्न चिह्न उपस्थित है कि ऐसी कौनसी व्यवस्था है, ऐसा कौनसा स्थल हे, ऐसी कौनसी प्रक्रिया है, जहॉ जीवन को सुसंस्कृत परिमार्जित और परिष्कृत बनाया जाय।

जीवन को उन्नत व ऊर्ध्वमुखी, महान् व आत्ममुखी बनाने हेतु प्राचीन काल में गुरुकुलों की व्यवस्था थी। ऐसा नही कि वर्तमान परम्परा मे इस तरह की व्यवस्था का लोप हो गया हो, लेकिन शनैः-शनैः आज के इस भोतिक चकाचौधमय वातावरण में जनमानस की भावना धर्म से विमुख वन संसारमुखी व ऐश्वर्यमुखी बनती जा रही है।

आज प्रायः मानव का जीवन इतना ''Busy and Short'' वन चुका है धर्माभ्यास, धर्मचर्चा, धर्मानुष्ठान हेतु किसी के पास समय नही है। व्यक्ति स्वय तो भौतिक विलास व भौंतिक ऐश्वर्य की उपलब्धि मे, भजकलदारं की धुन में, विना किसी कठिनाई व कष्ट की परवाह किये दौडे ही जा रहा है, किन्तु भावी पीढी के कर्णधार, अपने योग्य वाल-वच्चों को धर्माभ्यास व धर्मगुरुओं के सम्पर्क से दूर रख- व्यावहारिक ज्ञान के अतिरिक्त शेष समय में कोचिंग, कम्प्यूटर, टाईपिंग, स्वीमिंग होवी क्लासो आदि में व्यस्त वनाकर जीवन की सच्ची शांति से दूर किये जा रहे हैं। इतना ही नहीं पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव से प्रभावित होकर सोचने-समझने की उम्र के पूर्व ही ऐसी स्कूलों व संसर्गो के साथ उनके जीवन को जोड़ा जा रहा है कि उन्हें धर्माभ्यास, धर्मगुरुसत्संग, धर्माराधना हेतु समय ही नहीं मिल पाता।

वर्तमान युग मे अन्धानुकरण प्रवृत्ति का ऐसा ढर्रा चल पड़ा हे कि यदि पड़ोस का वच्चा वड़ी स्कूलों में पढता हे तो मेरा वच्चा क्यों नहीं ? मेरा वच्चा भी इगलिशमैन वनना चाहिये भले ही अर्थव्यवस्था का अभाव हो। 20, 30, 40 हजार रुपयों का डोनेशन देकर व सोफिया, सेन्टजेवियर, एम.जी.डी. आदि कोन्वेन्ट स्कूलो मे अपने वच्चों को भेजकर अभिभावक मन मे गोरवता का अनुभव करते हैं किन्तु उन्हें नही पता-ऐसी स्कूलों में आपके वच्चों को संस्कार किस तरह के प्राप्त होते हैं। एक ही टेवल पर साभिष भोजन भी होता हे ओर निरामिप भोजन भी। नन्हें-मुन्हें नासमझ वच्चों पर वचपन से ही इस प्रकार का वातावरण व संसर्ग का प्रभाव कैसा पड़ सकता है ? सभी हितेषी पूज्यजन सोच सकते हैं। इसके अतिरिक्त इंगलिश स्कूल में अध्ययन करने वाले वच्चों का समय इस प्रकार का वंधा होता है कि नवकारसी आने के पूर्व ही वे घर से स्कूल के लिए रवाना हो जाते हैं दोपहर मे दो या तीन वजे तक घर में प्रवेश करते हैं उसके वाद भोजन, आराम, खेलकूद, मनोरंजन, टी.वी. आदि में ही रात हो जाती है। फिर कुछ गृहकार्य करके निद्रादेवी की गोद मे जाते है। तव तक 10-11 वजे जाते हैं। पुनः प्रातःवेला मे 6 वजे तक उठते हैं, दूध पीते हैं-शारीरिक शुद्धि आदि में 7 वज जाती है इतने में स्कूल जाने का समय हो जाता है। ऐसी स्थिति में धर्मशिक्षा ग्रहण करने का समय ही कहां वच पाता है किन्तु इस विपय में अभिभावकों का जरा भी ख्याल नहीं। ध्यान रखें ! व्यावहारिक ज्ञान मात्र से कदापि आत्म शांति प्राप्त नहीं हो सकती फिर व्यावहारिक दृष्टि से जीवन मे कितनी भी प्रगति कर ली जाये किन्तु धर्म विना जीवन शून्य है।

इस प्रकार धर्मरहित सस्काररहित भावी जीवन मे न जाने किस वक्त किन-किन परिस्थितियो से गुजरना पड़ेगा इस ओर न तो उनके अभिभावको का कोई ध्यान है, न लक्ष्य है और न ही बच्चो के स्वय का कोई चिन्तन। यही वजह है कि आज की सतती आज के अधिकाश बच्चे, माता-पिता के अनुशासन से दूर होते जा रहे है फलत स्वच्छन्द और स्वतत्र जीवन जी रहे है। किन्तु उनकी यह स्वच्छन्दता व स्वतत्रता अभिभावको के लिए भविष्य मे दुख-पीड़ा व विषाद का कारण बन जाती है और उन्हे कि-कर्त्तव्यविमूढ बना देती है।

वर्तमान मे प्रवर्द्धमान आविष्कारक मशीनरी युग मे जहा सम्भवत शारीरिक मानसिक पारिवारिक सभी क्रिया-कलाप यान्त्रिक पद्धति से बिना किसी श्रम व सहयोग से ही पूर्ण हो रहे है ऐसी स्थिति मे व्यक्ति के पास समय की कितनी बचत होनी चाहिये उस प्रसग मे भी व्यक्ति के पास धर्मचर्चा धर्मश्रवण धर्माभ्यास हेतु समय का अत्यधिक अभाव है। आमतौर पर किसी भी व्यक्ति को धर्माराधना हेतु प्रेरित किये जाने पर यही शब्द श्रवणगोचर होते है कि महाराज—

"Busy Life—No Time"

ऐसा क्यो होता है या हो रहा है ? क्या हम इसका कारण खोज सकते है ? अनुमानत इसका कारण बचपन से ही माता-पिता व पूज्यजनो द्वारा दिये गये सुसस्कारो का अभाव ही है।

इसकी तुलना मे प्राचीन सस्कृति की क्या व्यवस्था थी, क्या मर्यादा थी क्या शिक्षा थी ? इतिहास के स्वर्ण पृष्ठो पर नजर जाती है तो मानस विस्मयविभूत बन जाता है।

12 वर्ष तक बच्चो को माता-पिता सुन्दर सस्कारो से सुसस्कारित करते थे तत्पश्चात् उन्हे गुरुकुल भेज दिया जाता था। टीनएज (13 वर्ष) अर्थात् बाल्यकाल के अतिम चरण और युवावस्था की शुरुआत से ही सासारिक और भौतिक ऐश्वर्य से दूर रखकर हर तरह की शिक्षा से शिक्षित किया जाता था। 24वे वर्ष मे जब शरीर के अग-प्रत्यग पूर्ण विकसित हो जाते थे तब ससार मे लौटाया जाता था। गुरु पहले ही उन्हे ससार की असारता और वश चलाने का कर्त्तव्य बताकर उन्हे कर्त्तव्यशील बना देते थे। इसकी तुलना मे आज की युवापीढी, जिसे बचपन से ही विज्ञान व आधुनिकता का साया मिला है जो 15 वर्ष की उम्र से ही तन व मन के रोग से ग्रसित हो जाते हैं विषय वासनाओ की इतनी जानकारी कि 51 वर्ष का आदमी भी शर्माए। चेहरा तेजहीन-प्रभावहीन व उत्साहहीन। पारस्परिक सभ्यता-शिष्टता-मर्यादा तो जैसे पूर्णत विलुप्त हो गई हो। एक ही स्थान पर बैठकर बहु भी टी वी देख रही है बच्चा भी देख रहा है और सास-श्वसुर भी देख रहे हैं।

टी वी मे दिखाई देने वाले अश्लील चित्रो का बच्चो पर कैसा प्रभाव पड़ सकता है ? यही वजह है कि आज बहु के भी बच्चा हो रहा है और सास के भी बच्चा हो रहा है। सब समान चल रहा है यह हम स्वय ही जान सकते है आज का भौतिकवादी युग सारी सवेदनाए समाप्त करता जा रहा है फलत हम आत्मविमुख होते जा रहे है। जैसे कि—

फूल खिलने से पहले झड़ रहे है
बच्चे पैदा होने से पहले मर रहे है
हालत अजब है इस देश की
कि केसर की क्यारी मे गधे चर रहे हैं

वर्तमान स्थिति मे टी वी का जो दुष्प्रभाव छाया हुआ है उस दुष्प्रभाव से सस्कृति का ही विनाश नही जीवन दिशा का विनाश हो रहा है व्यक्ति अपने मूल लक्ष्य से भटक चुका है उसे भान ही नहीं कि मेरा सामाजिक जीवन आचरण वेशभूषा खान-पान, रहन-सहन आदि कैसा होना चहिये ? जान-बूझकर अधा बन रहा है। सारी मर्यादाए तोड़ी जा रही है और कैसा रग-ढग बदल रहा है एक कवि ने बहुत ही सुन्दर इस विषय को चित्रित किया है—

पहने कुर्ता पे पतलून, आधो फागुण आधो जून

गजब के भैया बदल रहे है देखा हिन्दुस्तानी राना की भूमि पैदा होते, अब तो राजा जानी मे मिक्चर हो गया खून

कपडे हैं सुकडे, ऊंची एडी, बालकटी शहजादी

लाजशरम सब मर गई भैया, घर की है बरबादी

दिनभर करती टेलीफून. .

पूज्य पिताजी माताजी भी, बन रहे डैडी मम्मी

मम्मी बन रही मालासिन्हा, डैडी बन रहे शम्मी

घर में नही चने का चून . .

चिन्तनीय प्रश्न है ? पहले 25 वर्ष के युवक हृष्ट-पुष्ट होते थे आज सीकिया हो रहे है। माताए बच्चों को अल्पायु मे ही खूब खिलाकर असमय मे ही शरीर को भारी भरकम बना रही है। समय से पहले बच्चे 'मैच्योर्ड' हो रहे है । आज लडकिया तितली बनकर उड रही हैं और लडके मूल लक्ष्य से भटककर उनके पीछे भाग रहे है अराजकता का यह आलम है कि बच्चे मॉ-बाप की सुनते नही, कम उम्र मे लव-मैरिज, मना करने पर जान देने की, आत्महत्या की धमकी । वास्तव मे पर्दा-प्रथा और पुरुषों से बचने-बचाने की पुरानी भारतीय परम्परा बिना साइंस के भी साइंटिफिक थी ।

इस प्रकार हमारी विकासोन्मुख संस्कृति के पतनोन्मुख होने मे आधारभूत दो कारण उपस्थित होते है—

(1) अभिभावको द्वारा सत्शिक्षा सत्सस्कारो का अभाव होना ।

(2) अध्यापकों द्वारा सुसंस्कारगत, मर्यादागत, सदाचारगत शिक्षा का प्रसारण न होना ।

प्राचीन काल में शिष्यगण गुरुकुलों से जब घर जाते थे, तब ऐसी शिक्षा दी जाती थी—

''संत्यं वद्, धर्म चर, स्वाध्यायान्मा प्रभदः धर्मान्न प्रभदितव्यम्, कार्याभ्या न प्रमदितव्यम्, मातृदेवो भव, पितृदेवो भव, अतिथिदेवो भव''

और आजकल कैसा व्यवहार सिखाया जाता है-

''जियत पिता से जंगम जगा<br>मरे हाड पहुचावे गंगा''

जब तक मॉ-बाप जिन्दा रहे तब तक भले उन्हे भोजन न दे, मगर मरने पर पचो को लड्डू जरुर खिलायेगे ।

प्राचीन अध्यापक स्वय कहते.. ..

''गुरु गोविन्द दोऊ खडे काके लागू पाय<br>बलिहारी गुरु आपनी, गोविन्द दियो बताय''

यह दोहा सिखाकर कहते हमने जिन कार्यो का आचरण किया है वही कार्य तुम भी करना । उससे विरुद्ध मत चलना । इससे स्पष्ट होता है कि उस समय के अध्यापक छात्रो के समक्ष कितना सयममय-मर्यादामय व्यवहार करते होंगे, जबकि आधुनिक अध्यापक कहते है—

''मै जैसा कहता हूँ वैसा करें, मै जैसा करता हूँ वैसा मत करो''

ऐसी वर्तमान कालिक विषम परिस्थिति मे व्यक्तिगत जीवन व भावी जीवन के उज्ज्वल नक्षत्र युवापीढी तथा बाल-बच्चों को संस्कारित करने हेतु अभिभावकजन पाश्चात्य सस्कृति के प्रभाव से दूर हट अपनी ही प्राचीन सस्कृति-नियम प्रणाली को पुनः अपनाकर सत्संग, सत्शास्त्र पठन एवं सत्धर्मानुष्ठान में स्वय भी सम्मिलित होवें व अपने बाल बच्चों को भी सग में लेकर आये-जाये व प्रेरित करें । धार्मिक पाठशालाओं में उत्तम शिक्षा को प्राप्त करने हेतु—ऐसा प्रयास यदि जारी हो जाये तो निश्चिततः हमारी पतनोन्मुख संस्कृति एवं संतती ऊर्ध्वमुखी बनकर जन-जीवन में एक नया उल्लास, नया जागरण, नयी प्रेरणा की स्थापना कर सकती है। ☆

*पल्लीवाल क्षेत्रीयोद्धारक*

***साध्वी श्री शुभोदयाश्रीजी म , जयपुर***

हे चेतन ! पापो की खान, पापो का मूल और आधि-व्याधि उपाधियो से भरे अगाध ससार सागर के प्रत्येक प्राणी अपने पापो की आलोचना-प्रायश्चित से ही मुक्ति का मार्ग अपनाते हे। जब तक वह आलोचना प्रतिक्रमण नही करता तब तक वह सरल नम्र नहीं बनता हे। राग-द्वेष की छाया रहेगी तब तक उसको अनेकानेक दु खो का अनुभव करना पडता है। धर्म प्राय करने की या पचाने की योग्यता-पात्रता उसी व्यक्ति मे आती है जो सरल है, ऋजु है नम्र है।

शास्त्र मे भी कहा है कि "सोऽही उज्जुय भूयस्स-धम्मो सुध्घस्स चीट्ठई" परमात्मा व धर्मात्मा बनने के लिए सरलात्मा ही योग्य है—प्रशसापात्र है और वही धर्म-ध्यानी बन सकता है।

अत सरल-नम्र-भद्र प्रकृत्तिवान् बनने क लिए यम-नियम-तप-त्याग-धारण करने का परिणाम-भाव-अमल-विमल-निर्मल-रागद्वेष रहित बन जाने मे हे। जैसे कि विद्या, राज्य और धर्म योग्य आत्मा को ही दिया जाता हे, उसी न्याय पर धर्म प्राप्ति के लिए भद्रक प्रकृति विशेष निपुणमति, न्यायमार्ग मे प्रेम और दृढ जिन प्रतिज्ञ, स्थिति ये चार गुण जिनमे हे वही श्रावक धर्म की योग्यता है, यह सर्वज्ञ ने कहा हे।

अत हे चेतन ! तुम अपने दोषो-दुर्गुणा को दूर करने के लिए सदैव प्रतिक्रमण-आलोचना-प्रायश्चित किया कर। रागद्वेष-मोहमाया-विषय-वासनाओ-कषायो से मुक्त बनकर समता की साधना से परम शाति समाधि प्राप्त करो इसी म सार है। ☆

है समय नदी की धार जिसमे सब बह जाया करते है
है समय बडा तूफान प्रबल पर्वत झुक जाया करते है।
अक्सर दुनिया के लोग समय के चकर खाया करते है
लेकिन कुछ ऐसे होते है, जो इतिहास बनाया करते है।

# समय की कीमत


*पद्म शिशु*

***साध्वी श्री पावनगिराश्री जी म. सा., जयपुर***


*जिसने समय को जाना उसने सब कुछ पाया है*
*जिसने समय को गंवाया उसने सब कुछ खोया है।*
*क्षणभर भी प्रमाद मतकर ओ मानव*
*समय ने ही इंसान को महान बनाया है ॥*

चार गति संसार में भटकती हुई हमारी आत्मा ने अनंत अनंत समय बिता दिया है, जिसकी कोई गिनती नहीं । किन्तु उस अमूल्य समय की हमने कोई कीमत नहीं समझी, यूँही व्यर्थ नष्ट कर दिया ।

अनंत समय के सामने यह मानव जीवन का समय कितना ? मानो सिंधु में बिंदु जितना, बिजली के चमकार जितना, पानी में बुलबुलों जितना, अंजलि में रखे हुए जल जितना, आकाश में रहे इन्द्रधनुष जितना, नींद में आए स्वप्न जितना किन्तु अत्यल्प समय भी बहुत मूल्यवान है, अगर आत्म जागृति की अमूल्य चाबी मिल जाए तो।

वीर प्रभु ने अपने प्रथम शिष्य जो चार ज्ञान के मालिक थे, पचास हजार केवल ज्ञानी शिष्यों के गुरू ऐसे लब्धि के भंडार गौतम स्वामी को बारम्बार कहा 'समय गोयममा पमायर' गौतम ! एक समय भी प्रमाद मत करना, गफलत में मत रहना ।

यह संदेश गौतम के लिए ही नहीं हमारे लिए भी है । हम दूसरों की चिन्ता में समय बरबाद कर रहे हैं किन्तु अमूल्य आत्म धन की कोई चिन्ता नहीं । प्रमाद और आलस में बीता हुआ समय दुबारा नहीं आएगा जिन्दगी की सालें-महिनें-घंटे-मिनिट पल व क्षण युंही बरबाद हो रही है ।

हम समय को गेहूँ के दानों की तरह खोना, खाना और बोना । इस प्रकार तीन भाग में बॉट सकते है । जैसे गेहूँ के दानों को रास्ते में बिखेर दिया उसको खोना की गिनती में गिनना, उसी दाने को पीसकर आटे से रोटी बनाली भूखशांत कर ली उसे खाना की गिनती में लेंगे; उसी को खेत में बो दिया उससे जो फसल हुई एक से अनेक दाने बन गये उसको कहेंगे बोना । ठीक इसी तरह हमारे जीवन का अमूल्य समय किस विभाग में जा रहा है देखना होगा । हम दूसरों की पंचायत में विविध व्यसन और फैशन में खो रहे हैं, या पारिवारिक जीवन के लिए फर्ज अदा करने में बिता रहे हैं या फिर चिंतन मनन के द्वारा समय को सफलता की ओर ले जा रहे हैं । किसी कवि ने ठीक ही कहा है :

जो समय चिंता में गया समझो कूडे दान में गया ।
जो समय चिंतन में गया समझो तिजोरी में जमा हो गया

प्रश्न यह है कि हम समथ को कूडे दान में

जमा कर रहे है अथवा तिजोरी म जमा कर रहे है।

वीर प्रभु ने भी कहा—

*जेरात दिवसो जाय करता धर्मनी आराधना*
*तेहिज सफला जाण, चेतन ! राखना तेमा मणा।*
*रत्नो करोडो आपता पण क्षण गये ली, ना मिले*
*उपदेश प्रभु आ वीर नो सभालजे, तु पले पले ॥*

भावार्थ- हे चेतन ! यह वीर का सदेश तु हर पल ध्यान मे रखना कि जो रात दिन धर्म की आराधना मे व्यतीत होते है वही सफल है। अत आराधना करने मे हे आतम् तू कजूसी मत करना क्योकि करोड रत्न देकर भी बीते समय का एक क्षण भी वापिस खरीद नहीं पाते।

समय बीत जाने पर पछताने के सिवाय हमारे पास कुछ भी शेष नहीं रहेगा। एक किसान जो खेत मे हल चला रहा था हल का फाल किसी से टकरा गया खोदा तो एक घडा निकला जो रत्ना से भरा हुआ था ज्यो ही उलटा किया किसान को रत्न पत्थर के चमकते टुकडे लगे उसने खाली करके उनको गिना पूरे 360। किसान ने सोचा पक्षी उडाने के काम आयेगे। जब फसल पकने का समय हुआ पक्षी खेत मे दाने खाने के लिए आने लगे तब किसान वह चमकते पत्थर गोफण मे डालकर पक्षियो को उडाने लगा। दोपहर को किसान की पत्नि भोजन लेकर आयी, किसान भोजन करने लगा। किसान के बच्चे ने चमकता हुआ पत्थर उठा लिया। किसान की पत्नि किसान को भोजन कराकर वापिस जा रही थी रास्ते मे किसी जौहरी ने बच्चे के हाथ मे रखा हुआ वह पत्थर देखा तो किसान की पत्नि से पूछा बहिन ! यह तुम्हारे बालक के हाथ मे क्या है ? तब किसान की पत्नि ने भोलेपन से कह दिया कि खेत मे से खेलते-खेलते ले आया।

जोहरी ने कहा यह खेलने का पत्थर नहीं अमूल्य रत्न है तू मुझे दे दे तेरे को योग्य कीमत दे दूँगा। जौहरी ने कीमत करके किसान की पत्नि को बहुत से पैसे दे दिए वह घर खुश होती चली गई। शाम को किसान घर पर आया तो उसकी पत्नि ने सारी घटना बता दी, यह सुनते ही किसान माथा पीटने लगा अरे मे मर गया। पत्नि ने कारण पूछा तो किसान ने रोते-रोते कहा कि ऐसे 360 रत्न थे मैने तो पत्थर समझकर पक्षिओ को उडाने मे बरबाद कर दिए। पत्नि ने कहा पछताने से क्या होगा। जो मिला उसी मे आनद करो।

भाग्यशालियो हमको भी 360 दिन अमूल्य रत्न की तरह मिले है उसे आलस प्रमाद मे खो देगे तो किसान जैसे पछताना पडेगा, अगर सत्कार्य मे सफल बना दिए तो परलोक मे सद्गति और परम्परा से सिद्धगति मे सदा शास्वत शाति को पाकर ससार से मुक्त बन जायेगे।

है समय नदी के धार
जिसमे सब बह जाया करते है
है समय वडा तूफान प्रबल
पर्वत झुक जाया करते है।
अक्सर दुनिया के लोग
समय मे चक्कर खाया करते हैं
लेकिन कुछ ऐसे होते है
जो इतिहास बनाया करते है ॥

☆

# समय का सदुपयोग

*महत्तरा शिशु*
***साध्वी श्री प्रफुल्ल प्रभा श्री जी म.सा.***
*रूप नगर, दिल्ली*

> **जीवन बनाना यानि समय का सदुपयोग करना ।**
> **जीवन बिताना यानि समय का दुरूपयोग करना ।**

समय का सदुपयोग कैसे करना ? यह भी एक कला है, कुशलता है, ऐसी कुशलता प्राप्त करने वाले को समयज्ञ कहा गया है ? जो समयज्ञ है वही पडित है ! समय निरर्थक न चला जाय इसलिये प्रभु महावीर स्वामी जी ने अपने शिष्य को बहुत ही सुन्दर सूत्र दिया ''समय गोयम मा पमायए'' हे गौतम ! एक समय का भी प्रमाद मत कर । समय यानि काल का अति सूक्ष्म अश आख बदकर खोले इसमे असख्यान समय बीत जाते है ।

आज के युग मे विज्ञान ने कई नूतन आविष्कार कर समय बचाना तो सिखाया लेकिन बचे समय का सदुपयोग कैसे करना यह सिखाना बाकी है । एक सुन्दर घटना पढी ।

एक किसान काम कर रहा था अपने खेत के अन्दर । अचानक उसकी नजर एक ओफिसर पर पडी। ओफिसर जमीन की लम्बाई-चौडाई नाप रहा था । किसान कौतुहलवश उसके पास जा पहुँचा और ओफिसर से पूछने लगा कि यह तुम क्या कर रहे हो- ओफिसर ने कहा कि यहॉ पर रेल की पटरी डाली जायेगी और उस पर रेल चलेगी रेल की गति बहुत तेज होगी। तुम कहा रहते हो ? ओफिसर ने पूछा। किसान ने कहा- मै यहा से बहुत दूर रहता हूँ यहॉ आने मे दो घटे व्यतीत हो जाते है । ओफिसर ने अपनी रेल्वे का करिश्मा बताते हुये कहा कि रेल मे बैठकर तुम सिर्फ आधे घंटे में यहा पहुँच जाओगे । किसान ने उदास मुख से कहा कि जो बाकी का डेढ घटा बचा उसका उपयोग मै कैसे करूगा ?

यह है आधुनिक युग की करूणता ।

प्राचीन युग कितना महान् था जिसमें लोग समय निकाल कर धर्म करते थे । आधुनिक युग में समय बिताने के लिये धर्म करने का विचार भी नही आता बल्कि हमे पत्ता जूआ केरम बोर्ड क्रिकेट याद आते है । गप्पेबाजी याद आती है लेकिन टाईम पास करने के लिये माला, स्वाध्याय, प्रतिक्रमण, पूजा, ज्ञान, ध्यान याद नही आते है ।

इतिहास की इमारत में जरा निरीक्षण करें तो ज्ञात होगा कि लोग अनेक कार्यो के बीच समय नहीं मिलने पर भी समय को Adjust करके किसी भी कार्य में से समय बचाकर उसका सदुपयोग करते थे ।

महामंत्री पेथडशाह राज्य के कार्यो में इतना व्यस्त रहते थे कि उनको थोडा सा भी समय नहीं मिलता था । उन्हे अपने दिल मे एक भावना थी कि उपदेश माला ग्रन्थ को कंठस्थ करें । कंठस्थ करने का रस था रूचि Intrest था अतः जब पालखी में बैठकर राज्य सभा मे जाते थे तब घर से राज्य सभा तक के मध्य के समय मे उपदेश माला ग्रन्थ की गाथाये पढ लेते थे और इस तरह से उन्होने पूरा ग्रन्थ कण्ठस्थ कर लिया ।

राष्ट्रपिता गांधीजी को ''गीता'' याद करने की तीव्र तमन्ना थी, लेकिन समय की समस्या थी। देश को स्वतंत्रता कराने के कार्य में थोड़ा समय नहीं

मिलता था फिर भी उन्होने किसी भी प्रकार समय निकालने का निश्चय किया। अत प्रात दत धावन के समय एक-एक श्लोक याद करके पूरी गीता कठस्थ कर ली।

आधुनिक युग के मानव को यदि कोई धर्म करने की प्रेरणा देता है तो वह शीघ्र जवाब देता है- 'No Time' समय नहीं। लेकिन मानव मे यदि धर्म करने की अभिलाषा होगी ता समय जरूर मिलेगा। इसलिये सही अर्थ मे No Time नहीं से अभिप्राय No Intrest Intrest नही है।

लोगफेलो नामक एक अग्रेज कवि हो गया है। उसके मन म इन्फर नामक ग्रन्थ का अनुवाद करने का विचार था लेकिन समय नही मिलता था। फिर भी कार्य के प्रति अभिरूचि थी रस था तो समय मिल गया। नाश्ता करते समय या कॉफी पीते वक्त भी एक पृष्ठ या आधे पृष्ठ का अनुवाद कर लेता था। नियमित रूप से दस मिनिट का कार्य करते करते पूरे ग्रन्थ का अनुवाद तैयार हो गया।

No Time No Time का शोर मचाने के बजाय समय का सदुपयोग करने की कला सीख लो। एक कवि ने कहा-

*जब तलक है जिन्दगी फुरसत न मिलेगी काम से।*
*इसी काम के बीच मे जी लगा लो राम से॥*

समय एक ऐसी चीज है कि सामने होने पर उसका कोई मूल्य ज्ञात नहीं होता लेकिन समय बीतने पर पछतावा होता है। समय का मूल्य समझाने का एक रूपक है-

एक प्रसिद्ध चित्रकार ने अपने सुन्दर चित्रो की प्रदर्शनी आयोजित की जिस देखने के लिये अनेक कलाप्रेमी आने लगे। प्रदर्शनी देखते-देखते एक विचारक ने एक विचित्र-सा चित्र देखा चित्र का कुछ मतलब मालूम नहीं हुआ तो उसने पूछा-यह किसका चित्र है ? उत्तर मिला- यह समय का चित्र है। लेकिन ऐसा क्यो ? जिसका मुँह आच्छादित है, जिसे देख नहीं सकते पाव मे पख है इसका मतलब है ? जिज्ञासा तृप्त करते हुए कहा कि-"समय रूपी पक्षी जब अपन सामने आता है, तब मुख पर बाल होने से उसे पहचान नहीं सकते और जब पहचानते है, समझ मे आता है तो पाव मे लगे पखो से उड़ जाता है। समय हाथो से चला जाता है"।

एक जगह पर लिखा है- मुख से निकली वाणी, हाथ से छूटा बाण तथा गया हुआ समय वापस नही आता।

आज लोग Birthday बर्थ डे मनाकर खुश होते है लेकिन इतना नहीं सोचते कि इसके साथ ही उनके जीवन का एक साल कम हुआ है। गुजराती म जन्म दिन को वर्षगाठ कहते है। यानि अपनी गाठ का एक वर्ष मैने गवाया।

भगवान महावीर ने कहा तेरे आयुष्य जल को खत्म करने के लिये कुदरत ने एक अरहट चलाया है। सूर्य और चन्द्र रूपी दो बैल जुडकर आयुष्य रूपी कुएँ मे से दिन-रात की घर माला मे से समय का जल भरकर तेरा आयुष्य रूपी कुआ खत्म कर रहे हैं। अत हे मानव। सोच। सोच प्रमाद की शय्या मे से शीघ्र जाग शीघ्र उठ, समय का सदुपयोग कर और तेरा आत्म कल्याण कर ले।

अत मे—

दूध का महत्त्व मक्खन से मक्खन नहीं हो तो कुछ भी नहीं

वीणा का महत्त्व तार से, तार नहीं हो तो कुछ भी नहीं

इधर उधर की बाते करके समय बिताने वालो।

समय का महत्त्व सदुपयोग मे है, सदुपयोग नही हो तो कुछ भी नहीं।

जिसने समय को पहचाना है उसने सब कुछ पाया है।

जिसने समय को नहीं जाना उसने सब कुछ गवाया है।

क्षण मात्र भी प्रमाद मत कर मानव।

समय ने ही इन्सान को मानव बनाया है॥ ☆

# निर्मल नीर क्षमा का

पद्म शिशु
सा. श्री प्रशांतगिरा श्रीजी मा. जयपुर

**अन जानते या जानते गर दिल दुःखाया आपका**
**मनवचन कायिक योग से बंधन किया हो पाप का।**
**पर्वाधिराज पवित्र आये आतम निर्मल कीजिये**
**करबद्ध में याचुं क्षमा निर्मल हृदय कर दीजिये ॥**

रेल्वे लाइन के ऊपर लोहे का पुल बनाना आसान है, नदी के दो किनारे के ऊपर पत्थर का पुल बनाना आसान है, दो भवनों को जोडने वाला लकडी का पुल बनाना आसान है परन्तु....दो व्यक्तियों के दिल को जोडने वाला मैत्री का पुल बनाना कठिन है आज हम क्षमा याचना करते है तो किसके साथ करते है ? तो कहना पडेगा जिनके साथ हमारी अच्छी दोस्ती है, कोई मन मुटाव नहीं है उनके साथ क्षमायाचना करते है किन्तु भाई-भाई के बीच वैर के झगडे चल रहे है वहाँ एक दूसरे से झुकने को तैयार नहीं है। कहाँ है हमारी सच्ची क्षमापना ? हमने एक परम्परा बनाली है संवत्सरी आई क्षमापना करना है तो बस शीघ्र पत्र द्वारा या प्रत्यक्ष मिलकर क्षमापना करते है लेकिन क्षमापना क्या है वह हमने आज तक जाना नहीं है।

द्रोणाचार्य के पास पाण्डव कौरव विद्याभ्यास कर रहे थे। एक दिन गुरूजी ने पाठ दिया 'क्रोध त्यज क्षमां भज' सभी को तुरंत याद हो गया लेकिन हमेशा आगे रहने वाले युधिष्ठिर शांत बैठे है। गुरूजी ने पूछा-पाठ हो गया ? जवाब गुरूजी नही हुआ। हमेशा सबसे पहले याद करने वाला आज का छोटा सा वाक्य याद नहीं हुआ थोडी देर बाद फिर पूछा जवाब में ना तो द्रोणाचार्य ने छडी उठाई और युधिष्ठिर के पीठ में मार दी सभी विद्यार्थियों को आनंद आ गया, आज मरम्मत हुई छडी लगते ही युधिष्ठिर ने कहा गुरूजी पाठ हो गया, द्रोणाचार्य ने कहा आज सबसे लास्ट ? युधिष्ठिर ने शांति से उत्तर दिया शाब्दिक पाठ तो कभी का हो गया लेकिन प्रेक्टिकल अब हुआ। आप श्री ने मारा, भाइयों ने मजाक किया फिर भी गुस्से का एक अंश भी नहीं आया तो विश्वास हो गया मेरा पाठ हो गया। यह द्रष्यंतटां हमको बहुत कुछ समझा रहा है।

'मिच्छामिदुक्डम्' को सिर्फ तोते जैसा रटना नहीं है किन्तु उसके मर्म तक पहुँचना होगा तभी हमारी सही अर्थ में क्षमापना स्वीकार होगी।

महावीर ने कहा क्षमा रखिए, क्षमा मांगिए और क्षमा कीजिये प्रथम क्षमा रखिए- आत्मा का

स्वभाव क्षमागुण से हरा भरा हे अत आत्म स्वभाव म कैसी भी परिस्थिति आ जाव किन्तु हमे हमारे क्षमाधन को खोना नहीं है। क्षमा की शीतल सरिता म बहना होगा।

*द्वितीय क्षमा मागिए-* अनादि के कर्मो क वश होकर आपका किसी के साथ मन दुख हुआ चाहे आपका गुनाह हो या न हो किन्तु इस पावन पर्वाधिराज क अवसर पर बडे प्रेम और वात्सल्य से क्षमा मागिए।

*तृतीय क्षमा कीजिये-* कोई आपके पास क्षमा की भीख मागने आया हो तो उसके अपकारो को भूलकर बड प्रेम स उसे गल लगा लो सभी भूल माफ करके क्षमा कीजियेगा।

*महावीर ने कहा----*

हमे शत्रु को नहीं मिटाना है शत्रुता का मिटानी है। युद्ध म शत्रु क ऊपर विजय प्राप्त करे उसे वीर कहते है लेकिन जो शत्रुओ को भी बचावे उसे महावीर कहते है। महावीर के पास दास्त दुश्मन सभी आए किन्तु क्षमामूर्ति महावीर न सभी के प्रति प्रेम गगा बहाई सभी को वात्सल्य के झरने से नहला दिया।

चाहे गौतम हो या गोशाला, जमाली हा या अर्जुनमाली, चदना हा या चड कौशिक, सगम हो या सुलशा सभी के प्रति समता व स्नेह का श्रात बहाया।

हम भी उस करूणा मूर्ति महावीर की सतान है। सवत्सरी क पावन अवसर पर क्षमा क माध्यम से मैत्री का नव निर्माण करे ता आज का क्षमापर्व सही रूप से मनाया कहलायेगा।

कपड का दाग नहीं मिटेगा तो चलेगा लेकिन कलेजे का दाग मिटाना जरूरी है, मुँह का दाग नहीं मिटगा तो चलगा किन्तु मन का दाग मिटाना जरूरी है। चश्मे का दाग नहीं मिटेगा तो चलेगा लेकिन चित्त का दाग मिटाना जरूरी है। इसी तरह हृदय के ऊपर लगे राग द्वेषादि के दाग को क्षमा रूपी नीर से मिटाना जरूरी है। ✰

साधना मय जीवन बनाओ
भावना मय मन बनाओ
वात्सल्य मय वचन बनाओ ॥

# इच्छा जीवन में विष है

*महत्तरा सा. की चरणरेणु*

***सा. श्री पीयूषपूर्णा श्री जी म. सा.***

स्थानांग सूत्र के चतुर्थ स्थान में बताया है कि चार स्थान सदैव अपूर्ण रहते हैं। उसे चाहे कितने ही प्रयत्न से भरा जाये फिर भी वे भरते नही हैं।

वे चार स्थान हैः- समुद्र, श्मशान, पेट और मन की तृष्णा।

(1) समुद्र में हम देखते हैं, गंगा-यमुना जैसी महानदियां प्रतिक्षण लाखों टन पानी सागर को दे रही है, लेकिन अभी तक समुद्र का गहरा गड्डा कभी भरा ही नहीं।

(2) श्मशान का खड्डा। जहां पर सैकडों नहीं हजारों और लाखों की संख्या में बालक, युवा प्रौढ, बलशाली, सम्राट बादशाह राजा महाराजा सभी जीवन की अन्तिम घडी समाप्त करके वहां चले गये लेकिन श्मशान की आग की आज तक कभी तृप्ति नहीं हुई।

(3) पेट का खड्डा। इस पेट के अन्दर कितना ही मणों और टनों अनाज डाला गया है लेकिन इसकी यही स्थिति रही कि सुबह डाला तो शाम को खाली हो गया अर्थात् पेट का खड्डा भी कभी भरता ही नहीं।

(4) चौथा स्थान मन की तृष्णा का। पेट का खड्डा तो कम से कम दो घन्टे के लिए तो भर जाता है, लेकिन मन की तृष्णा का खड्डा तो कभी भरता ही नहीं है।

हमारी इच्छाएं असीमित है, जो द्रोपदी के चीर की तरह बढती ही जाती हैं।

''इच्छा हू आगाससमा अणंतियां''

हमारे मन में इच्छाएं तो आकाश के समान अनंत है। मेरू पर्वत के समान सोने और चांदी के पर्वत भी किसी के पास हो जाय, परन्तु मनुष्य का मन तृष्णातुर है तो वे उसकी तृप्ति के लिए कुछ भी नहीं है।

क्या इच्छाओं का भी अन्त आ सकता है ? मनुष्य की आयु का तो एक दिन अन्त आ जाता है, परन्तु इच्छाओं का अन्त सहसा नहीं होता। मनुष्य की देह बूढी हो सकती है, लेकिन इच्छा, तृष्णा और आशा कभी बूढी नहीं होती। इच्छाएं तो पानी में उठने वाली तरंग के समान है, एक इच्छा पूरी नही होती, इससे पहले तो दूसरी सौ इच्छाएं तैयार रहती है। जब मनुष्य लोभ और तृष्णा के अधीन हो जाता है, तब इच्छा के विविध काल्पनिक चित्र मानस में उभरने लगते हैं।

उत्तराध्ययन सूत्र में महर्षि कपिल के जीवन की झॉकी इच्छाओं को प्रतिक्षण बदलते हुये, नये नये रूपों को प्रकट करते हुये उसके इशारे पर नाचने वाले मनुष्य की मनोवृत्ति का सुन्दर चित्रण किया है।

कपिल एक ब्राह्मण पुत्र था, धन और मन दोनों से दरिद्र। उसने सुना कि ''यहां के राजा का यह नियम है कि जो ब्राह्मण उसे प्रातःकाल उठ सबसे पहले आकर आर्शीवाद देगा, उसे वह दो मासा सोना इनाम देगा।'' दो मासा सोना पाने के लिए न जाने कितने ही ब्राह्मणों की लम्बी लाईन लग जाती थी, परन्तु उस भीड में से दो मासा सोना उसी भाग्यवान को मिलता था जिसका नम्बर

सबसे पहले होता । बाकी के सभी विप्र हताश होकर लौट जाते थे ।

कपिल ने भी कई वार अपना भाग्य अजमाया, लेकिन हर वार उसे निराशा ही पल्ले पडती थी । महीनो दोड़-धूप करने के वाद भी जव दो मासा सोना नहीं मिला तो एक दिन उसकी पत्नि ने तुनककर कहा कि तुम जेसे आलसियो को सोना केसे मिल सकता है ? सोना उसी को मिल सकता हे जो समय पर उठकर राजा के पास पहुँचे ।

कपिल ने अपनी प्रियतमा की वात मान ली और उसी दिन सोने के पहले कहा अच्छा, आज मैने जल्दी उठकर राजा को सवसे पहले आर्शीवाद देने की ठान ली है । तुम भी ध्यान रखकर जल्दी उठाना । कपिल शीघ्र जागने का सकल्प कर विछौने पर लेट गया । मगर आज निद्रा देवी रूठ गई थी । इधर-उधर करवट वदलते-वदलते आधी रात हो गई । आकाश म चॉद उदित हो गया था । चारा ओर चन्द्रमा की चॉदनी देखकर कपिल ने सोचा समय काफी हो गया हे अव तो जल्दी उठकर चल देना चाहिये । वह उठ वैठा और वहॉ से सीधे राजमहल की ओर भागने लगा । सड़क पर गश्त लगाते हुये पहरेदारा ने देखा कि एक आदमी भाग रहा है । आधी रात का समय है । इस समय भागने वाला कोई चोर ही हो सकता है ।

अत पहरेदारो ने कपिल को चोर समझकर गिरफ्तार कर लिया । कपिल ने कहा मे चोर नहीं हूॅ । मे तो दो मासा सोना लेने के लिए जल्दी जल्दी राजमहल की ओर जा रहा था कि सबसे पहले पहुँचकर राजा को आर्शीवाद दे दूँ । लेकिन किसी ने भी कपिल की वात पर विश्वास नही किया । बल्कि डॉटते हुये कहा हमे बेवकूफ बना रहा है ? क्या यह समय सोना पाने का था । उसे गिरफ्तार कर वैठा दिया ।

प्रात काल राजदरवार मे राजा के सामने कपिल को उपस्थित किया गया । राजा ने कपिल का मुरझाया हुआ उदास चेहरा देखकर पृछा क्या क्या वात थी । सड़क पर आधी रात को क्या भाग रहे थे । क्या कहीं चोरी की थी ?

कपिल कहता है, नहीं महाराज मैं चोर नहीं हूँ । मै आज सवेरा होने क भ्रम म जल्दी ही उठ गया और जल्दी पैर वढाकर सोने का पाने की इच्छा से राजमहल की ओर जा रहा था, लेकिन दुर्भाग्य मेरा कि सिपाहियो ने चोर के सन्देह से मुझे गिरफ्तार कर लिया । राजा कपिल की भोली सूरत देखकर समझ गया कि यह कोई दरिद्र ब्राह्मण है, सचमुच म यह दो मासा सोने की इच्छा से जल्दी उठ वैठा होगा । इसकी ऑखो म आसू हैं ? मालुम नहीं कितने दिनो से इसे दो मासा सोने की लालसा भटका रही होगी ।

राजा का हृदय दया से भर गया । उसने सहानुभूति पकट करते हुये कहा- विप, मै तुम्हारी वात समझ गया हूँ । दा मासा सोने की क्या वता है । मै तो तुम्हे वही दे दूँगा जो तुम मागोगे । तुम्हारी जो भी इच्छा है माग लो । कपिल सुनते ही आश्वस्त होकर सोचने लगा, राजा ने इच्छानुसार मागने को कह दिया है तो क्या मागना चाहिये । कपिल के सामने इच्छाओ का विशाल सरोवर लहरा रहा था । इच्छा हुई कि राजा ने इच्छानुसार मागने का कह दिया हे तो दो मासा सोना ही क्यो मागू । दो सेर सोना माग लूॅ । अरे वह भी तो जल्दी ही समाप्त हो जायेगा घर के खाने पीने के खर्च मे । फिर प्रियतमा के लिए वढिया नये-नये वस्त्राभूषण साज-सज्जा के लिए प्रसाधन सामग्री आदि वस्तुएँ कहा से आयेगी ? अत इच्छा होती है, एक मण सोना माग लू । टूटी-फूटी झोपड़ी के अन्दर सोने के आभूषण क्या शोभा देगे । एक महल मागू तभी

अच्छा रहेगा। मगर महल का शाही खर्च किसी जागीरदारी के बिना कैसे चलेगा ? एक गॉव ही क्यों न मांग लूं। परन्तु गांव से क्या होगा ? जब इच्छानुसार ही मांगना है तो फिर तो आधा राज्य ही मांग लेता हूँ। आधा राज्य होने से कभी आक्रमण कर छिन लिया तो फिर क्या करूँगा ? अतः राजा का सारा राज्य ही मांग लेता हूँ। इस तरह कपिल की इच्छा बढती गई। इस पर कोई भी ब्रेक नही था। ''जहॉ लाहो तहॉ लोहो''। जैसे जैसे लाभ प्राप्त होता है, वैसे वैसे लोभ बढता जाता हैं। यह उक्ति कपिल मनोवृत्ति पर चरितार्थ होने लगी।

इतने में कपिल की मनोवत्ति ने नया मोड खाया- ''लेकिन यह राज्य मेरे पास कैसे टिक सकेगा, कोई भी विरोधी राजा को पता चलने पर इस राज्य को लड़झगड कर ले लेगा और मान लो राज्य की मेरी इच्छा पूर्ति हो जाने पर क्या मेरी तृप्ति हो जायेगी ? और भी नई-नई इच्छाएँ जागेगी। फिर किसी सज्जन ने अपनी इच्छानुसार मांगने को कह दिया तो मैं उसका सर्वस्व राज्य लेकर अपनी इच्छा पूर्ति करूँ ? मेरी भी नीचता की हद हैं। क्या राजा अपने लिए राज्य की इच्छा नहीं करेगा ? इस प्रकार कपिल गहन विचार सरोवर में डुबने-उतरने लगा। राजा ने समय के लिए सावधान करते हुये उसे जल्दी मांगने को कहा- विप्रवर जो भी कुछ मांगना है जल्दी ही मांग लो। अधिक लम्बा चौडा क्या विचार कर रहे हो ?

कपिल की विचार निद्रा उड गई, ऑखें खोलकर देखा तो उसे राजा में उद्विग्नता दिखी। सोचा अगर मैंने राज्य दे देने की अपनी इच्छा व्यक्त कर दी तो राजा न मालूम कितना भयभीत हो जायेगा। सम्भव है वो अपने आप में न रहे ?

कपिल की विचार धारा ने नया मोड लिया, बिल्कुल नये मोड पर वह आ गया। सोचने लगा कितना नीचे उतर गया मैं। इच्छाओं के घोड़े पर बैठकर मैने अपने आप को कितना आगे बढा दिया। सचमुच बिना लगाम के घोड़े पर मैं सरपट दौड़ने लगा। मुझे मात्र दो मासा सोने से प्रयोजन था। मगर राजा ने यथेष्ट इच्छा पूर्ति का वचन दिया तो मेरा मन मचल उठा। राजा का सारा राज्य लेना हैं, ऐसी निम्न कोटि की इच्छा की। इच्छा वह आग है, जिसे शान्त करने के लिए ज्यों-ज्यों तृप्ति की आहुति डाली जाती है, त्यों-त्यों वह अधिकाधिक तीव्र होकर भडक उठती हैं। इच्छाओं की प्यास क्या कभी बुझ सकती है ? उसे शान्त करने का सरलत्तम उपाय है इच्छाओं का वशवर्ती न होकर उन्हें अपने वशवर्ती बनाना।'' इस प्रकार कपिल ने जहॉ से इच्छा उठी थी, वहीं पर आकर दम लिया। राजा से स्पष्ट कह दिया- मुझे अब कुछ नही चाहिये। मुझे चाहिये था वह मिल गया है। इच्छाओं का दास बना हुआ कपिल इच्छाओं का स्वामी बनकर चला गया।

संसार में धन सीमित है, किन्तु इच्छाएं असीम हैं। इच्छाओं का गड्ढा कभी सीमित धन के टांकों से नहीं भर सकता।

आज विश्व में जो संघर्ष हैं, उसके मूल को आप खोजें तो इच्छाओं की विपुलता ही उसका मूल कारण हैं। असीम इच्छाओं के कारण ही मनुष्य की वृत्ति दिन प्रतिदिन दूषित बनती जा रही हैं।

अतः अपनी वृत्ति को शुद्ध और पवित्र बनाने के लिए सबसे पहले अपनी इच्छाओं पर नियंत्रण करें।

मक्खन की उपलब्धि दही के मन्थन में हैं,
तत्त्व की उपलब्धि गहरे चिन्तन में हैं
बाह्य प्रसाधनों में सौख्य अन्वेषको।
आनंद की उपलब्धि इच्छा निरोधन में हैं॥

*इसी शुभ भावना के साथ*

# हमारा हो नमन कोटि-कोटि

पद्म शिशु
सा श्री पावनगिरा श्रीजी मा सा जयपुर

(तर्ज गजल)

अमर शासन सितारो को, हमारा हो नमन कोटी
सहे समता से सब कष्टो हमारा हो नमन कोटी
लगाया कील कानो मे, खडे थे वीर ध्यानो मे
क्षमा मूर्ति श्री महावीर को हमारा
जलाई आग मस्तक पे, किया ना क्रोध सोमील पे
गजसुकुमाल चरणो मे हमारा
पीलाया देह घाणी मे, जलाया दीप आतम मे
खधक सूरि शिष्य चरणो मे हमारा
धन्य मेतार्य ऋषिवर को, बचाया क्रोच पछी को
कृपा मूर्ति मुनि चरणो मे हमारा
तराजु मे तोला तन को, उबारा था कबूतर को
दयालु राय मेघरथ को हमारा
कटा था बाल कजराला, लगा हाथ पाव मे ताला
महासती चदना चरणे हमारा
खाति ॐकार शरण मिला, हृदय 'पद्म' अधिक खिला
जगत उपकारी चरणो मे हमारा

# सर्वस्व परमात्मा

—साध्वी श्री तत्वदर्शिता श्री जी म.
रूपनगर, दिल्ली

त्वाम् देव जगताम् ज्योति, त्वाम् देव जगताम् गुरू ।
त्वाम् देव जगताम् दाता, गुरूदेवं जगताम् पति ॥

आचार्य संमतभद्र ने एक श्लोक में परमात्मा को चार विशेषणों से अलकृत किया हैं। पहला विशेषण है ''त्वाम् देव जगताम् ज्योति'' परमात्मा एक ऐसी ज्योति है, ऐसा प्रकाश है, ऐसा आलोक है कि जिसकी एक किरण हमारे हृदय को छु जाये तो आत्मा को प्रकाशित कर देती है, उस किरण के कारण, उस आलोक के कारण, हमारी आत्मा में जो अनादि काल का घनघोर अंधियारा छाया हुआ है, वह नष्ट हो जाता है, दूर हो जाता है। लेकिन आजकल हमने धर्म को गुफा मे डाल दिया है, धर्म करना हमारे को पंसद नहीं है, हम धर्म से विमुख होते जा रहे है। हमारे शास्त्रकार महर्षि कहते हैं कि धर्म करना को गुफा में डाला तो भले ही डाला, साथ में परमात्म नाम का दीपक तो जला दो जिससे सारी गुफा आलोकित हो जायेगी, प्रकाशित हो जायेगी।

दूसरे विशेषण में कहा है- ''त्वाम् देव जगताम् गुरू''- परमात्मा को गुरू बताया है। परमात्मा सारे संसार के गुरू है। आप प्रश्न करेंगे कि परमात्मा गुरू कैसे ? क्योंकि इस संसार में परमात्मा ने हित बुद्धि से उपदेश दिया। जिस प्रकार माता अपने बच्चों को अंगुली पकडकर चलना सिखाती है, वैसे ही परमात्मा ने गुरू बनकर हमें धर्म की ओर चलना सिखाया। हमारे ऊपर पहला उपकार परमात्मा का है। जन्म जन्मातंर से दुखी संत्रस्त ऐसे जीवों को यहाॅ तक लाये, और सम्यक्त की प्राप्ति भी कराई।

तीसरा विशेषण है ''त्वाम् देव जगताम् दाता''- परमात्मा जगत का दाता है, क्योंकि दाता का काम देने का होता है, परमात्मा ने हमें बहुत कुछ दिया और दे रहे है। परमात्मा ने हमको दान, शील, तप, भाव इन चार प्रकार के धर्म को दिया है।

चौथा विशेषण है गुरूदेवं जगताम् पति''- परमात्मा जगत के स्वामी है, पति है। तीनों लोक में रहे हुए जितने भी जीव है, प्राणी हैं, उन सब के स्वामी है। कई-कई महानुभावों के मानस पटल पर प्रश्न चिन्ह उभर जाता है कि इतनी इतनी परिभाषाएँ क्यों देते है ? उनसे कहना है कि इन तीन लोकों में सर्वश्रेष्ठ धर्म का प्रचार करने वाले, धर्म के मर्म को समझाने वाले अगर कोई थे तो वह थे परमात्मा। अगर वह नही होते तो न हम आत्मा को जानते और न ही परमात्मा को पहचानते। परमात्मा की अनुकंपा से ही आज परमात्म भक्त

कहलाते है ।

एक वहुत सुन्दर कहानी मेने अपनी गुरुवर्या शासन दीपिका महत्तरा सुमगला श्री जी म सा के प्रवचन मे सुनी थी । एक बार एक ग्वाला जगल मे गाये चरा रहा था । तभी उधर से एक साधु महात्मा आते हुए दिखाई दिये । ग्वाले ने साधु महात्मा को नमस्कार किया और अपने लिये कुछ मागा । साधु महात्मा ने कहा भैया हम खुद भी मगवाकर खाते है, हम तुझे क्या दे ? उस ग्वाले ने कहा कि मैने सुना है कि साधु म कोई मत्र तत्र देते है। साधु महात्मा ने कहा हा मै तुम्हारे कल्याण के लिए जरूर कोई मत्र दे सकता हूँ जिसका नित्य जाप करने से कर्म कट जायेगे, और तुम्हारी आत्मा का कल्याण हो जायेगा । ग्वाले ने कहा-दे दीजिए, आपका उपकार मानूगा । साधु महात्मा ने ग्वाले से कहा कि भगवान् की माला फेरना और उनके नाम की चादर ओढ लेना । उस समय उसने वह जाप ले लिया, लेकिन थोडी देर मे भूल गया, जगल मे एक वटवृक्ष के नीचे वह माला गिनने बैठा लेकिन उसने परमात्मा को ओढ लिया और चादर की माला फेरने लगा । उसी वृक्ष के ऊपर से विमान मे विष्णु और लक्ष्मी जा रहे थे, विष्णु ने लक्ष्मी से कहा कि देखो वह नीचे बैठा है न वह मेरा भक्त है । लक्ष्मी देखती है और कहती है यह आपका भक्त है ? विष्णु कहता है हा यह मेरे नाम का रटन कर रहा है । लक्ष्मी कहती है मै इसकी परीक्षा करती हूँ। वे दोनो विमान से नीचे आते हैं, और लक्ष्मी विष्णु से कहती है आप इस खड्डे मे छुप जाओ, विष्णु छुप जाते हैं । लक्ष्मी ग्वाले के पास जाती है और कहती है कि हे भक्त ! देख यहॉ कौन आया है ? वह अपने आप मे मस्त है, कोई जबाव नहीं देता, लक्ष्मी दूसरी बार पूछती है तो वह भडक कर गुस्से मे कहता है भाग जा यहॉ से, मे तेरे पति का जाप कर रहा हूँ । लक्ष्मी आश्चर्य मे पड जाती है फिर पूछती है कि अच्छा तो बता मेरे पति कहॉ है ? वह आवेश मे आकर कहता है होगा कही खड्डे-वड्डे मे और विष्णु वास्तव मे खड्डे मे छुपे हुए थे, लक्ष्मी को विश्वास हो जाता है कि वास्तव मे यह विष्णु का ही भक्त है ।

महानुभावो, उपरोक्त उदाहरण से यही सिद्ध होता है कि उस ग्वाले जैसा अनपढ गवार आदमी भी सच्चे मन मे ध्यान लगाकर विष्णु भक्त कहलाया । हमे भी परमात्मा का सच्चा भक्त बनना है हमे भी अपनी आत्मा के साथ परमात्मा का कनेक्शन जोडना है, तभी हमारी आत्मा प्रकाशित हो पायेगी, जागृत हो पायेगी । वह ग्वाला परमात्मा के साथ एकाकार हो चुका था, इसी कारण उसके मुख से निकली हर बात सत्य साबित हुई ।

किसी कवि ने भगत का अर्थ करते हुए कहा-भ-भाग हुआ यानि जो धर्म से भागता है । ग यानि गया बीता- जो कर्मो से बीता हुआ है । त-लूटा हुआ यानि जो दिल से टूटा हुआ है । हमे ऐसा भगत नही बनना है, हमे तो सच्चा और एकनिष्ठ समर्पित भक्त बनना है । हमे अपने जीवन मे परमात्म भक्ति का अनुष्ठान करके जीवन को सफल और सार्थक बनाना है, और अतर के कुसस्कारो को दूर करके सुसस्कारो की सुवास से अपनी जीवन बगिया को महकाना है । ☆

अद्वितीय प्रतिभा शालिनी

# शासन प्रभाविका प्रवर्तिनी साध्वी श्री खान्ति श्री जी म. सा.

## का जीवन परिचय

*(श्री आत्मानन्द जैन सभा भवन, घी वालों का रास्ता, जयपुर में आपकी **19वीं** पुण्य तिथि त्रि-दिवसीय समारोह के साथ मनाई गई। संघ की भावभीनी श्रद्धांजलि स्वरूप यह जीवन परिचय प्रकाशित किया जा रहा है— सम्पादक मण्डल)*

**जन्म:-**

कच्छ देश की श्यामल धरती के ऊपर समुद्र की लहरों से सुशोभित मांडवी बन्दरगाह के अति निकट नयनाभिराम नागलपुर नाम के गॉव में पिता पूंजा भाई माता मूली बाई के कोख से आप श्री का वि सं. 1958 में जन्म हुआ। आपका नाम जीवी बाई रखा गया।16 साल की आयु में ही आप श्री वैराग्यवासित बनकर पूज्या श्री लाभ श्री जी. म. सा (संसारी भुआसा) के चरणों में अपना जीवन समर्पित किया।

**दीक्षा :-**

वि. स. 1974 वैसाख बदी 5 के दिन गणिवर्य श्री पुनमचन्द्र जी म. सा. के वरद हस्ते धर्म ध्वज ग्रहण कर म. सा. श्री खांति श्री जी नाम दिया गया।

**ज्ञान प्रतिभावंत :-**

आपश्री ने गुरूचरणों में संस्कृत, प्राकृत, ज्योतिष, न्याय तर्क आदि शास्त्रों का अध्ययन कर अपनी ज्ञान प्रतिभा का परिचय दिया।

**उपदेशामृत:-**

आपश्री की वाणी में मधुरता से प्रभावित आपश्री को सुनने के लिए जैन अजैन हजारों की संख्या में उमडते थे। आपश्री ने कच्छ गुजरात, सौराष्ट्र, राजस्थान व महाराष्ट्र आदि विभिन्न प्रांतों में विचरण करके वीर का संदेश पहुँचाया। आपश्री की वाणी ओजस्वी, आपकी छवि तेजस्वी थी। आपश्री का बाह्य सौंदर्य स्वर्ण सा चमकता था तो आपश्री का आन्तरिक सौंदर्य आत्मसाधना से चमकता था। आपश्री के एक बार दर्शन करते ही लोग प्रभावित हो जाते थे। आपश्री एक निडरवक्ता थी, जगह-जगह खुलेआम प्रवचन होते थे।

**समन्वय साधिका :-**

आपश्री पार्श्वचंद्र गच्छ की परंपरा में रहते हुए भी अन्य गच्छ से अच्छे मधुर संबंध के कारण सभी गच्छ के श्रद्धालु आपश्री के परम भक्त बन गये। जैन ही नहीं अपितु रामभक्त व कृष्ण भक्त आदि भी आपके प्रति श्रद्धान्वित रहते थे। मालीया (गुजरात) के महाराजा व कच्छ भुज के महाराजा भी आपके प्रवचन व दर्शन का लाभ लेते थे।

**साधर्मिक उत्थान -**

आपका साधर्मिक बधुओ के प्रति अनन्य प्रेम था अत प्रत्येक चातुर्मास मे गुप्तरीति से साधर्मिक भाई बहिनो को सहयोग करवाते थे।

**नारी उत्कर्ष की प्रखर हिमायती -**

आपश्री आजीवन नारियो के उत्थान के लिए प्रयत्नशील रही। अत महासती गुणमजरी, महासती दक्षादेवी, महासती क्षमादवी आदि सतियो का चरित्र आलेख न कर ''नारी अबला नही पर सबला है'' यह अपनी कलम से जगत के समक्ष प्रस्तुत किया।

''साध्वी को व्याख्यान देना मना है'' इस पर आपश्री ने ''साध्वी व्याख्यान निर्णय'' यानि साध्वी व्याख्यान कर सकती है कि नहीं, इस विषय पर पुस्तक लिखकर जैन समाज के बीच विमोचन करके आपश्री की प्रखर प्रतिभा का परिचय करवाया और जब भायखला (बम्बई) मे पू आचार्य भगवत श्री वल्लभ सूरि म सा के समुदाय की साध्वी पू श्री मृगावती श्री जी म सा का खुलेआम प्रवचन का विरोध हुआ था तब साध्वी श्री ने इस पुस्तिका आचार्य श्री वल्लभसूरि म सा के नारी उत्थान की अग्रता मे कडी जोडने वाली सिद्ध हुई थी।

**साहित्य सर्जन -**

आपश्री प्रखर वक्ता के साथ सुदर लेखिका भी थी। आपश्री ने क्षात्यानद गुणमजरी, क्षमादेवी, दक्षा देवी, महासती चद्रकला, पुष्पवाटिका, साध्वी व्याख्यान निर्णय, त्यागी के भोगी मनोरथमाला, मौक्तिक मालादि पुस्तको का आलेखकर ज्ञान की गगोत्री बहाई। नारी साक्षरता के लिए आपश्री धार्मिक लेख व अवसरोचित समाज की कुरूढियो के सामने दीपज्योति रूप लेखा को निडर शेरनी की तरह लिखकर समाज को जागृत करती रही।

**विशाल परिवार -**

स्व परम विदुषी साध्वी श्री सुनदा श्री जी म सा एव कार्य प्रवीणा पू साध्वी श्री ॐकार श्री जी म सा आदि आपश्री की विद्वान शिष्या प्रशिष्याओ का 48 का परिवार है जो आज भी अपनी ज्ञान प्रतिभा से आपकी सुशिक्षा का पचार व प्रसार करके गॉव गॉव विचरण करते हुए जैन शासन की शोभा बढा रहा है।

**ज्ञान व भक्ति प्रेम -**

जहॉ-जहॉ आपने चातुर्मास किये, वहाँ ज्ञानशालाए, पाठशालाए, महिलामडल, उद्योगशाला की स्थापना के लिये, उपाश्रयो के निर्माण के लिये, जिनमदिरो के जिर्णोद्धार के लिये, गरीबो की सहायता के लिये सत्प्रेरणा दी।

**बहुमुखी व्यक्तित्व -**

आपश्री सदा अप्रमत्त रहती थी, प्रमाद आपसे कोसो दूर था। आपश्री अपना कार्य अपने हाथा से ही करती थी और शिष्याओ को भी वही ज्ञान देती थी। आपश्री बहु आयामी प्रतिभा की धनी थी। सयम पालने मे भी आपश्री बहुत कड़क थी।'' हम परावलम्बी नहि स्वावलम्बी बने'' यह आपश्री का सिद्धान्त था। आपश्री का हृदय ब्रज सा कठोर था तो पुष्प सा कोमल भी था जिससे बच्चे आपके पास दौड़े चले आते थे। बरसो पुराने

सामाजिक मतभेदों को, संघ संबंधी मतभेदों को मिटाकर आपश्री संघ में एकता स्थापित करवाती थी । आपश्री की ख्याति से ईर्ष्या करने वाले विरोधी वर्ग को भी बडे प्रेम से बुलाती थी । दादा गुरूदेव श्री पार्श्वचंद्रसूरीश्वर जी म. सा. के नाम को चारों ओर चमकाया था । आपकी ज्ञान गरिमा को देखकर वि. सं. 2011 ध्रांगध्रा में मुनि श्री बालचंद्र जी म. सा. ने प्रवर्तिनी पद से अलंकृत किया ।

वि. सं. 2034 श्रावण सुदी 7 के दिन शाम को 6.30 बजे मुलुंड बम्बई में आपश्री का स्वर्ग गमन हुआ । शमशान यात्रा में दस हजार से भी अधिक भीड में आपका निर्जीव पार्थिव देह जब राजमार्ग से गुजर रहा था तब भक्तों के मुख में एक ही नारा था :—

*जिनशासन की शान जिसको,*
*अजीज थी अपनी जान से,*
*वो विभूति जा रही है,*
*देखो कितनी शान से ।*

आपश्री के स्वर्गगमन के दिन ही आपश्री के पार्थिव शरीर को अग्निदाह देने वाले सेठ श्री मगनलाल जी वेल जी बोरावली वालों के घर में कुमकुम की बरसात व साथिया (स्वस्तिक) आलेखित हुआ था ।

**गुणानुवाद :-**

समस्त कच्छी वीशा ओसवाल समाज, मुलुन्ड जैन श्वे. मू. पूजक जैन समाज और विभिन्न संस्थाओं ने आपश्री का गुणानुवाद करके श्रद्धांजलि सुमन चढाये थे । विभिन्न समाचार पत्रों में भी श्रद्धांजलियां अर्पित की गई थी । जगह जगह अष्टाह्निका महोत्सवों का आयोजन किया गया था ।

**अमर ज्योति :**

आज भी आपश्री की सुशिष्या शासन प्रभाविका कार्य प्रवीणा पू. सा. श्री ॐकार श्री जी म. सा. की प्रेरणा से स्वांति श्री आराधना ट्रस्ट के ट्रस्टी धार्मिक, सामाजिक कार्यों में जुटे हुए हैं और आपश्री के नाम को चार चॉद लगा रहे है ।

*महान् विभूति शासनरत्ना*
*पू. प्रवर्तिनी सा. श्री स्वांति श्री जी म. सा. को*
*भावभीनी श्रद्धांजलि ।* ☆

दीपक की भांति प्रकाश करना सीखो
वृक्ष की भांति त्याग करना सीखो ।
दीपक और वृक्ष तुम्हें सिखा रहे हैं भाग्यवानों
कहता है सबको गले लगाना सीखो ॥

# मैत्री का बाग लगाते चलो

पद्म शिशु

सा श्री प्रशातगिरा श्रीजी मा जयपुर

(तर्ज ज्योत से ज्योत)

सबको गले से लगाते चलो, प्रेम सरिता बहाते चलो
मैत्री भाव बढाते चलो, प्रेम सरिता बहाते चलो
मोक्ष मारग की जड है मैत्री, सजीवनी दुनिया की
जीवन वन मे छाए बगिया, खुश्बू मिले खुशियो की
मैत्री का बाग लगाते चलो
जग हितकारी वीर प्रभु ने, मैत्री का पाठ पढाया
''मित्ति मे सव्व भुए सु'' युँ, हृदय कमल मे बसाया
मैत्री का दीप जलाते चलो
सब का भला हो इसी जगत मे, सब लगे परहित मे
दूर होवे दु ख दोष सभी के, सुख छाए बस जग मे
मैत्री का गान सुनाते चलो
जन-जन-मन मे आनद प्रगटो, भक्ति गगा मे नहाओ
खाति ॐकार पद को पाओ, पाप सताप मिटाओ
मैत्री का 'पद्म' खिलाते चलो

# जन-जन के श्रद्धाकेन्द्र : आचार्य सुशील सूरिजी

*डॉ. जवाहर चन्द्र पटनी, एम. ए., पी. एच. डी.*

महिमामंडित भारत भूमि में अनेक संतों ने अवतरित होकर मानवता की परम पुनीत गंगा प्रवाहित की है। उन्होंने परम कृपालु करूणासागर परमात्मा के प्रेम और करूणा के कमनीय कुसुम इस पावन धरा पर खिलाकर सदा इसे सुवासित किया है।

आधुनिक युग में भौतिक वैभव की चकाचौंध में मनुष्य मानवीय संवेदना को विस्मृत कर धन-सम्पत्ति एकत्र करने के लिए दिन-रात दौड रहा है। नैतिक-अनैतिक जीवन का ख्याल किये बिना गगन-चुंबी भवनों का निर्माण कर रहा है, सम्पत्ति से तिजोरियाँ भर रहा है। फलस्वरूप, एक ओर विशाल सम्पदा वाले धनाढ्य वर्ग के बंगले और कारें हैं, तो दूसरी ओर भूखे-प्यासे लोगों की झुग्गी-झोपडियाँ। इससे ईर्ष्या और द्वेष पनपते हैं, रक्तपात और लूटपात होते हैं, युद्धों का सृजन होता है।

ऐसे युग में त्यागी संत महात्मा मानवीय प्रेम जीव-मैत्री, धर्म-सद्भाव, जाति-जाति का अभेदभाव और करुणा का सन्देश नगर-नगर, ग्राम-ग्राम पैदल विहार कर दे रहे हैं। ऐसे सन्तों में, राजस्थान-दीपक पूज्य आचार्य सुशील सूरि जी लगभग अस्सी वर्ष की आयु में भी भगवत्-प्रेम का सन्देश दे रहे है। ये महर्षि गुजरात के चाणस्मा नगर में संवत् 1973 में सुसम्पन्न श्रेष्ठि परिवार में जन्में थे। पिताश्री चतुरभाई तथा मातेश्वरी चंचलबेन के पुत्र-रत्न के रूप में जन्म लेकर माता-पिता एवं सुसंस्कृत परिवार के संस्कारों से विभूषित होकर इन्होंने केवल 15 वर्ष की किशोरावस्था में दीक्षा ली।

सन्त कबीर ने कहा है - 'सतगुरू नाव खेवटिया, भव सागर तरी आया।' सौभाग्य से आपश्री को परम पूज्य शासनसम्राट आचार्य श्रीमद् विजय नेमि सूरि जी, साहित्य-सम्राट प. पू. आचार्य श्रीमद् विजय लावण्य सूरि जी एवं कविदिवाकर आचार्य श्रीमद् दक्ष सूरि जी जैसे सद्‌गुरू मिले जिससे इनका जीवन अनेक मंगलों से सुमंडित हो गया।

दीक्षा के 64 वर्षो में आप श्री ने लोकमंगल के अनेक कार्य सुसम्पन्न किये हैं और अब भी अबाध गति से कर रहे हैं। 'चरैवेति चरैवेति' की भभूत रमाये ये कर्मयोगी परोपकार रत हैं।

ज्ञान, भक्ति और कर्म के समन्वयात्मक व्यक्तित्व वाले इन महर्षि ने सदा राष्ट्रीय-एकता और धर्म सद्भाव का सन्देश दिया है। जहाँ कहीं दुर्भिक्ष, अतिवृष्टि या संक्रामक रोग से जन-जीवन पीडित हो जाता है, आप श्रीमन्तों को उपदेश देकर वहां प्रचुर धन भिजवाते हैं। आपके प्रवचनों में अपरिग्रह, अनेकान्त और अहिंसा का सन्देश होता है। आपके उपदेशों की कुछ मणियाँ यहाँ प्रस्तुत है :

1. दयापूर्ण हृदय मनुष्य की अनन्त मूल्यवान सम्पत्ति है।

2. नश्वर देह, धन, बुद्धिवल, समृद्धि आदि का उपयोग दीन-दुखियों के दुःख दूर करने

मे हो तो इन्हे सफल समझना चाहिए, अन्यथा दुर्लभ मानव-देह केवल मिट्टी का निर्जीव घडा है।

3 सन्तो की सगति से भूले-भटके मनुष्य सन्मार्ग पर आ जाते है।

4 इस पृथ्वी पर तीन रत्न हे- जल, अन्न और सुभाषित वाणी।

5 अन्न अर्थात् शाकाहारी भोजन अमृत तुल्य हे।

6 शास्त्रो मे मदिरापान का निषेध है। भले ही शराब देशी हो या विदेशी हो।

7 जैन दर्शन पुरुषार्थ को महत्त्व देता है। सयम साधना तप आदि से कर्मपुद्गल नष्ट हो जाते है।

8 हे जीवो ' यदि तुम्हे सुख-शान्ति की इच्छा है तो समस्त प्राणियो को सुख-शान्ति प्रदान करो।

पर्यावरण के पोषक आचार्यश्री पर्यावरण की रक्षा करने के लिए अपने प्रत्येक प्रवचन मे उपदेश देते है। हमारे वन हरे-भरे हो। जैविक और वानस्पतिक सम्पदा राष्ट्र की अमूल्य सम्पदा है। आधुनिक युग मे औद्योगीकरण का द्रुतगति से विस्तार हो रहा है। फलस्वरूप अमूल्य जीवन-पोषक हरे-भरे वृक्ष कट रहे हे। पर्वत कट रहे है, हरियाली विलुप्त हो रही है, बडे-बडे कारखानो के उदय से चारो ओर प्रदूषण फैल रहा है। मनुष्य का स्वास्थ्य गिर रहा है। जल प्रदूपित हो रहा है। श्वास-प्रश्वास मे धुँआ फैल रहा है। इसका परिणाम है- अनेक सक्रामक एव अन्य रोगो का भीपण प्रहार।

धन-सम्पदा की इस दोड मे मनुष्य मानवता रूपी चिन्तामणि-रत्न को खो रहा है, और उसके बदले उसे प्राप्त हो रही है-भयकर अशान्ति। तनाव मे जीवन दु खी है।

पूज्य आचार्यश्री ने अनेक मन्दिरो व तीर्थो के निर्माण एव जीर्णोद्धार मे एक ओर विपुल वृक्षावली की हरीतिमा फैलायी है तो दूसरी ओर भारतीय सस्कृति की गौरवान्वित कला की सुषमा पर भी ध्यान दिया है। उनका उद्देश्य है कि इन कलात्मक एव हरीतिमा से शोभनीय तीर्थ और मन्दिरो की यात्रा और दर्शन से मनुष्य 'सत्य-शिव-सुन्दरम्' के रहस्य को समझे और वह मानवीय गुणो प्रेम, सवेदना, मैत्री भावना, दरिद्रनारायण की सेवा ओर सन्तोष आदि गुणो से समलकृत हो जाए। वे अपने प्रवचनो मे वृक्षो की महिमा समझाते हुए कहते है कि श्री तीर्थकरा ने अशोक, शाल, आम्र धवा एव रायण आदि अनेक वृक्षो तले दीक्षा एव परम ज्ञान- केवलज्ञान प्राप्त किया है। वे मन्दिरो के परिसर मे चैत्यवृक्ष लगाने का उपदेश देते है।

### श्री अष्टापद तीर्थ

श्री अष्टापद तीर्थ हिमालय के कैलाश पर्वत पर कहीं स्थित है। वर्तमान काल मे वह लुप्त है। इस महापवित्र तीर्थ पर प्रथम तीर्थकर श्री आदिनाथ प्रभु का निर्वाण हुआ था। इस अतिशय रमणीय, प्राकृतिक सौन्दर्य से परिसम्पन्न तीर्थ पर श्री भरत चक्रवर्ती ने चौबीस जिनवरो के सुन्दर स्वर्ण-जिनालय निर्मित करवाकर उनमे प्रत्येक जिनवर के आकार प्रमाण की स्वर्ण-रत्न जडित प्रतिमाएँ प्रतिष्ठित करवाई थीं। जैनाचार्य श्री सुशील सूरिजी ऐसे अद्भुत, कलात्मक एव अभिनव अष्टापद तीर्थ का निर्माण श्री राणकपुर-गोडवाड पचतीर्थी की मुख्य सडक पर सुकडी नदी के किनारे, जो रानी स्टेशन के पास है करवा रहे है। उनका लक्ष्य है कि भारतभूमि सस्कृति की जननी है। ऐसे कलात्मक मन्दिरो के दर्शन कर

आधुनिक भोगवादी युग में पली हुई दिग्भ्रमित पीढी को अध्यात्म और नीति-न्याय का बोध हो, उनको आत्मा की अमरता और देह की नश्वरता का भान हो।

**शान्तिदूत :**

समाज, राष्ट्र और विश्वशान्ति के लिए वे सतत् प्रयत्नशील हैं। भगवान महावीर ने सर्वत्र शान्ति के लिए तीन सिद्धान्त दिये हैं- अहिंसा, अनेकान्त और अपरिग्रह। शान्तिदूत आचार्य श्री अपने प्रवचनों में प्रबलता से कहते हैं कि अहिंसा से मैत्री, अनेकान्त से सद्भाव एवं अपरिग्रह से संतोष की शुभ भावना जाग्रत होती है। फलस्वरूप सर्वत्र शान्ति स्थापित हो सकती है। उनकी धर्म सभा में जैन, जैनेतर सभी आते हैं और उनमे मानवता का संचार होता है। आचार्य श्री की दृष्टि में धन-सम्पत्ति की आसक्ति दुःख का कारण है। सुखी होने के लिए दान की अजस्र गगाधारा बहती रहे तो 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' की उक्ति सार्थक हो जाए।

**मरुभूमि के अमृतवर्षी मेघ :**

यद्यपि संत विश्व-विभूति होते है, परन्तु आचार्यश्री ने राजस्थान प्रदेश को ही अपनी कर्मभूमि बनाया है। वे राजस्थान के छोटे-छोटे ग्रामों में चातुर्मास करते हैं और जनता को व्यसनमुक्त होने का सन्देश देते हैं। बिहार के अन्तर्गत ग्रीष्मकालीन लू के प्रहारों को सहन करते हुए, शीतकाल में शीत के प्रहार झेलते हुए वे महर्षि वृद्धावस्था में भी एक युवक की तरह शान्त-प्रशान्त भाव से राजस्थान की भूमि को प्रेम-जल से अभिसिंचित कर रहे हैं। चातुर्मास में छोटे-छोटे ग्राम भी नगर बन जाते हैं। अनेक धार्मिक एवं नैतिक महोत्सवों के आयोजन होते रहते हैं। उनके सान्निध्य में ज्ञान और नैतिक शिविरों का सार्वजनिक आयोजन होता है जिससे युवापीढी सुसंस्कारों से सुसज्जित होकर संस्कृति के नवप्रभात में जाग्रत हो जाती है।

इस युग के भ्रष्ट जीवन में जो विकृतियॉ आ गयी हैं, उनका प्रक्षालन करने हेतु वे धन्वन्तरि की तरह शील-संयम-चरित्र का अमृत-कलश लेकर पहुँचते हैं। नारी-शोषण को मिटाने के लिए वे सदाचार का पाठ सिखाते हैं। विद्यालयों, महाविद्यालयों में उनके प्रवचन-पीयूष को पीकर बाल-युवा सभी भारतीय संस्कृति के महान् सदाचार धर्म को अपनाते हैं।

**राष्ट्र प्रेम :**

आचार्यश्री संस्कृत, गुजराती, प्राकृत एवं हिन्दी भाषाओं के प्रकाण्ड पण्डित हैं। उन्होंने लगभग 150 ग्रन्थों का सृजन किया है जो ओज, माधुर्य और प्रसाद गुणों से युक्त हैं, परन्तु उनकी प्रबल मान्यता है कि हिन्दी राष्ट्र को एक सूत्र में बॉधने मे सक्षम है। वे कहते हैं :

''हिन्दी चिन्तामणिरत्न है जो अन्य भाषाओं की मणिमाला को सुशोभित किये हुए है''

आधुनिक युग के भाषावाद, क्षेत्रवाद के फैलने के कारण वे क्षुब्ध हैं। उनकी दृष्टि में हिन्दी भारत की एकता को अक्षुण्ण रख सकती है। इस दृष्टिकोण को ध्यान में रखकर उन्होंने अपने अधिकतर ग्रन्थों की रचना हिन्दी में ही की है। गुजराती भाषा-भाषी होते हुए भी उनका हिन्दी भाषा के प्रति अगाध प्रेम है। उन्होंने संस्कृत में 'सुशील नाममाला' नामक शब्दकोष की रचना की है जो अभिधान राजेन्द्र कोष' की तरह सुविख्यात है। इस शब्दकोश का आधार कलिकालसर्वज्ञ श्री हेमचन्द्राचार्य निर्मित 'अभिधान चिन्तामणि' है जो

पूर्णरूप से विश्व मे पतिष्ठा प्राप्त हे। आज हिन्दी मे उन पारिमाषिक शब्दो का अभाव है जो अग्रेजी शब्दो का ठीक मावात्मक सही अर्थ दे सके। इस शब्दकोष मे वह समस्या एक सीमा तक सुलझाई गई है।

आचार्यश्री ने 'महादेव स्तोत्र' रचकर धर्मसद्माव मे अभिवृद्धि की है। यह काव्य भी कलिकालसर्वज्ञ हेमचन्द्राचार्य द्वारा विरचित 'महादव स्तोत्र' पर आधारित है। सरल हिन्दी मे पद्यानुवाद रुचिकर है। बालोपयागी साहित्य मे 'सुशील विनोद' कथा-सग्रह उल्लखनीय है।

यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि आचार्यश्री के वृहद् साहित्य पर पीएच डी स्तर का शोध प्रबन्ध लिखा जा सकता है।

आचार्यश्री सौम्य, मधुर मुसकान बिखेरते सबके प्रीतिभाजन हैं। उनके पास कोई रोता हुआ आता है तो हसता हुआ जाता है। यह उनकी उदारता का द्योतक है। वे अपने जीवन को भगवान महावीर के पॉच महाव्रतो से सुवेष्टित किये हुए हैं। उनकी अकिंचनता और लघुता सरल बालक के समान है। परन्तु इस लघुता मे पभुता का महासागर लहराता है।

निस्सन्देह सन्तो का यही लक्षण होता है।

उनको देखकर यह ह्रदयोद्‌गार सहज ही प्रकट होते है-

''आचार्यश्री हिन्दुओ के सन्त हैं, मुसलमानो के फकीर है, ईसाइयो के पादरी है और जैनो के आचार्य है।''

अन्त मे 'सुशील महाकाव्यम्' की यह प्रशस्ति गुरुवर को समर्पित करता हूँ

क्षीरसागर सा सुशील का यश है,<br>
इसीलिए सारा जग सुशील के वश है।<br>
गुरुवर को वन्दन, अभिनन्दन,<br>
अर्पण विनय का कुकुम-चन्दन ॥ ☆

कटु वचन सभी के लिए कष्टदायक होता है<br>
कटु सब मे भेद डालने लायक होता है ॥<br>
अपने अपने वचन का दृष्टिकोण बदलो<br>
तब ही जीवन आगे बढने लायक होता है ॥

# मानवता के शिलान्यासीः ऋषभदेव

—सुश्री सरोज कोचर
*व्याख्याता, श्री वीर बालिका महाविद्यालय*

'उसहे णाम, अरहा कोसलिए पढमराया, पढमजिणे, पदमकेवली पढमतित्थयरे पढमधम्मवरचक्कवट्टी समुप्पज्जित्थे।' *जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति 2130*

अर्थात् भगवान ऋषभदेव प्रथम राजा, प्रथम जिन, प्रथम केवली, प्रथम तीर्थकर और प्रथम धर्म चक्रवर्ती थे । ऋषभदेव ने मानव सभ्यता और मानवीयता का वह बीज वपन किया जो काल का उर्वरा क्षेत्र पाकर विशाल वट तरू के रूप मे आज अनेक गुणावगुणो सहित दृष्टिगत होता है । तत्कालीन विषम परिस्थितियो मे मानव कल्याण की दिशा मे जो महान् योगदान उस विलक्षण प्रतिभा अनुपम मूर्ति का रहा वह आज मानव इतिहास का एक अविस्मरणीय प्रसग है ।

जब पशुवत् आहार विहारादि की सामान्य प्रक्रिया मे व्यस्त मनुष्य मे लोभ, छीना झपटी, पारस्परिक कलह, अशान्ति आदि का वातावरण था तब सम्भवतया मानव विकारो के प्रथम चरण प्रादुर्भाव हुआ। ऐसे समय मे जहाँ आपने प्रजा की भौतिक सुख सुविधा का ध्यान रखा, स्वय भी इनका पर्याप्त उपयोग किया । वही आप इनमे कभी खोये नही । आसक्ति के स्थान पर अनासक्ति आपके जीवन की विशेषता बनी रही । आपका कथन था कि 'मात्र भोग ही हमारे जीवन का लक्ष्य नही है। हमारा ध्येय होना चाहिये परम आत्म शान्ति की प्राप्ति । इसके लिए काम, क्रोध, मद, मोह आदि विकारों का ध्वस आवश्यक है ।' इन विकारो को समाप्त करने हेतु आपने राजसिक वैभव, सत्ता, सासारिक सुखो, परिवार आदि से मुख मोडकर सयम का मार्ग अपनाया। आप इस प्रकार के महनीय कृतित्व व्यक्तित्व से अत्युच्च गोरवशाली पद को प्राप्त करते हुए कर्मो का समूल क्षय करके तीर्थकर पद से अलंकृत हुए।

ऐसे हमारे तीर्थकर श्रृखला के आदि अष्टमी का जन्म कुलकर वशीय नाभिराज के घर माता मरूदेवी की कुक्षि से हुआ। नवजात शिशु के वक्ष पर वृषभ का चिन्ह होने के कारण बचपन से ही उन्हे ऋषभ कुमार के नाम से पुकारा गया। इन्ही ऋषभदेव के लिए डॉ राधा कृष्णन्, डॉ जिम्मर, प्रो विरूपाक्ष वाडियर आदि विद्वानो ने कहा है कि ऋषभदेव का मात्र वेदो मे उल्लेख ही नही है अपितु वे विशिष्ट व्यक्तित्व के कारण मात्र जैन ही नही अपितु वैदिक परम्परा मे अत्यधिक पूजनीय है।

ऋग्वेद के 10 वे मण्डल के 166 सूक्त में तीर्थकर ऋषभदेव की स्तुति इस प्रकार की गई है-

ऋग्वेद मे ही ऋषभ को पूर्वज्ञान का प्रतिपादक और दुःखो का नाशक बताते हुए उनकी स्तुति स्थलो पर महादेव के रूप में, अमरत्व पाने के रूप मे, अहिसक आत्म साधक के रूप में की गई है।

मानतुंगाचार्य के भक्तामर स्तोत्र की ''त्वामामनन्ति मुनयः परम मुमास-मादित्यवर्णममल तमसः पुरस्तात् । इस गाथा का भावो से समानता रखने वाली विषय वस्तु का निरूपण यजुर्वेद के मन्त्रो मे किया गया है।

अथर्ववेद मे भी अनेक स्थलो पर ऋषभ के गुणो का कीर्तन किया गया हे। इस प्रकार वेदों का अवलोकन करने पर यह निर्विवाद रूप से कह सकते हे कि वैदिक ऋषि विविध प्रतीकों के रूप मे ऋषभ की स्तुति करते थे। जो जेन धर्म के आदि तीर्थकर ऋषभ

से समानता रखते है।

ऋग्वेद के दूसरे मण्डल के 33 वे सूक्त मे रूद्र की स्तुति मे रूद्र के स्थान पर वृषभ शब्द का प्रयोग हुआ है । वहाँ रूद्र को 'अर्हत्' शब्द से सम्बोधित किया गया है। ऐसा प्रतीत होता है कि यह उपाधि तीर्थंकर ऋषभ से सम्बन्धित हो सकती है क्योकि ऋषभदेव ने 'अर्हत् धर्म' का सचालन किया था।

इसी प्रकार शिव और ऋषभ के एक रूप को बताने वाले कई तथ्य समक्ष आये है। वैदिक परम्परा म शिव को कैलाश पर्वत पर रहने वाला बताया है जबकि जैन परम्परा म भी भगवान ऋषभ का तप ध्यान निर्वाण का क्षेत्र कैलास पर्वत है।

शिव को माहेश्वर भी कहा जाता है। पाणिनी के मतानुसार अइउण्, ऋलृक् आदि सूत्र शिव के डमरू अर्थात् नाद से माहेश्वर सूत्र निष्पन्न हुए है। उन्होने सर्वप्रथम अपनी पुत्री 'ब्राह्मी' को ब्राह्मलिपि अर्थात् अक्षर विद्या का बोध कराया।

इस प्रकार अनेक स्थानो पर शिव एव ऋषभदेव मे साम्य उपलब्ध होता है। उपलब्ध अन्त साक्ष्य एव बाह्य साक्ष्य का विवेचन करने पर यह कह सकते है कि ऋषभ एव शिव एक ही है और वह है ऋषभदेव । ऋषभदेव हिरण्यगर्भ, नाभिज ब्रह्म, आदिनाथ नामो से भी अभिहित हुए है।

ऋग्वेद म हिरण्यगर्भ शब्द ऋषभदेव के लिए भी प्रयुक्त हुआ है। यह युक्तियुक्त भी है कि जब माता मरूदेवी की कुक्षि मे ऋषभदेव आये उससे छ माह पूर्व अयोध्या नगरी मे हिरण्य-सुवर्ण रत्नो की वृष्टि प्रारम्भ हो चुकी थी। अत हिरण्यगर्भ नाम सार्थक है।

अखिल विश्व के स्वामी होने के कारण वे लोकेश कहलाये। नाभिराय के पुत्र होने के कारण वे नाभिज कहलाये।

वेदो के अतिरिक्त अन्य ग्रन्थो मे भी ऋषभदेव की महिमा का गान किया गया है। यथा- मनुस्मृति मे ऋषभदेव की स्तुति इस प्रकार की गई है-

अष्ट षष्टिषु तीर्थेषु यात्राया तत्फल भवेत् ।
श्री आदिनाथस्य देवस्य स्मरेणनापि तद्भवेत् ॥

अर्थात् अडसठ तीर्थ स्थलो की यात्रा करने मे जिस फल की प्राप्ति होती है उतना फल मात्र आदिनाथ भगवान के स्मरण से होता है।

इसी प्रकार विभिन्न पुराणो म मात्र ऋषभदेव के नामो का उल्लेख नही है जिनसे हम सादृश्यता स्थापित कर सके अपितु उनके जीवन की घटनाओ का भी उल्लेख है।

श्रीमद् भागवत मे उल्लेख है कि

अष्टमे मरूदेव्या तु नाभेर्जात उरूक्रम ।
दर्शयन् वर्त्म धीराणा सर्वाश्रममनमस्कृतम् ॥

अर्थात् वासुदेव ने आठवा अवतार नाभि और मरूदेवी के यहाँ धारण किया । वे ऋषभ रूप म अवतरित हुए और उन्होने सब आश्रमो द्वारा नमस्कृत मार्ग दिखलाया।

ब्रह्मविद्या के पारगामी ऋषभदेव के 100 पुत्र थे यह उल्लेख श्रीमद् भागवत मे मिलता है।

वैदिक एव जैन साहित्य मे जैसा ऋषभदेव का वर्णन मिलता है वैसा बौद्ध साहित्य मे नहीं है। यद्यपि आधुनिक इतिहासकार काल की प्राचीनता के सम्बन्ध म मौन है किन्तु भगवान ऋषभदेव प्रागैतिहासिक युग मे हुए है यह कहा जा सकता है। विश्व के कोटि-कोटि मानवो के लिए कल्याणरूप, मगलरूप मानव सस्कृति के आद्य निर्माता भगवान ऋषभदेव श्रमण सस्कृति एव ब्राह्मण सस्कृति के आदि पुरूष है । ऐसे विराट व्यक्तित्व कृतित्व के धनी समग्र मानवता के शिलान्यासी भगवान ऋषभदेव को हमारा शुद्ध अन्त करण से कोटि-कोटि सादर आत्म वदन। ☆

# श्री समेतशिखर विवाद
# श्वेताम्बरों के विरुद्ध फैसले को ललकारने का निर्णय

*शेठ आणंदजी कल्याणजी का परिपत्र दि. 8-7-97*

पटना हाईकोर्ट की रांची बैंच ने, 1 जुलाई, 1997 के दिन, पवित्र श्री समेत शिखरजी के बारे में, 1990 के फैसले के सामने की हुई अपील का फैसला दिया है। इस फैसले से समग्र जैन समाज एवं विशेष कर श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ को तीव्र आघात लगा है। कानूनी सलाह के अनुसार श्वेताम्बरों का मानना है कि, वह निर्णय (फैसला) हकीकत, तथ्य एवं कायदे के आधारित नही हुआ है और उचित न्याय प्राप्त नही होने से श्वेताम्बर इस फैसले को उसी न्यायालय की डिवीजन बैच के सामने ललकारेंगे।

सदियों से चलते आये और प्रीवी काउन्सील ने 1933 में मुहर लगाये (स्वीकृत) श्वेताम्बरों के वहीवट को रद्द कर बिहार सरकार के हाथ में देने की इस फैसले में बात है। पवित्र श्री समेत शिखरजी का समग्र पहाड पवित्र नही है, ऐसा ठहराकर बिहार के जमीनदारी नाबूदी के कानून के तहत सरकार पूरा वहीवट हाथ में ले सके, ऐसा नामदार कोर्ट ने बताया है। ऐसे निर्णय पर आने के लिये, अभी तक न्यायालयों में इस पहाड का जर्रा-जर्रा और कण-कण पवित्र है, ऐसा बार बार मनाने वाले दिगम्बर भाइयों ने अब सुविधा के लिए, उससे विपरीत रजूआत कर के ऐसा बताया है कि पूरा पहाड पवित्र है, ऐसा हम नहीं मानते। यह अत्यंत खेद की बात है। विधि की वक्रता को देखें कि अपने आपको जैन मानने वाले दिगम्बर भाई स्वयं प्रेरित होकर ऐसा पवित्र पहाड सरकार की मालिकी का हो जाय तो-हो जाय, लेकिन श्वेताम्बरों के हाथ में तो रहने देना ही नही चाहिये। ऐसे आशय से अपनी, पहाड की पवित्रता की बाबत की चुस्त मान्यताओं के विरुद्ध दलीलें करने को प्रेरित होते हैं। शासनदेव सभी को सद्बुद्धि दे।

समग्र पहाड की पवित्रता अक्षुण्ण रहे, इसके लिए सम्बन्धित करार में अनेक धाराएँ होने पर भी नामदार कोर्ट ने दिनांक 5-2-1965 को सरकार ने श्वेताम्बरों के साथ किया करार व्यापारी धोरण का था ओर धार्मिक धोरण का न था, ऐसा कहा है। ना. कोर्ट ने तो ऐसा भी जताया है कि शेठ आणंदजी कल्याणजी एक धार्मिक पेढी ही नहीं थी, बल्कि व्यापारी पेढी थी। और ट्रस्ट के रूप में तो 1960 के बाद ही उसका जन्म हुआ है। ''आणंदजी कल्याण पेढी यह ट्रस्ट नहीं है, सुविधा के कारण ही उसे ट्रस्ट के रूप में बताया जाता है।'' यह निराधार झूठ है। ऐसी रजूआत भी हमारे जैन दिगम्बर भाईयों ने कोर्ट में की है और शेठ आणंदजी कल्याणजी पेढी की ओर से वह ट्रस्ट है, ऐसा साबित करने की पर्याप्त माहिती पेश की गयी होने पर भी ना. कोर्ट ने विपरीत फैसला दे दिया है। उसे अपील में श्वेताम्बर ललकारेंगे ही। पूरा पहाड धार्मिक न होने के मुख्य कारण बिहार भूमि सुधारणा कानून के तहत 1953 में सरकार का हो गया है और इस कारण 1965 में श्वेताम्बरों के साथ किया गया करार गैर कानूनी है। ऐसा ना. कोर्ट ने ठहराया है।

साथ-साथ उन्होंने ऐसा भी ठहराया है कि

दिगम्बरो को इस पहाड पर जरा भी अधिकार नहीं है और दिगम्बर अपने आप पहाड पर कोई भी बॉधकाम (निर्माण) कर सकते नही है । और 1966 मे उनके साथ सरकार का किया हुआ करार भी गेर कानूनी है । नामदार कोर्ट ने ऐसा भी स्वीकृत किया है कि बिहार भूमि सुधारणा के कानून की धारा 4 (फ) के तहत सरकार समेत शिखरजी के शिखर पर आधे मील के क्षेत्र मे आयी हुई टोके एव मदिरो का कब्जा नही ले सकती है । इसके उपरात PLACES OF WORSHIP ACT-1991 की धाराएँ यहॉ लागू होती है, और इससे भी सरकार शिखर (चोटी) पर जगहो का कब्जा नही ले सकती । इस कानून के तहत, 15 अगस्त, 1947 मे जो धार्मिक स्थलो की परिस्थिति थी, उसमे परिवर्तन नही किया जा सकता ।

प्रथम दृष्टि से देखने पर अचूक लगता है कि यह एक स्वय विरोधाभासी फैसला है । एक मर्तबा पूरा पहाड सरकार का हो गया है, ऐसा कहने के बाद फैसले मे भी ऐसा भी बताया है कि ऊपर आयी टोके और मदिर सरकार के होते नहीं है ।

इस फैसले के अमलीकरण के सामने श्वेताम्बरो ने तुरत ही ''स्टे'' की मॉग की थी, जो नामदार कोर्ट ने मान्य रखी है, और कोर्ट स्टेटसको का आदेश देकर दोनो पक्षो को पहाड पर कोई भी बॉध काम करने से रोक लगायी है ।

## अनमोल वचन

श्रद्धा के बिना ज्ञान नही होता,

ज्ञान के बिना आचरण नही होता

आचरण के बिना मोक्ष नही मिलता और

मोक्ष पाये बिना निर्वाण-पूर्ण शान्ति नही मिलती ।

---

## हार्दिक बधाई

श्री जेन श्वेताम्बर तपागच्छ सघ, जयपुर के वरिष्ठ सदस्य श्री भागचन्दजी जैन (ओसवाल अगरबत्ती), नागरिक सुरक्षा के मानद डिवीजनल वार्डन (डिवीजन न 12) को नागरिक सुरक्षा तथा गृह रक्षा पदक से सम्मानित किये जाने पर हार्दिक बधाई ।

*आपको यह पदक दिल्ली मे गणतत्र दिवस पर आयोजित समारोह मे प्रदान किया जायेगा ।*

—सम्पादक मण्डल

# 'मानव जीवन की सार्थकता'

—श्री धनरूपमल नागौरी

मानव जीवन अत्यन्त दुर्लभ है । जितने भी मतमतान्तर हैं, उन्होंने सबने इसकी दुर्लभता के गीत गाये हैं । उसका सबसे बडा कारण है कि इस जीवन में ही हम हमारे प्रत्येक जीवन का जो केन्द्र बिन्दु है यानि मोक्ष, उसकी प्राप्ति इस जीवन के अलावा शेष तीन नरक , देव और त्रिमंच, का शरीर प्राप्त कर, उस तक नहीं पहुॅच सकते जहॉ हमें वास्तव में पहुॅचना है ।

उस केन्द्र बिन्दु तक हमें क्यों पहुॅचना है ? उसमें ऐसा क्या है जिसके लिये हम इतने लालायित हैं । जिसके लिये हम निरन्तर प्रयत्न कर रहे हैं । नाना प्रकार के तप, जप ध्यान और शुभ प्रक्रियाएॅ कर रहे हैं । उसका हेतु केवल एक है संसार अगाध दुखों का समुद्र है । जहॉ दुख के अतिरिक्त सुख लवलेश मात्र भी नहीं । यदि है भी तो वह ऐसा कि मधुलिप्ति लिए तलवार । कोई चाटें तो उससे जीभ कटने का अपार दुख होगा, मधुलिप्त की मिठास का तो अनुभव अल्प से अल्प होगा और निस्सार होगा । इसलिये ज्ञानियों ने बताया कि विषमिश्रित सांसारिक सुख को प्राप्त करने के लिये अज्ञानता वश हम सारा जीवन खपा देते हैं परन्तु शाश्वत सुख की प्राप्ति के लिये जितना चाहिये वैसा प्रयास नहीं करते परिणाम स्वरूप संसार में भवभ्रमण बढ जाता है । जीव चौरासी लाख योनियों में भ्रमण कर नाना प्रकार के दुख पाता रहता है और जब ऐसे दुखमय जीवन से ऊब जाता है तब शांति की खोज में लगना चाहता है । सोच में परिवर्तन आता है । क्रिया में बदलाव आता है । करनी और कथनी दोनों में तालमेल होता है । रास्ता उसे मिल जाता है और फिर संसार की भटकान मिट जाती है ।

ठाणांग सूत्र में एक आख्यान आता है । चार मक्खियॉ हैं । एक तो उड़कर मिश्री की डली पर बैठ जाती है । दूसरी मलश्लेष्म पर बैठती हैं । तीसरी पाषाण पर बैठती है । चौथी मधु पर बैठती है । पहले वाली अपना आहार लेकर सुखपूर्वक उड जाती है । उसे कोई वेदना का सामना नहीं करना पडता । पुण्य कमाकर आती है, भोगती है और पुण्य बांधकर चली जाती है । संसार में उलझना उसे नहीं सुहाता । दूसरी वाली पुण्य के अभाव में मलश्लेष्म पर बैठकर गंदगी का सेवन करती है । इच्छा न होते हुए भी उलझती जाती है । छुटकारा पाने का प्रयास उसका विफल होता है । वह उसमें इतनी लिप्त हो जाती है कि उस गंदगी से छुटकारा नहीं करा पाती है और बहुधा प्राणों को त्याग देती है । ऐसे जीवों की बडी करूणा जनक स्थिति हो

जाती है । वे न तो पुण्य साथ लाते है और न ल जाते है । इस प्रकार दुर्गति का मुख उन्हे देखना पडता है । तीसरे प्रकार की मक्खी पाषाण पर बैठती ह । पाषाण कठोर व नीरस होता है। वहा काई स्वाद नहीं । कोई अन्नहार सेवन का आनद नही लेकिन अपना छुटकारा पाने मे और उड़ने मे उसे देर नहीं लगती । जल्दी ही मनचाहे स्थान पर उड कर जा सकती है । सो इस प्रकार के जीव कोई पुण्य का बध करते नहीं आते । लेकिन पुरानी जमा पूँजी से उन्हे सुगति प्राप्त करने हेतु मार्ग दर्शक मिल जाते है । जिससे व अपना भविष्य सुधार लत है । चौथी मक्खी की तरह क जीव पुण्यवशात् सुख सौभाग्य ता प्राप्त कर लते ह लकिन चासनी से जैसे-जैसे बाहर निकलने की कोशिश करने पर भी वह उसम चिपकती जाती है बाहर निकल पाना उसके लिये कठिन हा जाता है, इसी प्रकार यह जीवन पुण्यराशिवश ससार का भोग तो लेत है लेकिन भविष्य क लिय कुछ पुण्य राशि का सचय नहीं कर पाते । परिणामत उन्हे ससार म पडे रहना पडता है और दुख भोगते हुए जीवन बिताना पडता है । भव भ्रमण होता रहता है आर जन्म मरण का चक्कर चलता रहता है ।

इन चारो म कौन सी अच्छी है और कौनसी बुरी इसका निर्णय स्वविवक से आप स्वयम् कर लव । आपको अपना नया जीवन सफल बनान क लिय कौनसा मार्ग अपनाना है इसका निर्णय स्वय करे । ससार तो गतिशील है । ऊपर स बहुत सुहाना है, कि पाप फल जो ऊपर स बहुत सुन्दर दिखाई देता है लेकिन अन्दर हलाहल जहर होता है । एसा ही ससार है ।

पर्युषण पर्वाधिराज आ रह है । अपने मानव जीवन को सार्थक बनाने हेतु इससे सुन्दर आराधना क दिन और क्या होग । इसलिये अपन मानव जीवन का सार्थक बनाने हेतु हम जुट जाएँ, इसी म हमारा कल्याण है । आराधना हेतु जप, तप दर्शन, पूजन, वदन, अर्चना, सामायिक, पोषध आदि अनेका मार्ग है । देखना यह है कि हमारी रूचि किसमे है । बस इसका निर्णय कर बिना समय गवाये हम जुट पडेगे तो हमे अपने जीवन के केन्द्र बिन्दु मोक्ष पर पहुँचन मे समय नहीं लगेगा । अल्प ससारी बनकर हमारा अल्प समय मे ही कल्याण हो जायेगा । कि बहुना ✰

शक्ति है तो सेवा करना सीखो,<br>
भक्ति है तो भजन करना सीखो,<br>
तभी तुम्हारा कल्याण हो पायेगा<br>
युवाओ को धर्म मे लाना सीखो ॥

# जैन कौन एवं क्या करें

*—श्री राजमल सिंघी*

**जैन कौन**

परम उपकारी तीर्थकर भगवन्तो ने जैन धर्म अगीकार करने के दो प्रकार बताए है। एक सर्व विरति रूप साधु धर्म एव दूसरा देश विरति रूप श्रावक धर्म। साधु-धर्म अगीकार करने के लिए पॉच महाव्रत पालने की प्रतिज्ञा ली जाती है और श्रावक धर्म अगीकार करने के लिए श्रावक के बारह व्रत पालने की प्रतिज्ञा ली जाती है। जो व्यक्ति साधु-धर्म अगीकार करने मे असमर्थ हो वह श्रावक धर्म अंगाकार करे। जो व्यक्ति साधु-धर्म अथवा श्रावक धर्म अंगीकार नही करता वह जैन कहलाने की योग्यता नही रखता, वह जैन नही कहलाता। केवल मात्र जैन कुल मे ही जन्म लेने से व्यक्ति जैन नही हो जाता। अतः जो व्यक्ति जैन बनना चाहता है, चाहे वह जैन कुल मे जन्मा हो, चाहे अजैन कुल मे, उसको साधु अथवा श्रावक धर्म अपनाने की प्रतिज्ञा आवश्यक रूप से लेना अनिवार्य है वरना वह जैन नही है।

**किसको सुदेव मानें ?**

अरि का अर्थ है शत्रु एवं हत का अर्थ है नाश करने वाला। यहॉ आत्मा के शत्रुओ, जैसे राग द्वेष, क्रोध, मान, माया, लोभ, विषय, वासना इत्यादि को ही सही रूप से शत्रु माना गया है, और जो इन शत्रुओं का नाश करता है, वही अरिहत है, वही परम आत्मा है, परमात्मा है। केवल मात्र तीर्थकरो ने ही इन शत्रुओ का नाश किया है। अतः तीर्थकर ही सुदेव है। उनका ही आलबन लिया जाना चाहिए। अन्य किसी का नही।

**किसको सुगुरू माने ?**

पंचंदिय संवरणो सूत्र मे आचार्यो के गुणो की व्याख्या की गई है, जिनके 36 गुण बताए गए है उपाध्यायो के 25 गुण है एव साधुओ के 27 गुण हैं। जिस गुरू मे ये 36, 25 अथवा 27 गुण हों वही सुगुरू है। ऐसे सुगुरूओ का ही हमको आलम्बन करना चाहिए, अन्य कोई सुगुरू नही हैं।

**किसको सुधर्म मानें ?**

तीर्थकर भगवतो द्वारा प्रणीत, उपदेशित धर्म को ही सुधर्म मानना चाहिए, अन्य किसी धर्म को नही।

**श्रावक के 6 आवश्यक कर्म–**

(1) सामायिक- करेमि भंते सूत्र एवं सामायिक पालने के सूत्र के अनुसार सामयिक में समभाव की साधना की जानी चाहिए, अशुभ प्रवृत्तियों का त्याग किया जाना चाहिए। समभाव का अर्थ है मित्रता, बधुत्व, राग-द्वेष-रहितता, कषाय-रहितता, दस मन के, दस वचन के, बारह काया के दोषो से रहितता। सामायिक करने से पाप आने के साव'-योगो से निवृति प्राप्त होती है। यहॉ तक कहा गया है कि करोडों जन्मो तक तीव्र तप करने से भी जिन कर्मो का नाश नही होता, उन कर्मो को समभाव से युक्त आत्मा आधेक्षण मे ही खपा देती है। सच्चे मन, वचन, काया से की हुई सामायिक में इतनी ताकत है। अतः हमको सामायिक अधिक से अधिक बार करनी चाहिए ताकि अशुभ कर्मो का नाश हो। सामायिक करते समय श्रावक साधु जैसा होता है।

(2) चतुर्विंशति स्त्व (लोगस्स)

इस सूत्र मे चौदह राजलोक की सभी वस्तुओ को समझाने वाले, धर्म तीर्थ को स्थापित करने वाले, राग-द्वेष को जीतने वाले, केवल ज्ञान

द्वारा पूर्णता प्राप्त करने वाले, चौबीस तीर्थकरो का कीर्तन इस बुद्धि से किया जाता है कि हमको भी इनके गुणो की प्राप्ति हो । राग-द्वेष रूपी विकल्पो का त्यागकर समभाव से चौबीस तीर्थकरो की गुण स्तुति करने से दर्शन-विशुद्धि होती है, अर्थात सम्यक्त्व निर्मल होता हे ।

(3) वन्दना- सुगुरू वन्दन सूत्र द्वारा सुगुरू को सुख साता पूछते हुए, अविनय, आशातना की क्षमा मॉगते हुए सुगुरू को वदन करना चाहिए। सुगुरू को नम्रभाव से वदन करने से नीच गोत्र कर्म का क्षय होता है और उच्च गोत्र कर्म का बधन होता है एव सभी को आनन्द दायक वचन बोलने की लब्धि प्राप्त होती है ।

(4) प्रतिक्रमण- हमसे जो त्रुटियॉ हो जाती है पाप कर्म हो जाते हे, उनके लिए क्षमा याचना करने एव पश्चाताप करने की क्रिया को प्रतिक्रमण कहते हे । अतर मे उल्लास पूर्वक किया हुआ प्रतिक्रमण कर्म के कठिन बधनो को काट देता है । इरियावही सूत्र, अतिचार आलोअणा सूत्र सात लाख पृथ्वीकाय सूत्र अठारह पापस्थान सूत्र, वदित्तु सूत्र, आयरिय सूत्र उवज्झाय सूत्र, सब्बसविसूत्र इत्यादि द्वारा हमको अत करण से दुष्कर्मो एव त्रुटियो क लिए क्षमा याचना करनी चाहिए, एव भविष्य मे ऐसी त्रुटियॉ न हो इसके लिए पूर्ण सावधानी रखनी चाहिए ।

(5) कायोत्सर्ग (काउसग्ग)- कायोत्सर्ग का अर्थ है अपनी काया को भूलना । इस क्रिया मे अपनी काया से मन हटाकर अरिहत भगवान की ओर अपना मन मोडना चाहिए । हमको ध्यान मग्न होकर पूर्ण श्रद्धा एव स्थिरता से वदन पूजन सत्कार सम्मान, बोधि-लाभ एव मोक्ष की भावनाओ से कायोत्सर्ग करना चाहिए जैसा कि अरिहत चेइआइ सूत्र मे कहा गया है । तस्स उत्तरी करणेण सूत्र के अनुसार पाप कार्यो के सम्पूर्ण उच्छेद प्रायश्चित निन्दा, आलोचना विशेष चित्त-शुद्धि के लिए, चित्त को काटे रहित करने के लिए कायोत्सर्ग किया जाना चाहिए । नाणम्मि सूत्र का ध्यान करने के लिए तप चितन इत्यादि के लिए भी कायोत्सर्ग किया जाता है । कायोत्सर्ग करने से भूत एव वर्तमान मे लगे हुए अतिचारो का प्रायश्चित्त होता है, हृदय मे शुभ भावनाए आती है एव आत्मा धर्म ध्यान, शुक्ल ध्यान मे लीन होती हे ।

(6) प्रत्याख्यान (पच्चक्खाण)- बिना नियम का जीवन, बिना लगाम के घोडे के समान होता है जो सवार को मृत्यु तक दिला सकता है । अत हमको व्रत, नियमो का आलबन करके विरतिमय जीवन जीना चाहिए । इनमे श्रावक के चौदह नियमा का पालन, 6 प्रकार के बाह्य एव 6 के प्रकार के आभ्यतर तप करना । 22 अभक्ष्य एव 32 अनन्तकाम वस्तुओ का त्याग, रात्रि भोजन का त्याग, चार महाविगइयो का सर्वथा त्याग एव 6 विगइयो का समय समय पर त्याग इत्यादि के पच्चक्खाण लेकर अपनी आत्मा पर चिपके हुए कर्मो को खपाना चाहिए। प्रत्याख्यान करने से जीव कर्म आने के दरवाजे रूप जो आश्रव हे उनका निरोध करता है और ममत्व भाव का भी त्याग होता है ।

### सूत्रो के अर्थ सीखना

आरभ मे तो हमको प्रतिक्रमण के सूत्रो को कठस्थ ही करना चाहिए किन्तु ज्यो ज्यो हम उम्र मे बढने लग त्यो त्यो हमको आवश्यक रूप से सूत्रा का अर्थ सीखना चाहिए । तभी तो हमको ज्ञात हो सकेगा कि हम उपरोक्त वर्णित षडकर्म क्यो कर रहे है, हमको ये षडकर्म किस प्रकार करने चाहिए, एव सम्यग रूप से ये कर्म करने से हमको क्या सुफल प्राप्त होगा, हमारे भाव बनेगे, हमे सत्कर्म करने की प्रेरणा मिलेगी, हम पाप-कर्मो से बचेगे । अर्थ जाने बिना हमारी आराधना अपूर्ण रहती है और फलवती नहीं होती, और हम केवल मात्र तोता-रटन ही करते रहते है ।

### पूजा-सेवा-भक्ति

पूजा-सेवा-भक्ति दो प्रकार की होती है-

एक द्रव्य पूजा एव दूसरी भाव पूजा। द्रव्य पूजा करते समय हमको पूर्ण ध्यान रखना चाहिए कि कही हम पृथ्वीकाय, अपकाय, तेउकाय, वाउकाय, वनस्पतिकाय, त्रसकाय के जीवो का हनन तो नही कर रहे हैं। सेवा-पूजा-भक्ति, जाप करते समय हमको ऐसा तन्मय हो जाना चाहिए कि हम अपने आप को भूल जाएं, और केवल मात्र भगवान का ध्यान ही रहे। भगवान को वे ही फूल अर्पित किए जाने चाहिए जो पेड से अपने आप गिरें, शुद्ध हाथो से उठाए जाए, उनकी पखुडिये तोडी नही जाए, उनकी माला बनाने के लिए सुई का उपयोग नही किया जावे, वरना हम वनस्पति काय के जीवन के हनन का पाप उपार्जित करेंगे। भगवान के समक्ष रखे जाने वाले चावल, नैवेद्य, फूल इत्यादि देव द्रव्य होते है जिनका उपयोग करने वाला पाप उपार्जन करता है। वंदित्तु सूत्र की 20 वी गाथा मे स्पष्ट उल्लेख है कि शराब, मॉस, पुष्प, फल, केसर कस्तूरी आदि सुगधित वस्तु के उपयोग के लिए मै क्षमायाचना करता हूँ। शराब, मॉस तो खैर उपयोग मे नही लिया जाता किन्तु इनके साथ ही वर्णित अन्य वस्तुओं के उपयोग की निंदा की जाती है तो फिर इन वस्तुओं का उपयोग क्यो किया जाता है इस विषय मे सोचना पडेगा।

सही मायने मे तो भगवान की आज्ञा मानना ही उनकी परम सेवा (पूजा) है। आज्ञा मानना ही सच्चा धर्म है। एक चितक ने तो यहॉ तक कह दिया कि- साचा छे वीतराग, अने साची छे तेनी वाणी, आधार छे प्रभु आज्ञा नो, बाकी सब धूल वाणी। एक परम उपकारी आचार्य भगवंत ने सही फरमाया है कि सब बातों मे विवेक की अत्यन्त आवश्यकता है।

**स्वामिवात्सल्य**—स्वामिवात्सल्य प्रकट करने का उत्तम तरीका यह है कि हम जैन बंधुओं में से जो दीन-दुखी हो, उनकी दीनता एवं उनके दुख को दूर करें, जिनके पास भरण-पोषण के साधन नही है, उन्हें वे साधन उपलब्ध करावें, जिनके पास बच्चों को पढाने के लिए धन नही है, उनको धन उपलब्ध करावे, जो बेरोजगार है उन्हें रोजगार उपलब्ध करावें इत्यादि। केवल मात्र सामूहिक रूप से भोजन कराने, चाहे उनको भोजन की आवश्यकता हो या न हो, को ही स्वामिवात्सल्य नही माना जावे।

**प्रभावना**—इस शब्द का अर्थ है धर्म की प्रभावना-ऐसे कार्य करना जिनसे धर्म का प्रभाव लोगों पर पडे। प्रभावना विशिष्ट रूप से आचार्य, उपाध्याय, साधु-मुनिराज धर्म उपदेश एव धर्मकथा के द्वारा करते है। श्रावक द्वारा यह प्रभावना सात क्षेत्रो में धन व्यय करके एव अनुकम्पा दान देने से होती है, दीन-दुखियों का उद्धार करने से होती है, धर्म आराधना करके, बारहव्रत पालन करके, बाह्य एव आभ्यंतर तप करके, रात्रि भोजन एवं अभक्ष्य वस्तुओं का त्याग करके भी की जाती है। पूजा अथवा व्याख्यान मे आए हुए व्यक्तियो को कुछ देना मात्र ही प्रभावना नही समझनी चाहिए।

**चैत्यवंदन, स्तवन, स्तुति**

इनमे और प्रार्थना मे जो भेद है वह हमको समझना पडेगा। प्रार्थना का अर्थ है निवेदन जिसके द्वारा कुछ माँग की जाती है एवं स्तवन इत्यादि में भगवान के गुणो का गान किया जाता है। कहा भी है कि उत्तम गुण गावतां, गुण आवे निज अंग। हमको भगवान से कुछ मॉगना नही है। उनको कोई राग-द्वेष नही है। अतः वे कुछ देते नही, तो फिर हम उनसे कुछ मांगे क्यो। हमको तो उनके गुणों की प्राप्ति करनी है। अतः स्तवन इत्यादि में उनके गुणों को ही गाना है, अथवा सिद्ध क्षेत्रो की स्तुति करनी है।

उपरोक्त विवेचन में यदि कोई बात आगम विरुद्ध हो तो मै क्षमा प्रार्थी हूँ। आचार्य भगवतों एवं विद्वजनो से करबद्ध निवेदन है कि इस विषय में बोधि लाभ दे। एक बात मै स्पष्ट करना चाहता हूँ कि मुझे जिनवाणी, जिनआज्ञा पर पूर्ण श्रद्धा है, किन्तु धर्म आराधना एवं क्रियाओं में विकृतियॉ तो न हों। ☆

# नमस्कार महामंत्र के चमत्कार

*—श्री रतन चन्द कोचर, बीकानेर*

''अरिहन्त अरिहन्त समरंता लाधे मुक्ति नुं धाम।
जो नर अरिहन्त संमरशे, तेहना सरसे काम।

प्राचीन काल से ही चमत्कार को नमस्कार किया जाता रहा है। जैन धर्म का सबसे प्राचीन एवं चमत्कारिक महामन्त्र नवकार है। तीनों लोक के विवेकी, सुर, असुर विद्याधर तथा मनुष्य सोते, जागते, बैठते, उठते या चलते फिरते श्री नवकार मंत्र को याद करते हैं।

नवकार मंत्र के बारे में लिखा है कि

''सूंता बेशता उठतो जे समरे अरिहंत।
दुःखीयानो दुःखमांगशे, लेशे सुख अरिहंत।

नमस्कार मंत्र के बारे में कहा है कि सूर्य की किरणों की सर्व शक्ति श्री नवकार के अक्षरों में है, सूर्य की किरणें वर्ण द्वारा जो असर करती है उससे अधिक और तीव्र असर नमस्कार महामन्त्र ध्वनि द्वारा करता है।

नमस्कार महामन्त्र की साधना के लिए विशेष ध्यान देने योग्य बातें:-

(1) मंत्र की साधना से पूर्व शारीरिक रूप से स्वस्थ यानि स्नान करके शुद्ध वस्त्र धोती, दुपट्टा आदि पहनकर जाप करना चाहिये।

(2) प्रातः काल ब्रह्म मुहूर्त में नमस्कार मंत्र का जाप करना चाहिये।

(3) नमस्कार मंत्र जाप करते समय पूर्व दिशा में मुँह एवं पद्मासन या सुखासन लगाकर जाप करना चाहिये। जाप करते समय योग मुद्रा रखनी चाहिये।

(4) नासिका के अग्रभाग पर, नमस्कार मंत्र के कमल चित्र पर या श्री पार्श्व नाथ भगवान की प्रतिमा पर ध्यान रखना चाहिये।

(5) नमस्कार मंत्र के जाप के समय लकडी के मणियों या चन्दन के मणियों की या सफेद वर्ण की माला काम में ली जा सकती है।

(6) नमस्कार मंत्र के जाप के लिए तल भव या एकान्त स्वच्छ कमरे में जाप करना चाहिये।

(7) एक लाख नवकार मंत्र का पूरा जाप करने पर मनोकामना इस भव एवं पर भव की पूरी होती है।

(8) नवकार मंत्र का उच्चारण शुद्ध व धीरे धीरे करना चाहिये।

(9) परमात्मा के मंदिर में भी जाप किया जा सकता है।

(10) नवकार मंत्र के जाप से पूर्व सन्तों से इसके जाप करने की विधि प्राप्त करनी चाहिये।

(11) मंत्र का जाप घरेलू कार्य सिद्धि, धन, दौलत या शारीरिक रूग्णता दूर करने के लिए नहीं कर वरन् आत्मा के कल्याण के लिए मोक्ष पद की प्रगति के लिए किया जाय। सांसारिक सुखों की प्राप्ति स्वतः ही हो जावेगी।

(12) मत्र का सामूहिक जाप भी किया जा सकता हे इससे सघ मे 'शान्ति प्राप्त होती है।

(13) हर शुभ कार्य से पूर्व इस मत्र का जाप करे।

(14) घर से बाहर अच्छे कार्य के लिए जाने से पूर्व बारह नवकार का जाप करे।

(15) तीनो सध्या मे 'शिव मस्तु सर्व जगत् की भावना से बाहर-बारह नवकार स्थिर चित से गिनना चाहिये।

(16) बीस दिन तक तन, मन, वचन काया से ब्रह्मचर्य का पालन करके नमस्कार मत्र का जाप करे।

(17) गाय का शुद्ध घी का दीपक एव सुगधी अखण्ड धूप जाप से पृर्व करना चाहिये।

(18) नवकार महामत्र की महिमा को दर्शाने वाले सुन्दर कलामय उत्तम चित्र जाप गृह के चारो तरफ रखना चाहिये।

**नमस्कार मत्र की साधना के चमत्कार**

(1) सुदर्शन सेठ ने सूली पर चढकर इस नमस्कार मत्र का जाप किया। सूली का सिहासन बन गया।

(2) श्रीपाल महाराजा ने कोढ रोग से पीडित होने से मुक्ति के लिए महामत्र का जाप किया। कोढ रोग से मुक्त होकर शरीर कचन की तरह हो गया।

(3) यदि किसी व्यक्ति को चिन्ता है, नीद नही आती है, अगर वह नमस्कार मत्र का सोते सोते भी स्मरण करता रहे तो उसे नींद आ जायेगी। चिन्ता मुक्त हो जावेगा।

(4) नमस्कार मत्र की साधना से बल बढने से जगत् साधक के अनुकूल बर्ताव करता है।

(5) नमस्कार मत्र की साधना साधक को परमेष्ठी बनाती है, सर्वश्रेष्ठ बनाती हे।

(6) जिस प्रकार पनिहारिन रास्ते मे हिलती, चलती, डोलती तथा अन्य सखियो से बात करती हुई भी सिर पर रखी मटकी को नहीं भूलती, उसी तरह विवेकी पुरूष को भी परमात्मा के स्मरण मे नमस्कार मत्र के स्मरण मे अपने उपयोग को निरन्तर जागृत रखना चाहिये।

(7) नमस्कार मत्र का स्मरण करने से बिना किसी प्रकार के शारीरिक कष्ट के भव जल से पार हो जाते है। अजरामर पद की प्राप्ति हस्तामल कवत् हो जाती है।

**अन्त मे**

' निश दिन सूता जागता हियडाथी न रहे दूर रे जब उपकार समारीये तब उपजे आनन्द पूरे रे।'' ☆

जन्म से क्या महत्ता है
आयुष्य लगी ही अस्ति है ।
गुणो से तुम अमर बनना
फिर यह देह पस्ति है ॥

# किसकी भक्ति करें ?

—श्री आशीष जैन

अनंत भव भ्रमण के उपरान्त हमें दुर्लभ मानव भव मिला है। मानव जीवन इस कारण दुर्लभ है कि इस जीवन का श्रेष्ठ उपयोग हम आत्मिक उद्योत में सरलता से कर सकते है। ज्ञान, तप, संयम की आराधना से कर्मो का अंशतः क्षय करते हुए आत्मा में संचित शक्तियों की प्रतित कर परम पद के समीप पहुँचने का यह अनमोल अवसर है। बुद्धिमान वही है जो इस का सदुपयोग करते हुए परमात्मा को समर्पित होकर इस अवसर को अविस्मरणीय बना देता है।

जगत् के प्राणी मात्र पर अरिहन्त सिद्ध परमात्मा का असीम उपकार है। एक आत्मा जब सिद्ध पद प्राप्त करती है तभी निगोद से एक आत्मा मुक्त होकर उतरोत्तर विकास करते हुए नर जन्म प्राप्त करती है। यदि वीतराग देव ने मोक्ष प्राप्त कर हमें निकाला नहीं होता तो हम अभी तक अनंत जन्म मरण करते हुए निगोद में ही रूलते रहते जहां सातवीं नरक से भी अधिक दुःख है।

ऐसे अनन्य अद्वितीय उपकारी परमात्मा को भौतिक चकाचौध में मदमस्त विषय वासित जीव भुला बैठे है। सांसरिक सुखोपभोग को लालायित मन वीतराग देव को विस्मृत कर तथाकथित चमत्कारियों को मनाने में जीवन को सार्थक समझ रहा है। भगवान कुछ भी देने वाले नहीं, भगवान ने हमें क्या दिया है ? लक्ष्मी के लालची, भोग के भिखारी इस प्रकार दूषित वचन बोलकर प्रगाढ कर्मो का बन्ध करते हैं। उपकारी के प्रति यह कृतध्नता की पराकाष्ठा है।

चमत्कार धार्मिक आस्था में विकृति का सफेद नाम है। लोक प्रसिद्धि एवं अपनी स्वार्थपूर्ति हेतु स्वयं चमत्कारी या उनके भक्त वर्ग द्वारा धूर्तता पूर्वक बिछाया गया प्रपंच जाल है। कर्महीन व्यक्ति जो पुण्य करना नहीं चाहते किन्तु शुभ की तीव्र आकांक्षा रखते है। चमत्कारी के धोखे में आकर जिनेश्वर भक्ति को गौण कर देते है। परमात्मा की भक्ति करते-करते हमारी आवश्यकताओं की सहज पूर्ति तो होती है किन्तु इच्छाओं की तृप्ति नहीं। इच्छाएँ तो आकाश की भॉति अंतहीन है।

परिग्रह दुःख का बडा कारण है। आज चारों ओर हाय धन हाय धन के रोगियों के मुख पर निराशा ही निराशा झलक रही है। लालच जीभ निकाल खडा है तो लोभ मुँह फाडे बैठा है। पहले जमाने में तो अपंग, अपाहिज, निर्धन भी प्रसन्न दिखाई देते थे किन्तु आज सर्व साधन सम्पन्न व्यक्ति भी दुःखी और अतृप्त है। इसी अज्ञानजन्य मनो दशा का लाभ उठाकर कल्पित जादूगरी किस्से कथाओं के बल पर चमत्कारी एवं इनके वाक्पटु समर्थक सीधे सरल मनुष्य को सुख के झूठे सब्ज बाग दिखाकर विश्वास न करने पर

भयमीत कर परमात्म भक्ति से विमुख कर देते हे। ऐसे परमात्म द्रोही अपना अनत ससार बढाकर दरिद्रा देवी की कृपा भी भवान्तर के लिए प्राप्त कर लेते है।

आत्मिक विकास लक्षी परमात्मा भक्त मे अधिकाश मानवोचित गुण सहजतया विद्यमान होते है। इसके विपरीत चमत्कारियो के समक्ष अपने इच्छाजनित दु खो का रूदन करते-करते व्यक्ति बेहद स्वार्थी हो जाता है क्याकि निजहित के अतिरिक्त उसका अन्य कोई चितन या ध्येय नहीं रह जाता। स्वार्थ ओर दुर्गुणो का चोली दामन का साथ है। स्वार्थी म जितने अधिक दुर्गुण विकसित होगे उतने ही प्रपच से वह अपने स्वार्थो की पूर्ति मे तन्मय बनेगा। छलकपट, पर प्रपच प्रवीण ऐसे लोग मतलब परस्त अहसान फरामोश, लोक-लज्जाहीन शकालु अविवेकी शीघ्र आक्रोशी होकर भय त्रसित रहते हे। पुनीत समता सरलता नम्रता सहृदयता एव परोपकारी वृति उनम प्राय समाप्त हो जाने के कारण समाज मे निन्दा एव अपयश के पात्र बनते हे। इनकी मनोवृत्ति इतनी लोभी हो जाती है कि स्वय हतु मागकर रूकती नहीं अपितु दूसरे को न मिले ऐसी आन्तरिक इर्षा व दुर्भावना रहती है।

येन-केन प्रकारेण कामनाओ की पूति हेतु ऐसे व्यक्ति सदैव व्याकुल एव व्यथित रहते हे। धन के प्रति मूर्च्छा एव भोगासक्ति हर दिन बढती जाती है। छोटे-छोटे कार्य मे पहले चमत्कारी को माथा टेककर मनौती मानने से इनका आत्मविश्वास जाता रहता है अथवा तो अधभक्ति के कारण यह दु साहसी हो जाते है। बिना समझे विचारे चमत्कारी के विश्वास के बल पर ऐसा कार्य सोदा या अपराध कर बेठते है कि सिर पीटने के अतिरिक्त कोई चारा नही रहता। विडम्बना यह है कि कार्य बिगडने पर सारा दोष भगवान को देते है और यदि पूर्वकृत पुण्योदय से सफल रहे ता चमत्कारी का झडा उठाकर कूदते फिरत ह।

चमत्कारियो की भक्ति का सर्वाधिक कष्टदायी एव भयकर परिणाम हे धर्म का भ्रम उत्पन्न होना। 'पाच रूपए चढाओगे पच्चीस पाओगे' ऐसे हास्यास्पद मिथ्या प्रलोभनो से भ्रमित अज्ञ मानव चमत्कारियो की भक्ति को ही धर्म समझने की भारी भूल कर बैठता हे। स्मरण रहे है कि सासारिक कामना से की गई भक्ति एव चमत्कारियो की भक्ति कोई धर्म क्रिया नही वरन् ससार वृद्धि अर्थात दु ख वुद्धि का अचूक उपाय है। किश्ती यदि भवर को ही किनारा समझ ले तो उसका डूबना तय है उसी प्रकार धर्म क्रिया न करने की उपेक्षा धर्म का भ्रम कई गुणा घातक है।

सच्चा धर्म वही है जो आत्मा को दुर्गति मे पडने से रोके एव सद्गति तथा सिद्धगति म पहुँचाए। धर्म की आराधना यदि शुद्धभाव से शुद्धरूप एव दोष रहित से की जाए तो अचित्य फलप्रद होती है। अत पत्थर की नाव मे सवारी छोडकर परमात्मा वीतराग देव की शरणागति स्वीकार करो।

चराचर जगत् मे जो भी प्राप्तव्य है जिनभक्ति से स्वयमेव प्राप्त होता है। निष्काम, निर्मल, भक्ति पूरित मन तो मात्र भगवान को चाहता है भगवान से कुछ नहीं चाहता। 'सासारिक फल मागता, भटक्यो बहु ससार' सदा मागते ही रहने की प्रवृति से याचक कुल मे जन्म होता है।

प्रत्येक जीव पर परमात्मा की कृपा तो मूसलाधार बरस रही है परन्तु हमारा घड़ा ही उल्टा (श्रद्धा ही विकृत) है तो कैसे भर पाएगा ?

जिनेश्वर देव की आराधना निजात्म तत्त्व की ही आराधना है । परमात्मा का समोसरण, अतिशय आदि अपूर्व ऋद्धि अन्य किसी को स्वप्न में भी प्राप्त नहीं है । सौधर्म इन्द्रादि एक करोड देवता अरिहन्त परमात्मा की सेवा में सदैव स्वेच्छा से सदैव तत्पर रहते है । इससे अलग एक दो देव भी जिन्होंने साधना एवं तपस्या से आंशिक प्रसन्न किए है, जिनका चमत्कार नगण्य ही है ऐसे चमत्कारियों की दीवानगी में हम समर्थ ऋद्धिवन्त परमात्मा को उपेक्षित (अपमानित) कर उनकी दोयम दर्जे की भक्ति करें और झूठे चमत्कारियों को प्राथमिकता दे तो हमसे अधिक मूर्ख कौन होगा ? कोहिनूर हीरे जैसा अनमोल यह छोटा सा जीवन चमत्कारियों की भेंट चढ गया तो परमात्मा की भक्ति कब करोगे ?

चमत्कारियों की भक्ति से कदाचित लाभ होगा तो वह तनिक एवं क्षणिक होगा, नश्वर होगा, भौतिक होगा । इतना लाभ भी तभी होगा जब श्रद्वालु का कोई अशुभ कर्म उस लाभ में विघ्न न करे । अशुभ कर्म का उदय होगा तो चमत्कारी तमाम प्रयत्नों के उपरान्त भी चमत्कार दिखाने में लाचार होगा । वीतराग प्रभु के प्रति दृढ़ श्रद्धा से आत्मिक उन्नति होगी, अशुभ कर्मदल का स्वतः विनाश होगा ।

परमात्मा की भक्ति लौकिक एवं लोकोत्तर दोनों ही सुख देने वाली है किन्तु हमें मात्र लोकोत्तर सुख का ही ध्येय रखना है । परमात्मा से हमें नियमित यही याचना करनी चाहिए । प्रस्तुत पंजाबी भक्ति गीत के अंश में याचक की भावना को बहुत सुन्दर रूप से व्यक्त किया है :-

एनी तुं शक्ति मैनूं दंई परमात्मा, जेडा वेला आवे ओनू हस्स के गुजारां तेनूं ना विसारां सारे जग नूं विसारां, तन मन धन सारा तेरे उत्तों वारां

है परमात्मन । मुझे इतनी शक्ति प्रदान करें कि मुझ पर जैसा भी समय आए मैं हंसी खुशी व्यतीत कर संकू । सारे संसार को भूंलू परन्तु आपको न भूल जाऊं । अपना तन मन धन सर्वस्व आप पर निछावर कर संकू ।

जिनाज्ञा विरुद्ध कुछ लिखने में आया हो तो त्रिविध-विविध मिच्छामि दुक्कड़म । ☆

राग आसक्ति रूप है उसको तोड़ो

द्वेष अप्रितिरूप है उसको छोड़ो

मोह अज्ञानरूप है उसको जीतो ॥

# माणिभद्र साँचो सदा

—श्री गुणवन्त मल साड

आज के इस भौतिकतावादी युग मे, जब इसान के पास अपने लिए ही समय नही है, तो वह भगवान के लिए समय कहॉ से निकाले। लेकिन मजबूरी मे जब कभी वो अटक जाता है, एक साथ कई परेशानियॉ उसे घेर लेती है, तब वह भगवान की शरण मे जाता है। किसी महात्मा ने ठीक ही कहा है-

*''दुख मे सुमिरन सब करे, सुख मे करे न कोय।*
*जो सुख मे सुमिरन करे तो दुख काहे को होय।''*

मुझसे जब कुछ लोग इस बारे मे सलाह लेने आते है तो मै उनको केवल एक ही बात कहता हूँ कि पभु को स्मरण करो, वही सब ठीक करेगा, हालाकि प्रभु तो वीतरागी है उसको किसी के सुख-दुख से क्या लेना। लेकिन क्षेत्रपाल या अधिष्ठायक देव मदद करते है या कर सकते है ऐसा मेरा मानना है।

इसी सदर्भ मे जब मै आजकल गुरूवार शाम को अधिष्ठायक देव ''शिरोमणि माणिभद्र वीर'' की आरती के समय मदिर जी का दृश्य देखता हूँ तो स्वत ही सारी बात मेरी समझ मे आ जाती है।

वैसे तो माणिभद्र वीर'' की कृपा सभी पर है परन्तु मेरे पिता ''स्व श्री जसवन्त मल जी सॉड'' ने जितने लोगो को दर्शन के लिए प्रेरित करके नित्य प्रति मदिर जी मे आने की सलाह दी उनमे जैन-अजैन सभी तरह के लोग है।

मुझे याद है कुछ वर्षो पहले जब मदिर जी से यात्राओ के लिए बसे जाती थी तो लोगो मे बडा उत्साह रहता था। एक बार किसी वजह से बसे नहीं जा पाई, तो मदिर जी के ही कुछ आगेवानो ने कार से पजाब, कश्मीर इत्यादि जगह पर जाने का कार्यक्रम बनाया। कुल 4-5 कारे गई थी। उनम लूणावत परिवार के साथ मेरी माता जी भी गई थी। कश्मीर से जब वे लोग वापस आ रहे थे तो माता ''वैष्णव देवी'' के दर्शन का भी कुछ लोगो ने प्रस्ताव रखा। मेरी माताजी ने कहा हम लोग जैन है, किसी की निदा नहीं करते। लेकिन साथ ही किसी अजैन देवी-देवता का चमत्कार देखकर उसे नमस्कार भी नहीं करते।'' कुछ लोगो ने दर्शन किये, लेकिन हमारी माताजी नहीं जा पाई। शाम के समय लोटते हुए बरसात हो रही थी। अचानक कार बद हो गई। करीब 1 घटे की मशक्कत के बाद भी गाडी स्टार्ट नहीं हो पाई। थक-हारकर ड्राइवर बैठ गया। आते-जाते वाहनो को रोकने की कोशिश की, लेकिन कोई भी नहीं रुका। धीरे-धीरे अधेरा गहराने लगा। कार मे बैठे सभी लोग भगवान को याद करने लगे। माता जी हमेशा की तरह ' माणिभद्र बाबा'' को याद करने लगी। 10-15 मिनट बाद अचानक सभी लोगो ने पहाडी से एक वृद्ध बाबा धवल दाढी, हाथ मे त्रिशूल वगैरह लिए को उतरते देखा, जब बाबा कार के पास आये और सभी को परेशान पाया तो पूछ बैठे ''क्या बात है ? इस समय आप लोग यहॉ क्यो रुके है ?'' ड्राइवर झुझलाया हुआ था। उनको उल्टा-सीधा बोलने

लगा । स्व. सरदार मल सा. लूणावत ने उसको शांत किया । हमारी माताजी ने बाबा जी से कहा ''बाबा सा हमारी कार बंद हो गई है । साथ वाली कारों वाले आगे पहुँचकर, हमारे बारे में परेशान हो रहे होंगे ।'' इतना सुनते ही बाबाजी बोले ''बच्चा गाडी का बोनट खोलो ।'' जैसे ही बोनट खोला, उन्होंने इंजिन पर त्रिशूल से ठकठकाया और ड्राइवर से बोले ''बच्चा गाडी स्टार्ट कर ।'' ड्राइवर ने जैसे ही चाबी घुमाई, गाडी स्टार्ट हो गई। सब लोग चकित थे । माताजी ने सोचा बाबाजी की मदद के लिए कुछ रूपये पर्स से निकालूं, लेकिन अगले ही पल बाबाजी अन्तर्ध्यान थे । उस वक्त कार में मौजूद सभी व्यक्ति इस घटना के साक्षी हैं ।

कुछ समय पहले मेरे साथ घटित घटना तो उन अनेक घटनाओं मे से है जो मेरे साथ हुई । इस घटना में भी माणिभद्र बाबा की मुझ पर और मेरे परिवार पर असीम कृपा रही । एक दिवसीय यात्रा, जो मण्डल परिवार प्रतिवर्ष पर्वाधिराज पर्युषण पर्व के समापन पर आयोजित करता है मैं भी उसमें शामिल था । बस, जो तीव्र गति से चल रही थी अचानक कनोडिया कालेज सर्किल पर घूमी । मैं उस समय बस के फाटक के पास पानी पीने गया हुआ था । दुर्भाग्यवश फाटक खुल पडा और मैं पल भर में सडक पर था । मेरा सिर पटरी से जा टकराया और तुरंत लहू बहने लगा । प्रभु की असीम कृपा से एक जज साहब बस के पीछे ही अपनी कार में टोंक जा रहे थे । उन्होंने तुरन्त मुझे उठाया और अस्पताल ले गये । चोट गहरी होने तथा लहू अधिक बहने से डाक्टरों को बहुत कम उम्मीद थी । हमारे फैमिली डाक्टर भी वहॉ मौजूद थे उनके मुख से निकला—अब गुणवन्त जी के बचने की उम्मीद नहीं है । वहॉ मेरे परिवारजन तथा अन्य परिचित मौजूद थे। श्री मोतीचन्द जी बैद भी वहॉ थे, उन्हें गुस्सा आया । तुरन्त बोले ''डॉ. साहब, हमारे माणिभद्र बाबा की कृपा ऐसी है कि सॉड साहब 7-8 दिन में ही ठीक होकर घर आ जायेंगे और ऐसा ही हुआ । 8 दिन के भीतर ही मुझे अस्पताल से छुट्टी मिल गई । डॉ. साहब अचम्भित थे । आज वह भी ''माणिभद्र बाबा'' के परम भक्त हैं ।

मेरे पिताजी से प्राप्त माणिभद्र बाबा पर लिखी हुई एक पुस्तक मेरे पास हैं । इस पुस्तक में कुछ ऐसे अचूक मंत्र हैं कि कभी-कभी हैरानी होती हैं । एक मंत्र मै यहॉ पर उल्लिखित करना चाहूँगा । सुबह नवकारसी के समय दातुन करने से पहले यह मंत्र 32 बार बोला जाए, उसके बाद बाई दाढ से दातुन शुरू किया जाए तो निश्चित रूप से आपका दिन बहुत अच्छा जाएगा । यह मंत्र मेरे बहुत से जानने वाले अपना रहे हैं । मंत्र इस प्रकार हैं-

''ॐ नमोः माणिभद्राय ह्री श्रीं कीणी कीणी स्वाहा ।''

उपरोक्त पुस्तक, आगलोड से बहुत समय पहले प्रकाशित हुई थी । इसमें माणिभद्र बाबा के प्रकट होने तक के होम आदि हैं ।

मेरी सभी लोगों से यह विनती है कि वीतराग प्रभु की भक्ति के साथ-साथ यदि भैरव जी, भोमिया जी तथा अधिष्ठायक जी की भी भक्ति की जाए तो निश्चित रूप से जीवन में शांति आयेगी, कल्याण होगा । वैसे भी आज माणिभद्र बाबा को 52वां इन्द्र का दर्जा प्राप्त है ।

☆

# सुख की दौड में

—श्री राजेन्द्र कुमार लुनावत

जीवन मे सुख की आकाक्षा हर प्राणी रखता है । दु ख से हर प्राणी घबराता है, दूर भागता है व्यथित होता है । सुख एव दु ख का जोडा है । एक के विनाश से दूसरे का प्रादुर्भाव होता है । सुख व दुख मन की अनुभूति का भाव है कोई उपलब्धी का पदार्थ अथवा स्वरूप नहीं ।

सुख दो प्रकार के होते है- भौतिक अथवा आत्मिक । ससार के पदार्थो के भोग से प्राप्त सात्वना भौतिक सुख का स्वरूप है । धन, यौवन, शक्ति, मान, सम्मान ससारी सुख का वैभव भौतिक सुख क निमित्त मात्र है । इनसे प्राप्त सुखानुभूति क्षणिक, नैश्वर्य होती है । नैश्वर्यजन्य सुख के निमित्त कभी भी अबाध सुख देने म सक्षम नहीं होते । पुन पुन ऐसी सुखाकाक्षा घटती बढती बलवती होती है । परिणामत मानव जैसा बुद्धिशाली प्राणी इन सुखो को पाने की दौड म निरन्तर दौड रहा है एव इनकी चाह मे लिप्त होकर जीवन पर्यन्त घाणी के बैल की तरह पिल रहा है किन्तु आवश्यकताओ का घोडा थकता नहीं । आवश्यकता आविष्कार की जननी होती है । एक के बाद दूसरी उत्तरोत्तर आकाक्षा मानव को कृत अकृत का भाव भुलाकर छल, प्रपच लोभ, लालच हिसा, दभ, मिथ्यात्व एव राग-द्वेष आदि, गीतार्थ गुरूओ की भाषा मे 18 प्रकार के पापो के सेवन को बाध्य एव प्रवृत करती है ।

यह सब मन की धुरी पर होता है-मानव चितनशील सज्ञि पचेन्द्री प्राणी है- भावनाओ के वेग मे उसका मन कभी करुणा मैत्री के विचार करता है तो कभी काम क्रोध व आर्तध्यान रोद्रध्यान के दुष्विचारो से कुठित बनता है । विचारो की यह श्रृखला व परम्परा निरन्तर चलती रहती है । यहाँ तक कि निद्रा की अवस्था मे भी विचारा की लेश्या चालू रहती है । मानव भव को इसीलिए अमूल्य कहा गया है क्योकि उसके पास मन की विशिष्ट शक्ति है । मन दो प्रकार के होते है- भाव मन एव द्रव्य मन । सघनी पचेन्द्रीय मे द्रव्य मन होता है । शेष एकेन्द्री से चवरेन्द्रीय प्राणियो मे भाव मन होता है । भाव मन मात्र सवेदनशील होता है ।

मन के विचार परमाणु की शक्ति है । ये मनोवर्गणा के पुद्गल द्रव्य है। मन के शुभ व अशुभ-विचार उत्थान व पतन के निमित्त बनते है। भौतिक सुख की चाह मानव को स्वार्थी बनाती है। मन निर्जीव है । चाह सज्ञा है- मन को सस्कारी करने वाली प्रज्ञा है । प्रज्ञा मन को आत्मा से साक्षात्कार कराने मे सहयोगी बनती है- दुष्विचारो पर सद्विचार एव सदाचार को प्रेरित करती है । सवेदनशील मन अपनी भाव अभिव्यक्ति नहीं कर सकता जबकि मानव का द्रव्य मन अभिव्यक्ति कर सकता है बुद्धि विकास व बुद्धिबल से आकाक्षा व मनोवग को नियत्रित, सयमित कर सकता है ।

दूसरा आत्मिक सुख जो शाश्वत सुख को प्रवृत करता है। इस सुख का भोक्ता आत्मा होती है। अतः हमें आत्मोन्मुख बनना होगा। मन व आत्मा के भेद को समझना होगा। जीव मात्र का जन्म-मरण, देह धारण करने व देह त्याग करने का स्वरूप है- शरीर नैश्वर्य है। आत्मा सुख भोक्ता है- आत्मा कभी मरती नहीं जन्म-मरण से मुक्ति ही शाश्वत सुखावस्था है। शाश्वत सुखावस्था पाने तक आत्मा जीव के माध्यम से चोला परिवर्तन करती है। कभी निगोद का जीव, कभी वनस्पति, कभी त्रियंच, तो कभी हाथी-घोडा, तो कभी वायु, अग्नि और कभी मानव। अनुभूति या संवेदना द्वारा सुखाकांक्षा सभी भवों में अपेक्षित होती है।

आज के वैज्ञानिक युग में विज्ञान भी जीव व आत्मा को मानने को बाध्य है। जिस यथार्त को हमारे तीर्थकरों ने तो अपनी साधना सार स्वरूप दी गई जिनवाणी के माध्यम से सदियों पूर्व अर्वाचीन काल से प्रकाश में ला दिया-निकट उपकारी भगवान महावीर के काल में आज से 2500 वर्ष पूर्व उनके सम्वसरण में इन्द्रभूति गौतम का दर्शनार्थ एवं अपने संशय निवारणार्थ आने पर वीर परमात्मा ने इन्द्रभूति गौतम के मन में रहे जीव -अजीव संशय को स्पष्ट एवं निवारण कर उनके ज्ञान के अभिमान को चकना-चूर कर दिया। गौतम स्वामी ने वीर परमात्मा का प्रथम शिष्य बनकर गणधर पद को शोभायमान किया। अपने ज्ञान को जग कल्याणकारी बनाया। जो ज्ञान अन्तर्मुखी चेतना प्रदान करे वही वास्तविक (ज्ञान) प्रज्ञा है - ऐसा ज्ञान मानव के प्रज्ञा चक्षु से जागृति प्रदान कर आत्मा को निज स्वभाव में रमण करने में सहयोगी बनाता है। आत्मा ही परमात्मा पद को पाती है। मन द्वारा इच्छाओं की धुरी पर शुभाशुभ विचारों की कर्म वर्गना से कर्मबन्धन होते है- इन कर्मो का आवरण आत्मा पर दुष्प्रभाव करते हुए उसे जन्म मरण के फेरे में भटकाता है एवं दुख प्रद जीवन का प्रणेता बनता है। आत्मा एवं मन के भेद को आत्म साधकों, ऋषि मुनियों ने अपनी अनुभूति से जाना है। उनके द्वारा बताए आत्मसात करने के मार्ग को ही धर्म का स्वरूप एवं वास्तविक सुख की अचूक-चाबी कहा गया है।

जन सामान्य अन्तरात्मा की आवाज को सहज समझ व पकड नहीं पाता-कारण प्रायः उसका मन चंचल, उद्वेगी, आक्रोशी, पाप स्थानों में आशक्ति के माया जाल में आत्मा तक पहुँच नहीं पाता। वह अन्तरात्मा की आवाज सुन व समझ नहीं पाता। जिस प्रकार एक चोर को चोरी प्रारंभ करते वक्त उसके अन्दर जो भय पैदा करता हैं वही आत्मतत्त्व होता है। दूसरी ओर लोभ के वशीभूत होकर तृष्णावश जैसे ही चोरी करने को प्रवृत एवं अग्रसर करता है वह उसका मन तत्त्व हुआ। भोगों की लिप्सा से मन, जो आत्म तत्त्व पर आवरण डालकर दुष्कर्मो की ओर प्रवृत्त होता है, वही वृतियां संकुचित करने पर उसी मन को संयमित करने पर आत्मानंद की प्राप्ति एवं अनुभूति वह कर पाता है एवं चोरी की दुष्प्रवृति से पीछे हट आत्म स्वभाव में रमन कर पाता है। कहना होगा कि चोर का आत्म-स्वभाव चोरी न करना है-मन के वशीभूत वह चोरी करता है।

उत्कृष्ट मानव जीवन को पाए हुए हम सव लगभग इस नैश्वर्य क्षणिक एवं मायावी सुख के भ्रम

फसे हुए है, जकडे हुए है आत्म को भुलाए हुए है। अपनी बुद्धि का सदुपयोग आत्म ध्यान मे न कर दुर्ध्यान मे कर रहे है। मानवता के साथ धोखा कर रहे है। ज्ञानियो ने भौतिक सुख की चाह को दुर्ध्यान बताया है- दुर्ध्यान आत्म ज्ञान, आत्मचेतना को अन्तर मुहूर्त मे पलक झपकते दूर कर देता है। यदि शुभ ध्यान कही ओर करवट बदले एव अन्तरमुखी बन कर आत्म साधना म लग जाये तो ऐसी सच्ची आत्म-जागृति वीतराग वाणी पान करने से वीतराग के गुण गान करने से जीवन मे सादा जीवन उच्च विचार रखने से सुगम बनती है। आकाक्षाओ एव मन पर विजय पाना ही आत्मानन्द को पाना है। आत्मानन्द मे रमण करने वाला भव्य जीव अपने किए दुष्कर्मो का प्रायश्चित कर आत्मा पर कर्मरूपी आवरण को हटाने मे समर्थ बनता है- शाश्वत, अक्षय सुख की ओर प्रवृत होता है। 18 पापो से मुक्त हाने की भावना को बलवती बनाता है। पुण्य कार्यो की वृति बनाकर अपनी आत्मा को कर्म रहित, निर्ग्रन्थ, निर्मल बनाते हुए जन्म मरण के जजाल से मुक्त होने को उद्यत एव तत्पर होता है।

पुण्य उपार्जन, प्रायश्चित भाव आदि वीतरागता की ओर पहुचने की चेष्टाओ को ही ज्ञानियो ने धर्म का स्वरूप दिया है। ऐसी चेष्टाओ की ज्ञानियो ने एक रीति नीति निर्धारित की है जिसे क्रिया विधि कहा जाता है। क्रिया-विनम्र एव विवेक धर्म अथवा शुभकार्यो का प्राण है, अन्यथा ये सुकृत भी अहकार का पोषण कर आत्म सुख से परे ले जायेगे। अत जीवन के हर कदम कदम पर सजग एव सचेत रहकर ही हम शाश्वत सुख के भोग्ता बन सकते है।

अरिहत परमात्मा ने क्षण भर का भी जीवन मे प्रमाद न करने का जो उपदेश दिया है वही हमे जीवन पर्यन्त शुभवृत्ति म रहकर सच्चा सुख अर्जन करने का मार्ग बता रहा है। आणाए धर्म-वीतराग की आज्ञा पालन म ही धर्म कहा है- अरिहत परमात्मा ने कृत अकृत का बोध अपनी अतिम देशना म देकर मानव मात्र पर असीम कृपा की है। जिनवाणी मानव के लिए आज्ञा व निषध का मार्ग दर्शक हे।

जैन जगत के आध्यात्मिक पर्व सच्चे सुख की एक कडी है। पर्वाधिराज पर्यूषण भी मानव जीवन को यही चेतना एव प्रेरणा देते है कि जिस प्रकार किसान वर्षा ऋतु के प्रारम्भ मे यथा समय पर बीज रोपण कर, उचित क्रिया से सार सभाल करते हुए हरी भरी लहराती खेती की उपज परिपूर्ण पाता है, उसी प्रकार हे साधक। मानव जीवन को खेती की सीजन मानकर शुभध्यान, जप-तप करके काया क्लेश एव कर्म आवरण का निवारण कर अपनी सच्ची निधी सजो। पिजरे से जब आत्मराम उडेगा-नैश्वर्य शरीर, धन, वैभव व भौतिक सपदा कुछ साथ न जायेगा, मात्र किए हुए सुकृत रूपी धन ही साथ जा पाएगा। अत सुकृत साधना मे लीन बन, अजर अमर सुख का भोगता बनकर जन्म मरण से छुटकारा ले।

आइए हम सब पूर्वाधिराज पर्यूषण की इस चेतना को स्वीकार कर आत्म कल्याण की ओर प्रवृत हो एव शाश्वत सुख का वरण करे।

☆

# दिगम्बर समाज का उद्भव एवं तीर्थों के विवाद

—श्री भगवानदास पल्लीवाल, जयपुर

**दिगम्बर आमनाय का प्रादुर्भाव**

ये निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता कि किस तारीख संवत अथवा सन् में दिगम्बर समाज श्वेताम्बरों से अलग हुआ, लेकिन यह निर्विवाद रूप से सत्य है कि भगवान महावीर के निर्वाण के 609 साल बाद दिगम्बर आमनाय का प्रादुर्भाव हुआ। पहले जैन समाज जैन संघ के नाम से ही जाना जाता था। वर्तमान काल की अवसर्पिणी काल में 24 तीर्थकर ऋषभदेव से लेकर भगवान महावीर तक हुए जो वर्तमान काल के तीसरे एवं चौथे भाग से सम्बन्धित हैं। इस काल के पॉचवें काल के तीन साल साढे आठ महिने बाद इस समाज का प्रादुर्भाव माना जाता है। दिगम्बर समाज के सारे ही बडे तीर्थ दक्षिण में है। इसका एक सबसे बडा कारण उनके भद्रबाहू स्वामी जो उज्जैनी में थे, वहॉ पर अकाल पडने से दक्षिण की ओर चले गये। उन्होंने वहॉ तीर्थ स्थापित किये।

**मूर्ति निर्माण एवं मान्यताओं में भेद :-**

दिगम्बर समाज के श्वेताम्बर समाज से अलग होने के साथ ही मूर्ति निर्माण एवं उनकी मान्यताओं में भिन्नता आने लगी। इन भेदों की कठोरता के बारे में श्रीरतनमन्दीरगणी की किताब भोजा प्रबन्ध जो संवत् 1537 में लिखी गई थी के अनुसार गिरनार पहाड को लेकर प्रारम्भ हुई। इसका धर्मसागर जी द्वारा लिखित पुस्तक प्रवच्छा परीक्षा (संवत् 1629) में उल्लेख है। यह विवाद एक महीने तक लगातार चालू रहा। अन्त में अम्बिका देवी ने प्रकट होकर निर्णय दिया कि जो लोग स्त्री को मोक्ष का अधिकारी मानते हों वही इस तीर्थ क्षेत्र के अधिकारी हैं। इस पर दिगम्बर लोग पीछे हट गये। आगे से कोई झगडा न हो इसलिए आगे से भगवान की बनने वाली मूर्तियों में दिगम्बर लोग पुरूष लिंग का चिन्ह बनाने लगे एवं श्वेताम्बर मूर्तियां बैठी हुई, पैर के नीचे कन्दौरा और लंगोट के लिए सलवट के निशान बनने लगे। ये भेद पन्द्रहवीं शताब्दी के मध्य में चालू हुए।

आमनाओं की मान्यताओं में मुख्य भेद निम्नानुसार प्रचलित हैं :—

1 दिगम्बर आमनाय वाले स्त्री को मोक्ष का अधिकारी नहीं मानते हैं जबकि श्वेताम्बर मानते हैं।

2. दिगम्बर 24 तीर्थकरों में से 5 को अविवाहित मानते हैं जबकि श्वेताम्बर केवल 3 को ही मानते हैं।

3. दिगम्बर साधु हथेली पर, उसी स्थान पर तथा उसी समय आहार ग्रहण करते हैं। श्वेताम्बर साधु घर-घर से आहार लाकर अपने ठहरने की जगह आहार करते हैं।

4. दिगम्बर 5 पाण्डुओं की मुक्ति नही मानते हैं जबकि श्वेताम्बर मानते हैं।

5 दिगम्वर आमनाय में द्रोपदी को सोलह

सतियो मे नहीं मानते है जबकि श्वेताम्बर मानते हैं।

6 दिगम्बर मे तीर्थकर, चक्रवर्ती, बलदेव, वासुदेव प्रकृति की अन्य बातो से मुक्त है जबकि श्वेताम्बर उन्हे मुक्त नहीं मानते है।

7 दिगम्बर मे केवली पृथ्वी से चार आगुल ऊपर चलते है, श्वेताम्बर इसे नहीं मानते है।

8 दिगम्बर मे इन्द्र सौ है जबकि श्वेताम्बर मे ये 64 है।

9 दिगम्बर मे भगवान ऋपभदेव के माता पिता जुडवा नही हुए थे, श्वेताम्बर मे जुडवा हुए थे ऐसा मानते है।

10 भगवान ऋषभदेव ने 5 मुठी लोच किया था, श्वेताम्बरो ने 4 मुठी लोच ही माना है।

11 भगवान महावीर केवल ज्ञान प्राप्त होने के बाद बीमार नहीं हुए, श्वेताम्बर ऐसा नहीं मानते हे।

12 दिगम्बर आमनाय मे जैन आगम या जैनसूत्र का आस्तित्व मे होना नहीं मानते है, जबकि श्वेताम्बर मानते है।

**तीर्थो के विवाद-**

इस तरह दिगम्बरो ने श्वेताम्बरो से अलग होने के बाद वडे वडे तीर्थो पर कब्जे के लिए अनाधि कृत चेष्टाएँ शुरू कर दी एव उन्होने अपने हिसाब से तर्क प्रस्तुत करने शुरू कर दिए।

इसी श्रृखला मे राजगिरि, पावापुरी चवलेश्वर, अन्तरिक्षजी कुम्भोज गिरि और अभी हाल पटना स्थित गुलजार बाग कमलद्रह तीर्थ पर भी दिगम्बर समाज ने अपना प्रभुत्व जमाने के लिए चेष्टा शुरू कर दी। इसके बाद जो मुख्य तीर्थो पर विवाद चल रहे है उनका सक्षिप्त विवरण नीचे दिया गया है -

**1 समेतशिखर तीर्थ का विवाद -**

इस तीर्थ की मालकी सचालन एव अधिकार बहुत पुराने समय से श्वेताम्बर जैन सम्प्रदाय और सघ के हाथ मे था। अकबर बादशाह एव प्रिवी काउन्सिल ने भी इन पर अपनी मन्जूरी दी थी।

दिनाक 5 2 65 को हुए द्वि-पक्षीय करार के जरिये इस सारे तीर्थ पर श्री आनन्द जी कल्याणजी ट्रस्ट के अधिकारो का समर्थन किया था जो बिहार सरकार के साथ हुआ था। सेठ आनन्दजी कल्याणजी पेढी ट्रस्ट ने दिगम्बरो के विरूद्ध 1967 मे पहाड पर निर्माण को रोकने के लिए मुकदमा दायर किया है। दिगम्बरो ने भी सन् 1968 मे मुकदमा दायर किया। दोनो मुकदमो का फैसला 3 मार्च 90 को हुआ। इस फैसले के विरुद्ध श्वेताम्बर, दिगम्बर और बिहार सरकार ने राची हाईकोर्ट मे अपील दायर की। इसका फैसला 1 जुलाई 1997 को हुआ जिसके अनुसार 5 2 65 के करार को रद्द कर दिया। सेठ आनन्दजी कल्याणजी ट्रस्ट को व्यवसायी ट्रस्ट माना तथा पूरे पहाड को सरकार ने अपने हाथ मे ले लिया। समेतशिखरजी की चोटी पर आधा मील के फैलाव मे बने हुए मन्दिरो को सम्पूर्ण जैन समाज का घोषित कर दिया। इस आदेश के खिलाफ आनन्दजी कल्याण जी ट्रस्ट ने डबल बैंच मे अपील दायर कर यथास्थिति के आदेश प्राप्त कर लिये है।

### 2. केशरियाजी का विवाद :-

मेवाड महाराणा द्वारा व्यवस्था के लिए गठित 8 सदस्यों की कमेटी की शिथिलता के कारण देवस्थान विभाग ने इसे अपने कब्जे में ले लिया। इसके लिए 1962 में राजस्थान हाईकोट मे रिट याचिका दायर की। 30.3.66 के निर्णय में यह मन्दिर श्वेताम्बर घोषित कर दिया। राजस्थान सरकार ने सुर्प्रीम कोर्ट में अपील दायर की। जिसके अन्तर्गत यह मन्दिर जैन घोषित हुआ। 1981 में श्वेताम्बर समाज एवं 1983 मे दिगम्बर समाज ने अपीलें की जिसके लिए 2 2.97 को निर्णय दिया कि सरकार इसके लिए कमेटी का गठन करे। उपरोक्त आदेश के खिलाफ राज्य सरकार ने डबल बैंच में तथा हिन्दुओं ने हिन्दु मन्दिर घोषित करने की अपील दायर कर दी।

### 3. प्रसिद्ध तीर्थ श्रीमहावीरजी का विवाद :-

यह तीर्थ दिल्ली-बम्बई रेलमार्ग पर स्थित है तथा इसी नाम से स्टेशन है। सडक मार्ग से भी विभिन्न भागों से जुड़ा हुआ हैं। मूलनायक भूगर्भ से निकले मल्लियागिरी रंग के अति चमत्कारी हैं। शुरू से ही हिन्डोन, जिला सवाईमाधोपुर, के श्वेताम्बर पल्लीवाल पंचायत के हाथ में इसकी व्यवस्था रही। इस मन्दिर का निर्माण भरतपुर राज के दीवान जोधराज ने कराया। विजयगच्छ के महानन्दसागर सूरीजी द्वारा संवत् 1826 में इस मूर्ति की प्रतिष्ठा हुई। दिगम्बर समाज द्वारा कालान्तर में अनाधिकृत चेष्टा की गई और इस पर भी कब्जा करने की कोशिश चालू हुई। श्वेताम्बर पल्लीवाल पंचायत, खासतौर से स्वर्गीय श्रीनारायण लाल जी पल्लीवाल ने इसका प्रतिकार किया। सन् 1973 में श्री जैन श्वे. (मूर्तिपूजक) श्री महावीर जी तीर्थ रक्षा समिति का गठन एवं रजिस्ट्रेशन होकर इस कार्य में पूरे मनोयोग से जुट गई। इस केस में जैन-अजैन 18 व्यक्तियों के बयान दर्ज हो चुके थे। 1991 में भारत सरकार द्वारा रामजन्म भूमि, बाबरी मस्जिद विवाद के अन्तर्गत एक नया एक्ट धार्मिक स्थलों की स्थिति सम्बन्धी 15 अगस्त 1947 का पारित हुआ। जिसके अन्तर्गत दिगम्बर समाज की दरख्वास्त माननीय न्यायालय ने मन्जूरी कर ली। इस आदेश के खिलाफ दो अपीलें श्वेताम्बर समाज द्वारा हाईकोर्ट की जयपुर बैंच में प्रस्तुत की गई जो मन्जूर कर ली गई। दिगम्बर कमेटी मंदिर परिसर में कोई रद्दोबदल, तोडफोड एव मूर्तियों को नहीं हटा सके, इसके लिए यथास्थिति रखने, कमिश्नर मुकर्रर करने एवं विडियोग्राफी फिल्म बनवाने के लिए श्वेताम्बर समाज ने एक स्टे एप्लिकेशन राजस्थान हाईकोर्ट की जयपुर बैंच में लगाई। दिनांक 1.7.97 को यह एप्लिकेशन मंजूर होकर दिनांक 3.7.97 को दोनों तरफ के वकीलों की मौजूदगी में वीडियोग्राफी करवा ली गई हैं। फाइनल बहस की तारीख 19.8.97 निश्चित की गयी है।

तीर्थकर स्वरूप जो तीर्थ हैं उनकी सेवाभक्ति और रक्षा करना तीर्थकर के समान हैं जिनकी तन, मन, धन से रक्षा करनी चाहिए। जो भी महान् पुण्यशाली व्यक्ति, संस्थाएं ऐसे पुण्य कार्यो में लगी हुई हैं उनको सम्बल देना श्वेताम्वर समाज के हर संघ, संस्था और व्यक्ति का पूर्ण दायित्व एवं कर्तव्य है। समाज समय रहते जगेगा तो ही धर्म की रक्षा होगी अन्यथा नये मंदिर वनते जावेंगे, पुराने तीर्थ छिनते जावेंगे। ☆

# गुलाबी नगर जयपुर का लघु तीर्थ शंखेश्वरम्

—श्री हीराचन्द बैद

गुलाबी नगर जयपुर के उपनगरो मे मालवीय नगर शहर से दस किलोमीटर पर हवाई अड्डे के पास स्थित है। यहाँ जैन धर्म के श्वेताम्बर समुदाय के करीब 300 परिवार रहते है । यहाँ पर श्री शखेश्वरम् पार्श्वनाथ जैन श्वेताम्बर मन्दिर निर्मित हुआ है। मन्दिर के मूलनायक शखेश्वर पार्श्वनाथ आदि प्रतिमाओ की अजन शलाका आध्यात्मिक योगी विजय श्री कलापूर्ण सूरीश्वरजी म सा एव दो काऊसग्गया भगवान के अजन शलाका राजस्थान केसरी श्री निजय सुशील सूरीश्वरजी एव शान्तिनाथ भगवान की राष्ट्र सत आचार्य श्री पदम सागर सूरिश्वरजी मा सा के हाथो सम्पन्न हुई है। आज से 6 वर्ष पूर्व प्रतिष्ठा महोत्सव गच्छाधिपति विजय इन्द्र दिन्न सूरीश्वरजी महाराज साहिब की निश्रा मे एव तीन वर्ष पूर्व प्रतिष्ठा आचार्य पदमसागर सूरीश्वरजी म सा की निश्रा मे सम्पन्न हुई। भगवती पदमावती देवी की प्रतिमा विराजमान करने के लिए प्रेरणा साहित्य कला रत्न विजय यशोदेव सूरिश्वरजी म सा ने दी। मदिर के तलघर मे सफेद शिखर गिरिराज की प्रतिकृति, पाषाण मे एव सबदेरियाँ मकराने के पत्थर मे कलात्मक ढग से बनाई गई है। यहीं पार्श्वनाथ भगवान के 123 तीर्थो के चित्र लगाये गये है तथा भगवान महावीर के जीवन दर्शन के चित्र तथा ऐतिहासिक चित्रो को भी यहाँ लगाया गया है। मदिरजी के बाहर मकराने का 500 घन फुट का बहुत सुन्दर कलात्मक दरवाजा बना है तथा पार्श्वनाथ और कमठ क उपसर्ग का चीनी टाइल्स का बडा रगीन चित्र भी आकर्षण का केन्द्र है। मदिर जी के बाजू मे ही मदिर का बडा उपासरा बना है। इसमे गत वर्षो मे सभी समुदायो के अनेको आचार्य भगवन्त पधार चुके है। गत दो वर्षो मे साध्वी श्री सुमगला श्री जी महाराज ने अपनी शिष्याओ को पर्युषण मे व्याख्यान देने एव आराधना कराने के लिए भेजा था। इस वर्ष विजय राजयश सूरिश्वर जी म की आज्ञानुवर्तिनी श्री शुभोदया श्री जी म सा ठाणा 6 का चातुर्मास इस क्षेत्र मे पहली बार हुआ है। वस्तुत जयपुर शहर मे इस मदिर ने लघु तीर्थ का स्थान प्राप्त कर लिया है। बहुत अच्छी सख्या मे भाई-बहिन दर्शन-पूजन का लाभ उठा रहे है।

आप सब भाई-बहिनो से हमारी विनती है जब भी आप जयपुर पधारे तो इस तीर्थ के दर्शन पूजन का जरुर लाभ लेवे।

☆

# भगवान महावीर का धर्म-दर्शन आधुनिक सन्दर्भ में

*—श्री विनित सान्ड*

जैन शब्द 'जिन' शब्द से बना है। 'जिन' पद का अर्थ है—आत्मजयी, वह व्यक्ति जिसने अपने विकारों पर विजय प्राप्त कर ली है। ऐसे आत्मजयी व्यक्तियों का उपदेश, उनका स्वयं का आचरण उनका स्वयं का दिव्य चिन्तन-मनन ही जैन धर्म व जैन दर्शन के रूप में हमारे समक्ष है। जैन धर्म व दर्शन दोनों का परस्पर सम्बन्ध है। दूसरे शब्दों में कहे तो जैन दर्शन एक महान् वृक्ष है, तो जैन धर्म है उसका मधुर फल। देखा जाय तो जैन दृष्टि एक ओर धर्म के रूप में हमारे लिए आत्मजयी होने, सांसारिक बन्धनों से मुक्त होने, का मार्ग है, दूसरी और वह दर्शन के रूप में उस मार्ग पर चलने की एक विवेक-दृष्टि है। धर्माचरण में द्वेषादि मनोविकार से मुक्त कराने की सामर्थ्य है। इसलिए जैन दृष्टि से धर्म आत्मा का स्वभाव माना गया है। इस प्रकार जैन दृष्टि से धर्म कोई करने की वस्तु नहीं बल्कि जीने की कला हैं। धर्म साधक की स्वाभाविक क्रिया बन जाये इसीलिए जैन पक्ष आचरण पर जोर देता है। जैन साधक पहले स्वयं को संयमित करता है। स्वयं तत्त्व का साक्षात्कार कर परमात्मा के समीप पहुँचने की चेष्टा करता है। उसका आचरण उसकी भाषा बनती है। अहंकार, घृणा, बैर, छल ये आत्म स्वभाव के विपरीत है आत्मा के शत्रु है जो अशान्ति पैदा करते हैं। किन्तु ये चिरस्थायी नहीं है इन्हें धर्माचरण से जीता जा सकता है और इन्हें जीतकर सुख शान्ति का अजस्र स्त्रोत अन्दर से प्रकट किया जा सकता है। इस अनंत शान्ति अनन्त सुख को प्राप्त करने का अधिकार प्रत्येक आत्मा को है। वहां वर्ण, जाति, ऊँच-नीच का कोई प्रतिबन्ध व भेद नहीं। इस दृष्टि से जैन दर्शन एक सार्वभौमिक धर्म या आचार संहिता प्रस्तुत करता है।

आज हमारा देश जातिवाद के दानव से ग्रस्त होता जा रहा है। समाज में ऊँच-नीच की खाई बढ़ती जा रही है। धर्माचरण लौकिक दिखावा बन गया है। फलतः लोगों में एक घुटन है, पीडा है आक्रोश है स्वार्थ साधन एवं पर-पोषण शोषण की प्रवृत्ति से वातावरण कलुषित होता जा रहा है। जैन धर्म जाति विशेष का न होकर मानव संजीवनी बूटी की तरह कल्याणकारी हैं। जैन धर्म प्रत्येक आत्मा के लिए परमात्मा बनने का एवं आत्म शान्ति प्राप्त करने का एक आशावादी दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। जैन धर्म का उपदेश तीर्थकरों ने सब जाति के लिए ही नही प्राणि मात्र के लिए दिया है। जैन साधना का मार्ग सब के लिए उन्मुक्त भाव से खुला है। वह तो सर्वोदय दर्शन है। इस उदार जैन दृष्टिकोण को हम जीवन के व्यवहारिक पत्र में अपना कर, सौहार्द्रपूर्ण सामाजिक वातावरण को

जन्म दे सकते है।

जेन दर्शन वास्तव मे एक अहिसा दर्शन है। आचार विचार मे, अहिसा की स्थापना उसका लक्ष्य है। अहिसा की पूर्णतया ही वीतरागता है, सासारिक बन्धनो से मुक्ति है। किन्तु पूर्ण अहिसा या समता की स्थिति तक पहुँचना कैसे सुगम हो इसलिए जेन दर्शन कुछ सूत्र प्रस्तुत करती है।

पहला सूत्र तो यह कि जैसा तुम स्वय के लिए दूसरो के आचरण की अपेक्षा रखते हो वैसा ही आचरण तुम स्वय भी दूसरो के लिए करो।

दूसरा सूत्र यह कि हिसा-अहिसा का होना तुम्हारे आचरण के फल से जुडा हुआ नहीं हे, बल्कि तुम्हारे स्वय की मानसिक प्रवृतियो से हे। तीसरा सूत्र यह हे कि ज्ञान अहिसामय आचरण के रूप मे प्रतिफलित होकर ही शोभा पाता है। ज्ञान अन्धे की आँख है तो लगडे के पेर। बिना ज्ञान के अहिसा हिसा के घेरे मे कैद होती जाएगी। दूसरी ओर विना अहिसा के ज्ञान अन्धा व लगडा है। सक्षेप मे अहिसा रूपी शस्त्र को प्रयुक्त करने की कला शास्त्रीय ज्ञान है। जैन दर्शन की अहिसा वह प्रकाश पुज हे जिसके आगे हिसा का अन्धकार कभी टिक नहीं सकता। किन्तु अहिसक बनने के लिए, अहिसा की साधना के लिए हमे सत्य का पुजारी, निर्भीक, समर्थ, रूज्ञानी मध्यस्थ एव निर्विकारी बनना पडेगा। जैन दृष्टि, व्यावहारिक अहिसा की अपेक्षा आध्यामिक मानसिक या वैचारिक अहिसा पर ज्यादा जोर देती है। आज के वातावरण मे हम अहिसा के वास्तविक सिद्धान्तो को भूल गए है। जैन दर्शन द्वारा दिखाए गये रास्ते से भटक गए है। आज तो यह हो रहा है कि बाहर अपनी प्रवृत्ति को बहुत साफ सुथरी व सुव्यवस्थित दिखाने का हम ढोग करते है। किन्तु अन्दर ही अन्दर परस्पर अविश्वास का एक घुटन भरा व एक दुर्गन्धमय वातावरण हमारे भीतर पनपता रहता है। वास्तव मे पक्षपात रहित दृष्टि तथा अहिसा भाव इन दोनो मे ही जेन धर्म का स्वरूप पूर्णत समाया हे।

*जीओ और जीने दो*

*अहिसा परमो धर्म*

*जय वीरम्* ☆

कमल पानी से निर्लिप्त रहता है
साधक ससार से निर्लिप्त रहता है।
जो भी कमल की भाँति खिलता है
उसी का नाम अमर रहता है॥

# एकता का दीपक जलाएं

*—श्री सुशील कुमार छजलानी*

आज का समय बहुत तीव्रगति से गतिशील है। विज्ञान की तरक्की, सचार और यातायात के माध्यम से दुनिया सिमट कर छोटी हो गई है जिसने कई प्रश्न चिह्न जैन धर्म एव उसके अनुयायियो के लिए भी उपस्थित कर दिये है। जिसे मै देश एवं विदेश के संदर्भ में अलग करके अपनी बात कहने का प्रयास करुगा। जैन धर्म प्रमुख रूप से भारत मे ही विकसित हुआ है। यह भारत की सीमाओं को उतना नही लाघ सका जितनी इसमें अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर लोगो को जीवन जीने की कला सिखाने की क्षमता है। इसका प्रमुख आधार है ''अहिसा''।

प्रथम हम सबने देश की संघ व्यवस्थाओं के संदर्भ मे जिनपर जैन धर्म-मतावलम्बियो को सगठित किए रखने का एव उनके धार्मिक क्रिया-कलापो मे प्रेरणा एव सहयोग का दायित्व है के सदर्भ मे विचार करेंगे।

जैन धर्म में आदरणीय साधु संस्था एक ऐसी सस्था है जो जैन सघ व्यवस्था की रीढ की हड्डी है। इन्ही के योग्य उपदेशो एव उचित मार्गदर्शन के कारण ही व्यक्ति श्रावक एव श्राविका मिलकर आदर्श संघ बनाते है। जिस प्रकार विज्ञान की तरक्की से दुनिया छोटी हो गई है वैसे ही आतरिक दूरिया भी कम हो गई है। मैं सीधे अपनी बात पर आना चाहता हूँ। विभिन्न शहरो में जहां सघ व्यवस्था है उन सबका एक महासंघ बनाकर श्वे मूर्ति पूजक जैनसंघ के बैनर तले सम्पन्न क्रिया-कलापो की सालाना समीक्षा की जानी चाहिये कमी हो वहा सबक लेना चाहिये। अच्छाई हो उससे प्रेरणा लेनी चाहिये। इस तरह जो महासंघ के रूप में ऊर्जा वनेगी वो हमें सौर शक्ति देगी। हमे इस महासंघ के माध्यम से जैन प्रतिनिधियों को लोकसभा, विधानसभाओ मे सफल वनाना चाहिए। प्रजातत्र में यह अति-आवश्यक है। यदि आप सगठित होकर कहेंगे तो आवाज ज्यादा सशक्त होगी, अधिक सगठित न होने पर आपके सघ के सदस्यो मे वो भावात्मक एकता नही होती है—जो सघ के विकास के लिए चाहिए हमे इस दिशा में गुजराती एव पजाबी मनोभाव से प्रेरणा प्राप्त करनी चाहिए, जिन्होने सिर्फ देश मे ही नही विदेशों में भी इस मनोभाव का परिचय देकर जैन धर्म को आगे बढाया है। इन प्रयासो मे जिन मदिरो की स्थापना प्रमुख है जो हमारे धर्म के आलम्बन के केन्द्र है। मेरा विदेश यात्राओं मे जो अनुभव हुआ है उसमे मैने पाया है। आज यूरोप, जापान, अमेरिका के कई शहरों में जिन मंदिर की पताकाए फहरा रही है—South East Asia मे विशेषतः बैकाक में प्रयास जारी है। ये हमारी प्रेरणा एव विश्वास के आधार है अनार्य देशो मे इससे मार्गानुसारी जीवन लोग जी रहे है।

जहा ये सब तरक्की हुई है वहां कुछ शिथिलता भी आई है अतः समय पर जैसे चातुर्मास में योग्य संतो का समागम यहा मिलता है वैसे ही वहा के लिए ऐसे शिक्षक या प्रचारक या क्रिया कारक या तीनों का सम्मिश्रण लिए व्यक्तित्व वहा भेजे जाने चाहिए जो उन्हें जैनत्व का बोध करा सके-या जहा बोध है ओर सुप्त हो गया है उसे जगा सके।

ये सब Inter-action पहले महासंघ बनने की दिशा में अग्रसर होंगे तब सार्थक होगा। यदि कुछ पुण्यवान इस दिशा मे अपने यश का सदुपयोग करने का बीडा उठावें तो प्रतिभाशाली करुणाशील दीर्घदृष्टि साधुवृदों का आशीर्वाद भी निश्चय ही मिलेगा-इससे कई कमजोर संघो को अपनी गतिविधियो को सक्रिय करने का सवल मिलेगा। इन सबसे जेन एकता को वल मिलेगा। इन सबका समान विधारचारा के लोगों के प्रयास से सुफल निश्चित मिलेगा—जो हमको अन्ततोगत्वा सुख-शांति की ओर ले जाएगा। ☆

# धर्म

—श्रीमती अजना जेन

भगवान महावीर को आज अढाई हजार वर्षो से अधिक समय बीत गया है, फिर भी जैन धर्म आज अनवरत रूप से चला आ रहा है। इसका प्रमुख कारण है भगवान महावीर द्वारा चतुर्विध सघ की स्थापना। इसके अग है—साधु, साध्वी, श्रावक और श्राविका। जेन परम्परा मे आत्मा के स्वभाव को ही धर्म कहा गया है। आत्मा का स्वभाव है—क्षमा, विनय, सरलता, सतोष, सहिष्णुता, करुणा आदि। इन वृत्तियो को विकसित करने के लिए ही धर्म की साधना है।

आज धर्म का मर्म और उसकी आचार-निष्ठा दिन-प्रतिदिन क्षीण होती जा रही है। व्यक्ति ने धर्म का अर्थ ही बदल दिया है, उसे यह नहीं मालूम कि भगवान महावीर के शासनकाल मे जो धर्म था उससे व्यक्ति मे आत्म-बल, सौन्दर्यता यहाँ तक कि स्वास्थ्य मे भी कितनी चमक थी। उस समय न तो इतने डाक्टर थे और न ही इतनी दवाईया। इसका मूल कारण धर्म की शक्ति ही थी। सौन्दर्यता का सम्बन्ध अन्तरमन से है। आप भरपूर प्यार करे, दूसरो के प्रति सहृदय रहे-स्वय प्रसन्न रहे तथा दूसरा को प्रसन्न रखे-विनोदी स्वभाव के रहे। जीवन मे सतोषी रहे। दूसरो पर विश्वास करे। आशावान रहे। साहस रखे। मुस्कराते रहने की आदत डाले। विवेक, बुद्धि से समस्या का समाधान निकाले। चरित्र के आन्तरिक गुण आपके चेहरे को आकर्षणमय रखगे।

स्वास्थ्य का सम्बन्ध धर्म से है। काम, क्रोध, चिन्ता मानसिक स्वास्थ्य के शत्रु है। इन पर विजय प्राप्त करनी होगी। अध्यात्मिक भोजन, ध्यान धारणा, शिथिलिकरण से मानसिक स्वास्थ्य ठीक रहता है। अशुद्ध एव अधिक चटपटा तीखा भोजन खाने से पाचक रसो की ग्रथियॉ असाधारण कार्य करने को बाध्य हो जाती है साथ ही रक्त को अधिक गर्म कर देती है, नाडी प्रक्रिया उत्तेजित हो जाती है। शुद्ध खाने से शरीर को इतना बल मिलता है कि रोग अपने आप ही दूर भाग जाते है।

कुछ बीमारियो मे 50 से 85% बीमार मन मे छुपी चिन्ताओ, खीज, तनावो, अशुद्ध भोजन की वजह से होती है। भगवान सब बीमारियो का इलाज है। भगवान का मात्र नाम लेने से ही आदमी की सब तकलीफे दूर हो जाती है। उसे कोई दु ख नहीं दे सकता और किसी तरह का डर या चिन्ता उसको नहीं हो सकती। सब मुश्किले आसान हो जाती है। भगवान का नाम सारे बल और सेहत देता है। खूबसूरती, खुशी ओर आनन्द देता है। इतनी जितनी कि आदमी सपने मे भी नहीं सोच सकता।

हर बुरे काम की सजा देर सवेर मिलती ही है—हर की हुई भलाई का मीठा फल देर सवेर मिलता ही है और हर की हुई ज्यादती, बेइन्साफी देर सवेर दूर हो जाती है और यह सब चुपके-चुपके और यकीनन हो जाता है। मूर्ख लोग प्रकृति को बेवकूफ बनाने की कोशिश करते है लेकिन आखिर मे खुद बेवकूफ बनते है, नुकसान उठाते हैं।

"पश्चाताप ऐसा तल है जो मनुष्य के शरीर की ताकतो को सौ गुना बढा देता है।" ☆

—श्रीमती सन्तोष देवी छाजेड़

दरअसल सुख और दुख एक ही सिक्के के दो पहलू होते है यानि हमारे जीवन मे हमें दोनो का ही अनुभव करना पडता है, कभी कम, कभी ज्यादा फिर भी हम चाहते यही हैं कि हम सुखी रहे, दुखी न हो। इस चाहत को पूरी करने के लिए हम क्या क्या प्रयत्न नही करते ? क्या-क्या तिकडमे नही करते ? फिर भी पूरी तरह सुखी नही हो पाते। बल्कि ज्यादातर तो ऐसा ही होता है कि सुख के साधन जुटाने मे ही इतनी परेशानियॉ और पीडाएँ उठानी पडती है कि जब सुख मिलता है तो उसका सारा मजा जाता रहता है। क्योंकि तब हम सुख साधनो को भोगने की स्थिति मे नही रहते तो फिर सुखी होने की क्या सूरत हो सकती है और हो भी सकती है या नहीं यह सवाल पैदा होता है। इस सवाल का बडा माकूल जवाब एक गुरू ने अपने शिष्य को दिया था।

एक शिष्य दर्शनशास्त्र की एक पुस्तक मे सुख और दुख के विषय मे प्रकरण पढ रहा था। काफी माथापच्ची करने के बाद भी जब वह यह नही समझ पाया कि इस संसार से सभी दुखी है तो सुखी कौन है ? कोई सुखी भी हो सकता है या नही और यदि वह हो सकता है तो कैसे, किस तरह ? तो अपनी शंका का समाधान करने के लिए वह अपने गुरू के पास पहुँचा। गुरू ने अपने परम मेघावी प्रिय शिष्य को देखा तो बोले आओ वत्स, कुछ चिंतित से लग रहे हो, क्या बात है ? शिष्य बोला- गुरूदेव ! पर्याप्त चितन-मनन करने पर भी यह समझ नहीं पा रहा हूँ कि इस दुखियॉ संसार मे कोई सुखी है भी या नही। यदि है तो कौन है और किस तरह से ?

गुरू ने कहा- तुम्हारा प्रश्न गूढ़ भी है और सरल भी। गूढ इस तरह कि यदि सुख-दुख के प्रपंच में उलझोगे तो सुलझना कठिन हो जायेगा क्योंकि यह संसार अनेकानेक पापों से भरा पडा हैं। और सरल इस तरह कि दो टूक बात से फैसला कर दिया जाए।

तो वत्स ! दो टूक बात यह है कि जिसे किसी का एक पैसा भी कर्ज न चुकाना हो और शोच के समय मल-विसर्जन मे एक मिनट से ज्यादा का समय न लगता हो उस जैसा सुखी कोई नही हो सकता क्योंकि किसी का कर्जदार नही होगा तो मस्त और बेफिक्र रहेगा। कर्ज की फिक्र कर्जदार के शारीरिक एव मानसिक स्वास्थ्य को धीरे-धीरे तोड़ती रहती है। शोच के समय एक मिनट में जिसका पेट साफ हो जाए उसकी पाचन शक्ति का क्या कहना। जिसकी पाचक शक्ति अच्छी होगी उसका स्वास्थ्य भी अच्छा होगा। जो शरीर से स्वस्थ हो और बिना कर्ज लिए जीवन निर्वाह करने योग्य आर्थिक शक्ति रखता हो वही सुखी है या फिर सन्तोषी व्यक्ति सुखी होता है।

संतोष कहॉ है ?

जीवन में संतोष कहॉ है ?

दुख थोड़ा है बहुत, सुख को अपना होश कहॉ हैं ?

मिला सितारों को ज्योतिर्मय जीवन फिर भी मन चंचल हैं

झुक झुक झॉका करता पल पल, शस्य-श्यामला का अंचल है।

पीकर भी पीयूष सुरो ने, भरे तृप्ति के कोष कहॉ है। ☆

# आत्मा बनाम आत्माराम

—वैद्यराज श्री रतनलाल रॉयसौनी जैन

अनादि काल से चली आ रही एक धारणा, एक ही खोज और एक ही परम सत्य की अनुभूति से न जाने कितने समय से जारी यह खोज आज भी जारी है और आगे भी जारी रहेगी। आज तक इसी सत्य को ज्ञानियो ने जाना है, और भगवान ने बतलाया है वही भगवान जिसे हम पाने के लिये लालायित है। सत्य यह हे कि जो भगवान मे विद्यमान है या था वह सभी प्राणियो मे सुक्ष्म था विशाल स्वरूप मे हमारे मे मौजूद हे। इसमे अन्तर हो सकता है कि वह वस्तु हे या ''आत्मा''। आत्मा को जानकर भी जानना अधूरा है। ज्ञानियो ने इसके सम्बन्ध मे अलग अलग विचार रखे है। यह वही आत्मा है जो सभी सजीवो मे विद्यमान हे। या यो कहे कि इस (आत्मा) के होने पर ही वस्तु सजीव हो जानी है और न होने पर निर्जीव के बराबर है। यह आत्मा अजर अमर है, नाश नहीं हो सकती है। परन्तु जिस स्वरूप मे होती है उसके अभाव मे नश्वर अवश्य है। इसकी विशेषता यह है कि यह सिर्फ नश्वर शरीर (स्वरूप) मे ही उत्पन्न होकर अपनी उपस्थिति जाहिर करती हे। जो उस नश्वर (शरीर म) रूप मे रहकर भी उसी से सभी कर्म करवाती है। लेकिन कर्मो के अनुसार दूसरा स्वरूप अवश्य बदलता है। यह स्वरूप (आत्मा) कैसे बना यह एक ज्वलत प्रश्न है। यह प्रश्न उसी तरह है कि जिस तरह हम कहे कि भगवान ने (श्रृष्टी मे) पहले मुर्गी बनी या अण्डा। यदि यह कहे कि भगवान जो श्रृष्टी का सचालक (Director) है उसने इसे उत्पन्न किया तो बिना आत्मा के भगवान सजीव कैसे हो सकता है और जो सजीव हो ही नही सकता वो किसी का निर्माण भी नही कर सकता। अत आत्मा रूपी प्रकाश जिसमे है वही ''आत्मा राम'' है।

आत्मा राम से तात्पर्य—

जो इस आत्मा को धारण करे, यानि आत्मा जिसमे रहे वही इसका मालिक (शरीर) है। समय सीमा कम या अधिक हो सकती है। यह निश्चित नहीं है कि किस शरीर मे यह आत्मा कब तक रहेगी। इसका समय निश्चित कर पाना सम्भव नहीं है। यह समय तो सिर्फ वह सचालक ही (Director) निश्चित कर पाया है। उसी ने सभी 'आत्मा राम' को आत्मा के सग रहने का समय निश्चित कर रखा है। इस समय मे हेर फेर करना किसी के हाथ मे नही हे। बस सिर्फ सचालक (Director) द्वारा निश्चित किये गये समय मे ही आत्मा राम को कर्म करने पडते है। उन्हीं कर्मो के अनुसार 'आत्मा राम' के कर्म प्रतिफल का निश्चय होना है। अच्छे बुरे कर्म को समझना और करना इसकी क्षमता (शक्ति) सिर्फ मनुष्य मे ही है। अत मनुष्य शरीर के माध्यम को ही सर्वश्रेष्ठ आत्माराम कहा गया है। इन्हीं कर्मो के अनुसार 84 लाख योनियो मे से अधिक या कम योनियो मे इसकी विद्यमानता (भ्रमण) सम्भव है।

मरने का तात्पर्य है (शरीर छोड़ना)

तात्पर्य यह है कि आत्मा जब भी शरीर को छोडती है सचालक द्वारा दिये गये निश्चित समय को पूर्ण करके दूसरी योनि मे, समय निर्धारण की गई योनि मे प्रवेश करती है। यह छोडने की प्रक्रिया ही मृत्यु है और प्राप्त करने की प्रक्रिया को जन्म कहा गया है। यह जन्म मृत्यु दोनो ही निश्चित

प्रक्रिया है । इसीलिये संसार चलायमान है। अन्यथा यह सम्भव नहीं है क्योंकि जब सजीव-निर्जीव को पहचानने वाले ही नही होंगे तो संसार ही नहीं रहेगा और यही प्रक्रिया 'संसार असार' कहलायेगी । प्रत्येक समय में महापुरूष और सत्पुरूष हुए है जिनके कर्मो को आदर्श माना गया है। यही आदर्श व्यक्ति के लिए प्रेरणा स्त्रोत बने एवं इसके अनुरूप कार्य करें। यदि इनके अनुरूप नहीं बन सकें तो कम से कम इनके बनाए आदर्शो पर चलकर अच्छे कार्य करें, अच्छे कर्म करें।

भगवान क्या हैं, इसकी कोई परिभाषा नहीं है। निश्चित पैमाना नहीं है कि यह भगवान हो सकता है या ऐसा व्यक्ति भगवान होगा अर्थात भगवान का अर्थ अच्छे कर्म करने वाला, सत्कर्म करने वाला, दूसरों पर उपकार करने वाला, अच्छा आदर्शो का पालन करने वाला या अच्छा कार्य करने वाला 'भगवान' मानने के योग्य है। अतः हम सभी मिलकर यही प्रयास करे कि सभी भगवान बने या जीवन मृत्यु से छुटकारा पा सकें। यदि जीवन मृत्यु से छुटकारा नहीं मिला तो हम सभी स्वर्ग नरक भुगत रहे हैं वैसे ही भुगततें रहेंगे।

'पुनरापि जन्नमम् पुनरपि मरणंम्' ।

अतः ज्ञानियों के उपदेश सुनना, (व्याखान) उसके अनुरूप अपने जीवन को सार्थक बनाना ही वास्तविक आत्मा की अनुभूति है अन्यथा हममें और अन्य जीवों में जिनमें आत्मा तो है परन्तु सोचने, समझने और करने की शक्ति नही है अर्थात् पशुवत् प्राणी हैं।

☆

---

# पहेली-अनुप्रेक्षा

**प्रश्न-** चार अक्षर का ऐसा नाम बताओ जिसका पहला और 4 चौथा अक्षर मिलाने से मनुष्य का सूचक बनता है। तीसरा और चौथा अक्षर मिलाने से वाहन बनता है । पहला, दूसरा और तीसरा मिलाने से पानी में चलने वाला वाहन दूसरा व चौथा से दूल्हा, पहला तीसरा और चौथा मिलने से अर्थहीन बनता है। पहला दूसरा से नया या संख्या वाचक अर्थ निकलता है।

**उत्तर-** ''नवकार''

यानी- पुण्य से मनुष्य (नर) भव या जन्म मिला है। संसार रूपी अटवी में धर्म रूपी वाहन (कार) में बैठकर जिनवाणी की नाव (नवका) से संसार सागर को पार करना हो तो चारित्र और संयम अंगीकार (वर) करो। यदि नहीं (नकार) तो नया (नव) या संख्यात असंख्यात जन्म मरण की दुर्गति को धारण करो।

यही नवकार में छुपी युक्ति है ।
पंच परमेष्ठी गुणानुक्रम ही सुक्ति है ।
पंच परमेष्ठी पदानुक्रम ही मुक्ति है ।

*डा. प्रकाश कुमार जैन*
*प्रस्तुतकर्ता—श्री हीराचन्द पालेचा*
*सौजन्य से ''जिनवाणी पत्रिका''*

# प्रतिक्रमण योग अथवा महाभारत रहस्य

—श्री हीराचन्द ढड्ढा, जयपुर

## काव्य–रचना

1 ज्ञान समुद्र अथाह हे
मन की आँखे खोल
जो जितना चिन्तन करे
पाय रत्न अमोल

2 श्रुतियॉ ओर पुराण पढ
ले जैन धर्म का ज्ञान
बौद्ध ग्रथ अरू बाइबिल
कर अध्ययन कुरान

3 सब धर्मो का सार सुन
निज चरित्र मे ढाल
सद्गुरू चिदानन्द ये
लाये रत्न निकाल

4 श्री नित्यरजन सघ के
सब श्रद्धालु सदस्य
आत्म विवेचन कर प्रखर
समझो नया रहस्य

5 महाभारत के युद्ध का
हम समझ न पाये सार
अब तक थे समझे इसे
केवल नर सहार

6 हीराचन्द ढड्ढा ने किया
नया विवेचन आज
धर्मक्षेत्र व कुरुक्षेत्र
व तत्कालीन समाज

7 कौरव, पाडव सभी का
कर आध्यात्मिक अनुमान
उनका परिचय आप अब
सुनिये देकर ध्यान

8 क्षमा, आर्जव-नम्रता,
दया और सन्तोष,
सत्य सहित ये पॉच ही
पाडव है निर्दोष

9 ज्ञान चक्षु ही जीव को
दिखलाते सन्मार्ग
अधा होकर स्वार्थवश
मानव चले कुमार्ग

10 हृदय बना धृतराष्ट्र
जब जन्मी सौ सन्तान
ये ही सब कौरव बने
कर लीजे पहिचान

11 प्रणातिपात-झगडा कहो
मृषावाद या झूँठ
और अदत्ता दान है
चोरी अथवा लूट

12. अब्रह्मचर्य चरित्र में
नष्ट करे सम्मान
एवं यह पैशून्य भी
पाप मूल ही जान

13. आवश्यकता से अधिक
संग्रह करना छोड
यही परिग्रह पाप है
इससे नाता तोड

14. क्रोध, मान, माया सभी
लोभ, राग, अरू द्वेष
कलह तथा अभ्याख्यान
सभी पाप परिवेश

15. रति, अरति भी पाप की
ओर सदा ले जाय
परिपरिवाद जगत में
पाप मूल बन जाय

16. माया, मृषावाद है
जीवन का अभिशाप
आर्त ध्यान व रौद्रध्यान
बडे भयंकर पाप

17. इसी भॉति मिथ्यात्वशल्य
बीस पाप है तात
पंचेन्द्रिय को प्रभावित
करते हैं दिन-रात

18. पॉच इन्द्रियॉ जब कभी
इन बीसों से मिल जाय
प्रति इन्द्रिय प्रति पाप ही
सौ कौरव बन जाय

19. धर्मक्षेत्र इस हृदय पर
करने को अधिकार
ये सौ कौरव साथ मिल
करते युद्ध अपार

20 रही सदा सद्बुद्धि ही
पांडव पत्नी एक
उसको अपमानित किया
तज कर आत्म विवेक

21. जिस प्राणी के हृदय में
यह मनस्थिति हो जाय
धर्मक्षेत्र यह हृदय ही
कुरूक्षेत्र बन जाय

22. उधर पॉच पांडव अभी
करते शान्ति प्रयास
अब केवल श्रीकृष्ण ही
रहे विजय की आस

23. ज्ञानी जन की सीख को
जो ना माने कोय
इस जीवन संग्राम में
सदा पराजित होय

24. अर्जुन कहो या नम्रता
होगी जिसके साथ
योगेश्वर श्रीकृष्ण जहाँ
विजय उसी के हाथ

☆

# जरा, इन पर भी सोचिए !

—श्री केसरीचन्द सिघी

**हम कब तक मौन रहेगे ?**

हम स्वाधीनता की 50 वीं वर्ष गाठ मना रहे है और अपनी सफलताओ का सिहनाद कर रहे है, वहीं देश, समाज और घर घर मे फैले भ्रष्टाचार, आचरणहीनता, नैतिक पतन, स्वार्थपरता, आपसी द्वन्द पर जर-जर आसू भी बहा रहे है। क्या आसू बहाने या प्रलाप करते रहने से भी इन समस्याओ का समाधान हो पायेगा ?

राजनीति मे व्याप्त स्वार्थपरता और सिद्धान्तहीनता को एक तरफ रखकर आज हम अपने जैन धर्म और इसके अनुयायियो मे जो बुराइया आ गई है इनका ही सुधार कर सके तो ही देश और समाज की सेवा कर लेगे। आज जब जैन कहलाने वाले तथाकथित उच्च श्रावकों के नाम कतलखाने स्थापित करने वालो, चर्बी और शराब का धधा करने वालो, राष्ट्र विरोध गतिविधियो मे लिप्त होने वालो मे आने लगे और श्रमण सस्कृति के शीर्ष पर विराजे हुए मार्गदर्शको पर भी सन्देह का घेरा बनने लगे तो उस हालत मे इस जैन धर्म समाज और सस्कृति का क्या हाल होगा। भले ही ऐसे लोगो की सख्या नगण्य है लेकिन गेहू मे घुन का काम तो कर रही है और यदि समय रहते इनका निस्तारण नहीं हुआ तो एक दिन ऐसा भी आ सकता है कि हम अपने आपको जैन कहलाने मे गौरव का अनुभव करना ही छोड़ दे।

अत आज समय आ गया है कि समाज के आगेवान और शीर्षस्थ बिराजे हुए मार्गदर्शक मौन तोडकर इन पर चितन मनन करे और भगवान महावीर के बताए आदर्शो एव सिद्धान्तो के अनुरूप आचरण करने का सिहनाद करे।

**वैवाहिक सम्बन्ध**

परिचय सम्मेलनो एव सामूहिक विवाहो की अपनी उपयोगिता है लेकिन आज की नई पीढी मे वैवाहिक सम्बन्धो की जिस प्रकार की दुर्गति देखने को मिल रही है वह यह सोचने को विवश कर रही है कि पहले के समय मे वैवाहिक सम्बन्ध तय करने मे परिवार के बुर्जुगो, माता-पिता, रिश्तेदार आदि की जो भूमिका थी वह उचित थी अथवा आज की व्यक्तिगत स्वतत्रता, स्वच्छन्दता आपसी मेल-मिलाप और शारीरिक शौष्ठव देखकर निश्चित किए जाने वाले सम्बन्ध उपयोगी सिद्ध हो रहे है। पहले लड़का लड़की आपस मे देखे या मिले बिना जो सम्बन्ध होते थे, वे कैसी भी हो, जीवन पर्यन्त साथ निभाते थे। आज बहुत सोच समझकर किए जाने वाले सम्बन्धो की जो विषम स्थिति देखने को मिलती है, पाश्चात्य सस्कृति के प्रभाव से सम्बन्ध विच्छेद मे क्षणिक भी सकोच नहीं होता तो ऐसी स्थिति मे क्या यह सोचना आवश्यक नहीं हो गया है कि विवाह सम्बन्ध तय करने की आदर्श पद्धति क्या हो ?

**यह टी वी है या टीबी**

*टी वी अब टी बी बनी, सूझे नहीं कोई इलाज*<br>
*अग्रेजी के दास है, बजे पाप का साज*<br>
*बजे पाप का साज, रात की नीद उडाते*<br>
*विज्ञापन भरमार, अग नगे दिखलाते।*<br>
*पारदर्शी काम छोड कर देखती बीबी*<br>
*लड़का लड़की बिगडे देख देख कर टी वी।*

**समाधान**

व्यवस्था ही घर की शोभा है।<br>
सन्तुष्ट स्त्री ही घर की लक्ष्मी है।<br>
समाधान ही घर का सुख है।<br>
आतिथ्य ही घर का वैभव है।<br>
धार्मिकता ही घर का शिखर है।<br>
सच्चाई ही जिन्दगी की रोशनी है।<br>
सबसे बडी दौलत प्रसन्नता है।

☆

# श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ, जयपुर

## श्री वर्द्धमान आयम्बिल शाला की स्थायी मित्तियाँ

### वर्ष 1996-97

501 00 श्री करणी सिहजी कोचर

501 00 श्री मोहन राजजी मूलराजजी मेहता

501 00 श्री केशरीमलजी मेहता

501 00 श्रीमती पानी बाई बया

501 00 श्री फतेह सिहजी बाबेल

501 00 श्रीमती सुशीलादेवी धर्मचन्द्र मेहता

501.00 श्री बालचंदजी दूलीचदजी कावडिया, सादडी

151.00 श्री केशरीमलजी देवीचदजी पोरवाल

151 00 श्री विजयराजजी लल्लु जी

151 00 श्री पुष्पमलजी लोढा

151 00 श्री केशरीचदजी सुराना

151.00 श्री सूरजचदजी भूरठ

151.00 श्रीमती अरुणा बहन

151.00 श्री राजकुमारजी अभय कुमारजी चौरड़िया

151.00 श्रीमती मन्जू सिंघवी

151.00 श्री सुशील चन्द्रजी सिंघी

151.00 श्री पारसमलजी मेहता

151 00 श्री बद्री प्रकाशजी आशीष कुमारजी जैन

151 00 श्री सौभाग्यचन्द्रजी बाफना

151.00 श्री राकेश कुमारजी लोढा

151 00 श्री राजेन्द्र कुमार जी चत्तर

151.00 श्री लखपतचंदजी भण्डारी

151 00 श्री धर्मचंदजी मेहता

151 00 श्री हीराचंदजी पालेचा

151 00 श्री मोतीलालजी कटारिया

151 00 श्री शखेश्वरमलजी लोढा

151 00 श्री हजारीचदजी मेहता

151.00 श्री सोहनलालजी कोचर

151 00 श्री धनरूपमलजी कनकमलजी नागौरी

151 00 श्री ज्ञानचदजी सुभाषचदजी छजलानी

151.00 श्री केशरीमलजी मेहता

151.00 श्री खीमराजजी पालरेचा

151.00 श्री मोतीलालजी सुशील कुमारजी चौरड़िया

151.00 श्री हीराचंदजी माणकचंदजी चौरडिया

151.00 श्रीमती तीजकॅवर दोशी

151.00 श्री हुकमीचंदजी कोचर

# श्री जैन श्वे.तपागच्छ संघ, जयपुर

## आयम्बिल शाला परिसर जीर्णोद्धार मे सहयोगकर्त्ता

### अप्रैल 96 से मार्च 97 तक

| चित्र | भेटकर्त्ता |
|---|---|
| स्व श्री मनोहरमलजी लूणावत | श्री विमलचदजी सुरेशकुमारजी लूणावत |
| स्व श्री दीवानचदजी लिगा | श्री शान्तीलालजी नरेश कुमारजी पजाबी |
| स्व श्री लक्ष्मीचदजी भन्साली | श्रीमती सरीता भन्साली |
| | श्री राजेश मोटर्स |
| श्री हीराचदजी ढड्ढा | श्री जतनमलजी, विमलचदजी, निर्मलकुमारजी ढड्ढा |
| स्व श्री नाथूलालजी नागौरी | श्री धनरूपमलजी कनकमलजी नागौरी |
| स्व श्री पन्नालालजी सुराना | श्रीमती उच्छव कवर सुराना |
| स्व श्रीमती तीज कॅवर दोशी | श्री चन्द्रसिहजी, पारसमलजी, महेन्द्रकुमारजी दोशी |
| श्रीमती किरण कुमारी धर्म पत्नी श्री सरदार सिहजी चोरडिया | पुत्री सुश्री सीमा चौरडिया |
| स्व श्री चुन्नीलालजी कटारिया | श्री पारसमलजी, विजय, अनिल, डॉ प्रदीप कटारिया |

---

# श्री सुमतिनाथ जिनालय मे अष्ट प्रकारी पूजा सामग्री

### भादवा सुदी 5 स 2053 से भादवासुदी 4 स 2054 तक

भेटकर्त्ताओ की शुभ नामावली

1. अखण्ड ज्योत — श्री मगलचन्द ग्रुप
2. पक्षाल पूजा (दूध) — श्री सिद्धराजजी ढड्ढा
3. बरास, खसकूची, अगलुना — एक सद्गृहस्थ
4. चन्दन पूजा — शाह कल्याणमलजी कस्तूर मलजी
5. केशर पूजा — श्री खेतमलजी पनराजजी जैन भूती वाले
6. पुष्प पूजा — कुमारी सीमा शाह
7. अगरचना (वरक) — श्री प्रकाशनारायणजी मोहनोत
8. धूप पूजा — श्री सोनराजजी पोरवाल

श्री श्वे. जैन विद्यालय में संचालित

# श्री जैन धार्मिक पाठशाला का दिग्दर्शन

*—श्रीमती मंजू पी. चौरडिया,* प्रभारी

धर्म एक त्रिकालावाधित मंगलमय सत्य हैं। यह जगत के कल्याण का कारण और मनुष्य के योग क्षेम का वाहक है। धर्म के बिना मानव जीवन का कोई मूल्य नहीं। किन्तु अवश्य ही उस धर्म का अर्थ नैतिकता और सदाचार है। प्राण रहित शरीर की तरह उस जीवन का कोई मूल्य नहीं जिसमें नैतिकता और धर्म नहीं। अगर जीवन में धर्म का प्रकाश न हो तो वह आंख होते हुये भी अंधा है। मनुष्य से पशुता के निष्कासन का श्रेय धर्म को ही है। धर्म ही पाप से पुण्य की ओर, अज्ञान से केवल ज्ञान की ओर ले जाने वाला है। धर्म से ही मनुष्य में दया, दान, संतोष, अहिंसा आदि सद्गुण प्रकट होते है। जहॉ जहॉ धर्म की प्रतिष्ठा होगी, वहॉ वहॉ शान्ति सुख और वैभव का विकास देखने को मिलेगा।

किसी दर्शन विशेष पर आधारित उपासना पद्धति को पन्थ सम्प्रदाय आदि के साथ ही धर्म भी कहते हैं। यदि हम सचमुच धर्मावलम्बी बनना चाहते हैं और अपने आत्म कल्याण की ओर बढना चाहते हैं तो हमें उस धर्म को, उसकी उपासना पद्धति को, उसके सिद्धान्तों को भली भॉति समझना होगा अन्यथा हम अन्धविश्वासी हो जायेंगे और उन आधारभूत तत्वों से अलग होकर अपनी पहचान खो देंगे।

ऐसा न हो तो हमें अपने धर्म को समझना आरम्भ करना होगा। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर श्री जैन धार्मिक पाठशाला की योजना को मूर्त रूप दिया गया है। प्राथमिक शिष्टाचारों से आरम्भ कर उपासना पद्धति, इतिहास, संस्कृति, आचार, दर्शन आदि सभी पहलुओं के अध्यापन अभ्यास आदि को हर आयु स्तर के लिए उपलब्ध कराने की महत्ती परिकल्पना से यह योजना आरम्भ की गई है।

वर्तमान में जिन शिक्षण सुविधाओं का प्रावधान किया गया है वे हैं-

1. धार्मिक सूत्रों का अभ्यास।

2 पूजा, सामायिक आदि आवश्यक क्रियाओं का अभ्यास व उनकी विधियों की समुचित जानकारी।

3 जैन दर्शन व तत्व ज्ञान का सामान्य अभ्यास।

4. तीर्थकरों, आचार्यो महापुरूषों आदि का जीवन चरित्र व प्रेरक कथायें।

5. विश्व प्रकाश पाठ्यक्रम द्वारा ''जैन स्नातक'' स्तर की उपाधि।

6. 51 प्रकार की गहुँली।

7. हारमोनियम, तबला, ढोलक आदि वाद्य यन्त्रों के साथ संगीत प्रशिक्षण।

8. जैन दर्शन के अनुसार सफल व्यवहारिक जीवन।

9. बैण्ड के सभी वाद्य यन्त्र।

10. विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताएं आयोजित कर प्रोत्साहन स्वरूप पारितोपिक भी वितरित किये जाते हैं।

11 प्राकृत व अपभ्रश भाषा शिक्षा एव शोध कार्यक्रमो की योजना तैयार की जा रही है।

यद्यपि ये कार्य आरम्भिक स्तर पर ही है इन्हे और विकसित करने का कार्य समाज की आवश्यकताओ तथा अपेक्षाओ के अनुरूप हो तो विकास के काम अधिक व्यापक होगे, इस बात को ध्यान मे रखकर हमने एक सर्वेक्षण किया। अपने पाठ्यक्रम और शिक्षण पद्धति को समाज की वर्तमान आवश्यकताओ के अनुरूप ढालने के लिए समाज से निरन्तर सम्पर्क आवश्यक है। यह सर्वेक्षण इस सम्पर्क पद्धति की पहली कडी थी। इसके निष्कर्ष आश्चर्यजनक रहे। अधिकतर परिवारो ने इस प्रकार के शिक्षण कार्य मे अत्यधिक रुचि प्रदर्शित की। सर्वेक्षण के पश्चात् पाठशाला के विद्यार्थियो की सख्या 100 हो गई।

अब हमारे विशेषज्ञ कार्यरत है एक और प्रभावी योजना तैयार करने मे जिससे जैन धर्म के विषय मे जैन समाज मे व्याप्त अनभिज्ञता को दूर किया जा सके। बढती हिसा का घटाटोप अधकार के बीच अहिसा का दीप जलाए रख सके।

आप अपने सुझावो और सहयोग के साथ अपनी अपेक्षाओ से भी अवगत कराते रहे।

धर्म पढने सीखने की कोई उम्र नहीं होती है इसलिये सभी धर्म प्रेमी बन्धुओ, माताओ, बहनो एव बच्चो से निवेदन है कि ''श्री जैन धार्मिक पाठशाला'' श्री श्वेताम्बर जैन विद्यालय शिक्षा समिति, घी वालो का रास्ता, जयपुर मे पधार कर इस ''निशुल्क''योजना का लाभ उठावे। ☆

# श्रद्धांजलियां

इस वर्ष ज्ञात सूचना के अनुसार तपागच्छ आमनाय के निम्नाकित का निधन हुआ —

(1) श्री प्रकाशनारायणजी मोहनोत
(2) श्री शिखरचन्दजी ढढ्ढा
(3) श्री हिम्मत भाई दोसी
(4) श्रीमती भवरी बाई धर्मपत्नी स्व श्री फूलचन्दजी बैद
(5) श्रीमती झकारदेवी धर्मपत्नी स्व श्री इन्दर मलजी कोठारी
(6) श्रीमती प्रेमबाई धर्मपत्नी श्री माणकचन्दजी कोठारी
(7) श्रीमती सरला देवी धर्मपत्नी श्री नरेन्द्र कुमारजी लूणावत
(8) श्रीमती कमला देवी धर्मपत्नी स्व श्री हीरालालजी चौरड़िया

सभी के प्रति श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ सघ एव सपादक मण्डल की हार्दिक शोकाभिव्यक्ति एव श्रद्धाजलि अर्पित है।
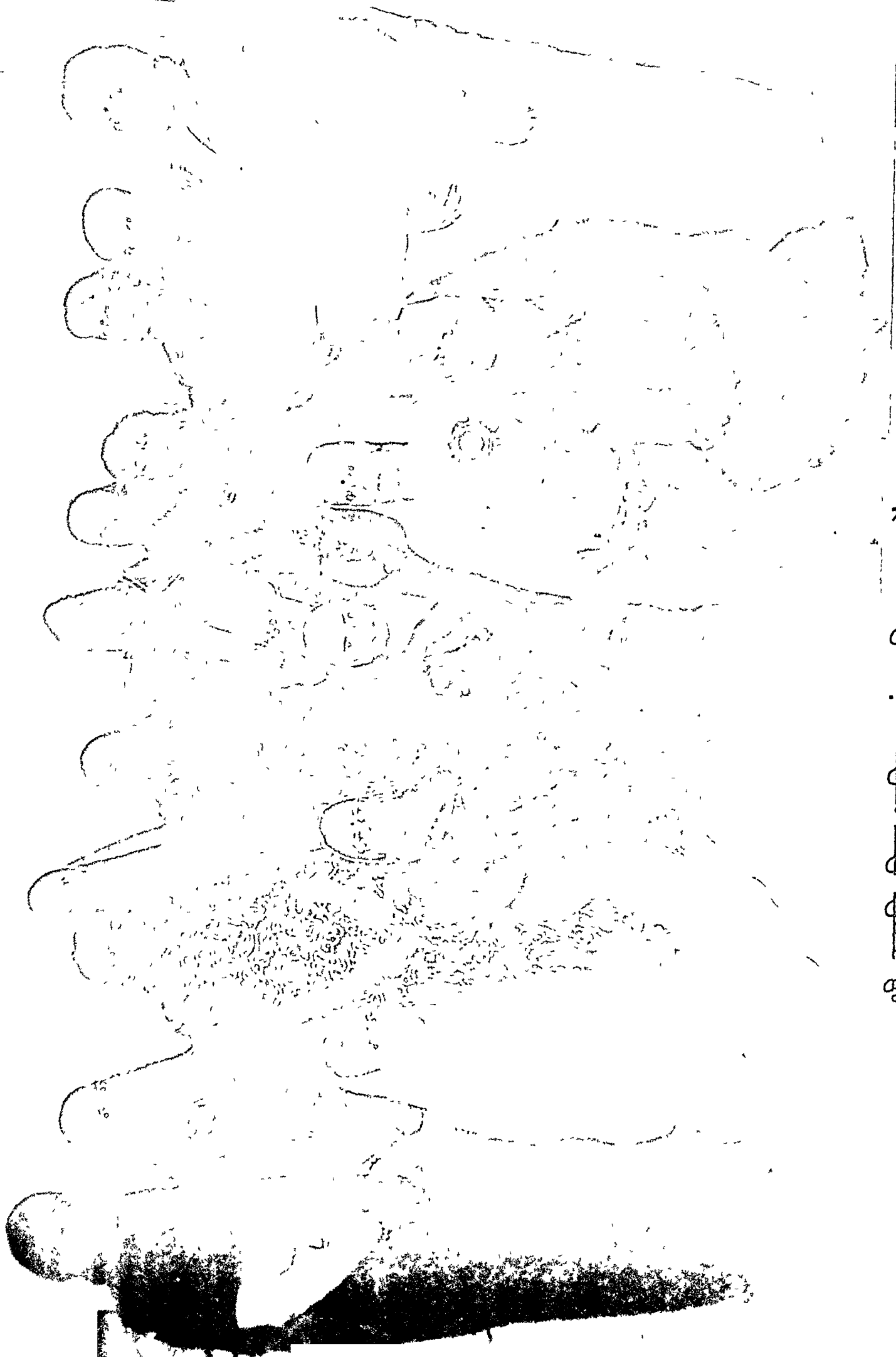
श्री सुमति जिन श्राविका संघ की सदस्यायें

# श्री आत्मानन्द जैन सेवक मण्डल

# "प्रगति के चरण"

—*श्री अशोक. पी. जैन*
*महामंत्री*

श्री आत्मानन्द जैन सेवक मण्डल तपागच्छ संघ का अभिन्न अंग है। हर वर्ष श्वेताम्बर जैन समाज द्वारा आयोजित धार्मिक एवं सामाजिक गतिविधियों में अग्रणी रहा हैं।

गत वर्ष विराजित परम पूज्य महतरा साध्वी श्री सुमंगलाश्रीजी के सान्निध्य मे जो कार्यक्रम आयोजित किये गये उन सभी कार्यो में मण्डल का पूर्ण सहयोग रहा।

जयपुर से 30 कि.मी दूर बरखेडा ग्राम में स्थित प्रसिद्ध जैन श्वेताम्बर तीर्थ श्री आदिश्वर जिनालय के जिर्णोद्धार हेतु मण्डल परिवार की ओर से दो ईटे दी गई।

श्री जैन श्वेताम्बर युवा महासंघ के निर्विरोध-चुनाव में 27 सदस्यों की कार्यकारिणी कमेटी मे मण्डल के पॉच सदस्य मनोनित किये गये, जिसमें "उपाध्यक्ष पद" पर "विजय सेठिया" "संयुक्त मंत्री" पद पर "ललित दुग्गड" एवं अशोक पी जैन, भारत शाह, प्रकाश मुणोत को सदस्य नियुक्ति किये गये।

श्री जैन श्वेताम्बर युवा महासंघ की ओर से तीन कार्यक्रम सम्पन्न हुए- जिसमें मण्डल परिवार ने सम्पूर्ण सहयोग किया।

(1) श्वेताम्बर समाज के लिए सामुहिक गोठ का आयोजनः- जिसमें सह सयोजक विजय सेठिया, अशोक पी. प्रकाश मुणोत, भरत शाह, राकेश मुणोत, सुरेश मेहता थे।

(2) होली स्नेह मिलन (शेखावटी ढप-चंग का प्रोग्राम) रविन्द्र मंच पर। जिसके सह-सयोजक ललित दुग्गड थे।

(3) महावीर जयन्ती के दिन चौडा रास्ता (लाल भवन से), घी वालों का रास्ता होते हुए मिलाप भवन तक प्रभात फेरी निकाली गई। जिसके संयोजक भरत शाह थे।

श्री आत्मानन्द जैन सेवक मण्डल द्वारा पूर्व पर्युषण पर पॉच स्मृति चिन्ह दिये गये। जिनमें दो स्मृति चिन्ह मण्डल द्वारा हर वर्ष जाने वाली यात्राओं के दौरान स्नात्र पूजा पढाने वालों को दिए गए।

(1) श्री चिमन भाई मेहता
(2) श्री पुखराज जैन

तीन स्मृति चिन्ह क्रमशः श्री महेन्द्र दोषी, (नाकोडा जी यात्रा के संयोजक के लिए दिया गया) दीपक बैद व प्रकाश मुणोत को दिए गए।

मण्डल परिवार की ओर से दो बसों द्वारा जैसलमेर पंचतीर्थी की यात्रा हेतु प्रस्थान किया गया। जयपुर से मेडता रोड (फलवृद्धि पार्श्वनाथ) ओसिया जी, रामदेवरा, जैसलमेर, लोद्रावा, बाडमेर, नाकोडा, जोधपुर होकर सम्पन्न की। इन दोनों बसो के संघपति (1) साधर्मिक (गुप्त) (2) श्री राजकुमार जी दुग्गड थे।

मण्डल परिवार को यहॉ विराजित साधु सन्तों का आर्शीवाद एवं मार्गदर्शन मिलता रहता

है। शासन देव की कृपा, गुरू-भगवन्ता का आर्शीवाद, सघ के अनुभवी जनो के मार्ग दर्शन एव मण्डल के सदस्यो के श्रम एव सेवा भावना स मण्डल हमेशा प्रगति करे यही मेरी मगल कामना है।

मै मण्डल परिवार की तरफ से आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मण्डल के सभी सदस्य श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ सघ एव अन्य सभी सघो द्वारा आयोजित धार्मिक एव सामाजिक सास्कृतिक कार्यक्रमो मे निष्ठापूर्वक सम्पूर्ण रूप से समर्पित सेवा भाव से कार्य करते रहेगे।

मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि हमेशा की तरह श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ सघ एव अन्य सघा का मार्ग दर्शन एव मण्डल के समस्त कार्यकर्त्ताओ का सहयोग मिलता रहगा। समय समय पर सघ के सभी महानुभावा का हमे तन मन धन से सहयोग मिला है इसके लिए हम आपके प्रति कृतज्ञ हैं।

अत म मै अज्ञानतावश किसी भी भूल के लिए हृदय से क्षमा प्रार्थी हूँ।

मण्डल परिवार की कार्यकारिणी विगत वर्ष की भाँति हैं—

| | |
|---|---|
| अध्यक्ष | विजय कुमार सेठिया |
| उपाध्यक्ष | नरेश मेहता |
| मत्री | अशोक पी जैन |
| सयुक्त मत्री | भरत शाह |
| कोषाध्यक्ष | प्रकाश मुणात |
| सगठन मत्री | सुरेश जैन |
| सास्कृतिक मत्री | प्रितेश शाह |
| सूचना प्रसारण मत्री | सजय मेहता |
| शिक्षा मत्री | विपिन शाह। |

*कार्यकारिणी सदस्य*

(1) अशाक जैन (शाह)

(2) धनपत छजलानी

(3) ललित दुगड

(4) राजेन्द्र दोषी

*जय जिनेन्द्र* ☆

## बरखेड़ा तीर्थ जीर्णोद्धार की नवगठित समिति

श्री उमरावमल पालेचा, सयोजक

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 2 | श्री हीराभाई चौधरी | सदस्य | 6 | श्री दानसिह कर्णावट | सदस्य |
| 3 | श्री तरसेम कुमार पारख | सदस्य | 7 | श्री मोतीचन्द वैद | सदस्य |
| 4 | श्री मोतीलाल भडकतिया | सदस्य | 8 | श्री चितामणि ढड्ढा | सदस्य |
| 5 | श्री राकेश कुमार मोहनोत | सदस्य | 9 | श्री ज्ञानचन्द टुकलिया | सदस्य एव स्थानीय व्यवस्थापक |

# सुमति जिन श्राविका संघ

—श्रीमती उषा

परिचय की आवश्यकता अब सुमति जिन श्राविका संघ को नहीं रही क्योंकि अब यह संस्था श्वेताम्बर समाज के सभी श्रावक श्राविकाओं के लिये सुपरिचित हो गई। क्योंकि किसी भी प्रकार की पूजा का आयोजन होते ही जो नाम सर्वप्रथम मस्तिष्क में आता है वह है ''सुमति जिन श्राविका संघ का।''

साध्वी श्री देवेन्द्र श्री जी द्वारा आयोजित बेल आज परवान चढ रही है। श्री धनरूपमलजी नागौरी जिसकी सफल माली की तरह सार संभाल कर रहे हैं।

गत वर्ष विराजित महत्तरा सा. श्री सुमंगलाश्री जी महाराज साहब व उनकी शिष्याओं द्वारा दिए दिशा निर्देश से गत पर्यूषण पर्व में सफल सांस्कृतिक संध्या का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता श्रीमती अरुणा के. एल. जैन ने की, मुख्य अतिथि श्रीमती जीवन बाई हीराचन्द चौधरी जी व विशिष्ट अतिथि श्रीमती दर्शना जी शाह थी। कार्यक्रम कैसा रहा इसका विवरण कर मैं अपनी आत्म प्रशंसा नहीं करना चाहती। आप सभी इसके दर्शक थे अतः फैसला आपके हाथ है। इसी अवसर पर हमने समाज में कर्मठ कार्य करने वालों का बहुमान करने की परम्परा चालू की और इसी कडी में सांस्कृतिक संध्या के बीच खरतरगच्छ संघ की अध्यक्षा एवम् प्रमुख समाज सेवी श्रीमती जतनबाई गोलेछा, तपागच्छ संघ के अध्यक्ष श्री हीराभाई चौधरी, जैन महिला औद्योगिक संस्थान की श्रीमती लाडबाई सिंघी, समाज सेवी श्री के. एल. जैन, विचक्षण महिला मण्डल की श्रीमती मीना सुराणा एवम् आत्मानन्द जैन सेवक मण्डल के अध्यक्ष श्री विजय सेठिया का बहुमान किया गया। इस सांस्कृतिक संध्या को यादगार बनाने हेतु श्रीमती उमराव बाई सरदारमल जी लुणावत द्वारा सांस्कृतिक संध्या में भाग लेने वाले प्रत्येक कलाकार को पूजा की कटोरी व दीपक (चांदी का) भेंट स्वरूप दिया गया जिसके लिये हम उनके हृदय से आभारी हैं। सुश्री सरोज कोचर को इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उनके इस सम्मान पर संघ द्वारा उनका हार्दिक बहुमान किया गया।

हमारी संस्था मूलरूप से पूजा पढाने के लिये गठित की गई है और हमें गर्व है कि हम आज सभी प्रकार की पूजायें पढाने में सक्षम है। ''वास्तु सार पूजा'' जो कि नये परिसर में प्रवेश के समय पढाई जाती है इस वर्ष की हमारी उपलब्धी रही। हर वर्ष की भॉति मन्दिरों के वार्षिक उत्सवों पर हमारे द्वारा पूजायें पढाई गई। समय समय पर हमें कई भाई बहनों द्वारा आयोजित पूजाएं पढाने हेतु अनुरोध किया जाता है जिसे हम सहर्ष यथा सम्भव स्वीकार कर पूजा पढाते हैं।

पूजा का अभ्यास बना रहे इस हेतु प्रत्येक माह की 15 तारीख को पूजा पढाई जाती है व 1 तारीख को सामायिक की जाती है।

बरखेडा तीर्थ जीर्णोद्धार मे भी एक ईट की राशि रु 3111/- भेट किये गये है।

हमेशा की तरह इस बार भी महावीर जयन्ती पर प्रभात फेरी मे सस्था की ओर से पूर्ण जोश खरोश के साथ भाग लिया गया।

पु पुण्यरत्नचन्दजी महाराज सा व साध्वी श्री पदमरेखा जी आदि ठाणा के आगमन पर सकल श्रीसघ के साथ सुमति जिन श्राविका सघ ने नगर प्रवेश पर भाग लिया एवम् स्वागत गीत, मगलगीत आदि प्रस्तुत करते हुए भावभक्ति का प्रदर्शन किया।

वर्तमान कार्यकारिणी निम्न पकार है —

सरक्षक- श्रीमती लाडबाई सा शाह

अध्यक्ष- श्रीमती सुशीला छजलानी

उपाध्यक्ष- श्रीमती रजना मेहता

महामत्री- श्रीमती उषा साँड

सयुक्त मत्री- श्रीमती विमला चौरडिया

अर्थमत्री- श्रीमती मधु कर्णावट

प्रचार प्रसार मत्री- श्रीमती सतोष छाजेड

सास्कृतिक मत्री- श्रीमती चेतना शाह

पूजा व्यवस्था पमारी- श्रीमती प्रतिमा शाह, श्रीमती सुशीला कर्णावट।

श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ सघ जयपुर का नया विधान बनकर पजीकरण हुआ है और निर्विरोध चुनाव भी सम्पन्न हो गये। विधान म श्राविका सघ की पदन अध्यक्षा को महासमिति की बैठको म स्थायी रूप से विशेष आमत्रितो मे सम्मिलित किया गया है जिससे महिलाओ का भी तपागच्छ सघ की महासमिति म प्रतिनिधित्व मिल गया है। जिसके लिए हम सघ की महासमिति के आभारी हैं।

अभी वर्तमान अध्यक्षा श्रीमती सुशीला छजलानी प्रतिनिधित्व करते हुए बैठको मे भाग ले रही है।

हमे आज तक आप सभी का भरपूर सहयोग मिलता रहा है जिससे हमारे लिये प्रगति का मार्ग प्रशस्त हुआ है। आगे भी आप सभी का सहयोग मिलता रहेगा इसी आशा के साथ।

वन्दे-वीरम्। ✲

सागर कभी लहरो को नही छोडता है
श्रमजीवी मर्यादाओ को नही छोडता है।
पर आधुनिक मानव वानर सा चचल हो
दिल तोडता है पर दिल जोडता नही है॥

## श्री जैन श्वे. तपागच्छ (पंजी) संघ, जयपुर

दि. 1 जून से 15 जुलाई 97 तक आयोजित

# महिला स्वरोजगार प्रशिक्षण शिविर

## एक सिंहावलोकन

*—सुश्री सरोज कोचर,*
*शिविर संयोजिका*

एगत्थ सव्वधम्मो साहम्मियवच्छल तु एगत्थ ।
बुद्धितुलाए तुलिया दोवि अतुल्लाइं भणिआइं ।।

एक तरफ सम्पूर्ण धर्म और एक तरफ स्वधर्मी वात्सल्य हो, दोनों को बुद्धि रूपी तराजू पर तोलने से स्वधर्मीवात्सल्य का पलडा भारी रहता है। दोनों समान नही रहते।

न कयं दीणुद्धरणं न कयं साहम्मिआण वच्छल्लं ।
हि अ अम्मि वीयरागो न धारिओ हारिओ जम्मो ।।

यदि दीन-अनाथों का उद्धार नहीं किया, यदि स्वधर्मी बन्धुओ के प्रति वात्सल्य भाव नही हो, यदि हृदय में वीतराग देव को स्थान नहीं दिया तो अनमोल मानव जीवन व्यर्थ ही चला जायेगा।

इस प्रकार अपने स्वधर्मी बन्धुओं के प्रति यथायोग्य आदर सत्कार करना और प्रेम भाव प्रकट करना स्वधर्मी-वात्सल्य कहा जाता है। वास्तव में कोई भी सत्यनिष्ठ, वीतरागी सहृदय उपासक अपने धर्मबन्धु या धर्मभगिनी को अपनी ऑखों से दुःखमय स्थिति में नहीं देख सकता है। अपने स्वधर्मियों को दुःखी देखकर सामर्थ्यवान जो श्रावक उनकी सहायता नहीं करता है, उपेक्षा करता है, वह श्रावक नहीं है। सच्चा श्रावक़ क्षुधा पीडित, उचित साधनों से वंचित, निर्धनता की चक्की में पिसने वाले अपने बन्धुओं को देखकर चैन की नीद सो नही सकता। यदि कभी सोने का प्रयत्न करता भी है तो गुरू उपदेश पाकर जागृत हो जाता है।

वात्सल्य भाव की इसी पुनीत भावना से ओत-प्रोत मानव मात्र के प्रति बन्धु भाव रखने वाले पंजाब केसरी परम पूज्य आचार्य श्री आत्म वल्लभ समुद्र सूरीश्वर जी म. सा. के पट्टपरम्परा पर अलंकृत चारित्र चूडामणि, परमार क्षत्रियोद्धारक, वर्तमान गच्छाधिपति परम श्रद्धेय आचार्य श्रीमद् विजयइन्द्रदिन्न सूरीश्वर जी म. सा. की पावन प्रेरणा से श्री समुद्र-इन्द्र-दिन्न साधर्मी सेवा कोष की स्थापना श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ में की गई। आप द्वारा स्थापित कोष के माध्यम से जहॉ साधर्मी सेवा का कार्य कियाँ जा रहा है वहीं पर महिलाएँ हस्त कला का प्रशिक्षण प्राप्त करके अर्थ उपार्जन कर सके इस तथ्य को मद्देनजर रखकर प्रतिवर्ष निःशुल्क प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया जाता है। यद्यपि इस वर्ष विद्यालय महाविद्यालय के ग्रीष्मावकाश में कमी होने के कारण प्रतिवर्ष की भॉति अधिक बहिनें लाभान्वित नहीं हो सकी फिर भी दिनांक 1 जून 97 से दिनांक 15 जुलाई 97 तक आयोजित इस शिविर में लगभग 1200 बहिनों ने भाग लिया। इस शिविर में आंग्ल भाषा सुधार, साफ्ट टॉयज, मेहन्दी, पैन्टिंग, पर्स बैग कपडे के, रैगजीन पर्स बैग, साधारण सिलाई, विशिष्ट सिलाई, पाककला, फल संरक्षण, कढाई, फ्लावर मैकिंग, गिफ्ट पैकिंग, मोती के आभूषण, सूतली वर्क का प्रशिक्षण

दिया गया।

शिविर का समापन समारोह दिनाक 27 जून 1997 को प्रात 9 बजे सम्माननीय श्री गुलाबचन्द जी कटारिया शिक्षा मत्री राजस्थान सरकार के मुख्य आतिथ्य एव श्री के एल जैन, अध्यक्ष, जयपुर स्टॉक एक्सचेन्ज की अध्यक्षता म सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर प्रशिक्षण प्राप्त करने वाली एव स्वरोजगार के क्षेत्र मे सलग्न बहिनो द्वारा निर्मित सामग्री की प्रदर्शनी भी लगायी गयी थी। इस अवसर पर सभी आगन्तुक महानुभावो ने प्रारम्भ मे प्रदर्शनी का अवलोकन कर भूरि-भूरि प्रशसा की।

कार्यक्रम का शुभारम्भ मगलाचरण स्वरूप पच परमेष्ठी नमस्कार महामन्त्र से हुआ। तत्पश्चात् सघ के अध्यक्ष श्री हीराभाई चौधरी ने समारोह के मुख्य अतिथि, अध्यक्ष को माल्यार्पण कर स्वागत भाषण किया। सघ मत्री श्री मोतीलाल जी भडकतिया ने श्री इन्द्रदिन्न साधर्मी कोष के उद्देश्यो पर प्रकाश डालते हुए सघ की गतिविधियो की जानकारी दी। शिविर सयोजिका सुश्री सरोज कोचर ने शिविर की रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए शिविर के महत्त्व पर प्रकाश डाला।

शिक्षा मत्री माननीय श्री गुलाबचन्द जी कटारिया मे हस्त निर्मित वस्तुओ एव प्रशिक्षण की प्रशसा करते हुए कहा कि शिक्षा के क्षेत्र मे आगे आने वाले बच्चे यदि आर्थिक रूप से सक्षम नहीं हो तो समाज उन्हे निखारने का प्रयत्न करे। गरीबी से कोई छोटा नहीं होता है मन की भावनाओ से व्यक्ति छोटा व बडा होता है। इन बहिनो को प्रशिक्षण दिया जाता है ये भी अर्थ से ऊपर उठकर प्रशिक्षण प्राप्त करे। शिक्षा सस्कार से प्राप्त स्वरोजगार मे व्यक्ति विकास कर सकता है। हमे दूसरो के भरोसे जिन्दगी नहीं छोडनी है। हाथ मे कला होनी चाहिये फिर निराशा का कोई स्थान नहीं है। यदि उचित स्थान, उचित मार्गदर्शन मिल जाये तो बाजार मे कला का उचित मूल्य भी प्राप्त होता है। विदेशी पर्यटक हाथ की वस्तुआ को अत्यधिक खरीदते है। यह सघ बच्चो की सेवा करके वास्तव म भगवान की सेवा कर रहा है। मेरा भगवान मेरा बालक है उसे सुधारना है। उसका विकास करना है।

समारोह के अध्यक्ष श्री के एल जैन ने कहा कि हमे काम करने का अहसास होना चाहिये उसी के अनुरूप यदि सकल्प ले तो सफलता स्वयमेव जीवन का आलिगन करती है यह अनेक स्थानो पर दृष्टव्य हे। जहॉ शनै शनै साक्षरता के क्षेत्र मे राजस्थान आगे बढा है वहीं यदि अर्थ के क्षेत्र मे वे आगे बढ जाये तो खुशहाली मे वृद्धि होगी। इस जमाने मे एक कमाए दस को खिलाए यह सम्भव नहीं है। अब हमारे सोच मे परिवर्तन आ रहा हे स्त्रियॉ भी अपने परिवार का पालन पोषण करने की जिम्मेदारी निभा रही है। हम स्वय सुखी हो दूसरा को सुखी रखे। राजस्थान के टेक्सटाइल डिविजन मे सो से अधिक कारखाने है। पर सबके अपने नहीं है बहिनो को रख रखा है। काम लेने, काम देने की निपुणता होनी चाहिये। पैकेजिग पर अधिक ध्यान देने की जरूरत है। विपणन की दृष्टि से बाजार के रूप मे गुणवत्ता की ओर ध्यान देने की आवश्यकता है। श्रेष्ठ क्वालिटी के लिए लघु उद्योग से प्रशिक्षण दिलवाया जाये है। श्रेष्ठ क्वालिटी के लिए लघु उद्योग से प्रशिक्षण दिलवाया जाय। सामाजिक एकता, सामाजिक प्रतिबद्धता का प्रतीक है। अत हमे इस क्षेत्र मे एक होकर कार्य करना चाहिये।

मा श्री गुलाबचन्द जी कटारिया ने प्रशिक्षको को उनकी नि शुल्क सेवाओ हेतु श्री सघ

की तरफ से सम्मानित किया। श्री के. एल जैन एवं श्रीमती अरूणा जी जैन ने परीक्षाओं में प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले शिविरार्थियों को पुरस्कृत किया। शिक्षण मंत्री श्री गुणवन्तमल जी सांड ने सभी आगुन्तकों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए पूर्व शिक्षणमंत्री श्री सुरेशजी मेहता की सेवाओं की सराहना की।

शिविर में निम्नलिखित बहिनों ने प्रशिक्षण देने में अपनी सेवाएँ इस प्रकार दी-

| | |
|---|---|
| (1) डॉ सरोज वर्मा | आंग्ल भाषा सुधार |
| (2) कु. नीति जैन | सॉफ्ट टॉयज |
| (3) कु प्रिया सोनी | मेहन्दी |
| (4) श्रीमती सुषमा जी मुकीम | पर्स बैग |
| (5) श्रीमती अंजना जी | रैगजीन पर्स बैग |
| (6) श्रीमती लाजवन्ती जी | विशिष्ट सिलाई |
| (7) श्रीमती अभिलाषा जी | सिलाई |
| (8) श्रीमती अनिता बदलिया | पाककला एवं फल सरक्षण |
| (9) श्रीमती नीलम जैन | पाककला एवं फल सरक्षण |
| (10) सुश्री हर्षा मुकीम | कढाई |
| (11) सुश्री निशा बाकलीवाल | पैन्टिग |
| (12) सुश्री रेणु जैन | फ्लावर मैकिंग |
| (13) सुश्री विनीता जैन | गिफ्ट पैकिग |
| (14) सुश्री परवीन | मोती के आभूषण |
| (15) सुश्री आशा बसल | सूतली वर्क |

शिविर में जहॉ कु. आशा बंसल ने व्यवस्थाओं को सम्भाला वहीं पर श्री वीर महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना (प्रथम) इकाई का योगदान सराहनीय रहा। यहाँ से बहिनें प्रशिक्षण प्राप्त करके ग्रामीण एवं शहरी अंचल में प्रशिक्षण देने का कार्य करती है साथ ही अपने घरों में भी रोजगार के रूप में अर्जित कला का पूर्ण लाभ ले रही है। जो बहनें यहॉ से प्रशिक्षण प्राप्त करके दक्षता को प्राप्त हो रही है वे यहीं पर अपनी सेवाएँ देती हैं। यहॉ पूरे साल निःशुल्क सिलाई का प्रशिक्षण सामग्री दी गई जिससे वे विकास की अग्रधारा में जुड सकें।

यदि परिवार को विघटन से बचाना है, शान्ति सन्तोष का वातावरण निर्मित करना है, तो सभी को स्वावलम्बी बनाना आवश्यक है। इसके लिए संघ धरातल, एवं सुविधाएँ उपलब्ध करा सकता है पर चलना स्वयं को पडेगा। अधिक से अधिक बहिनें स्वरोजगार से जुडकर स्वाभिमान पूर्वक जिन्दगी व्यतीत करें इसी शुभभावना के साथ- जय वीरम् ☆

## श्वेताम्बर आमनाय जयपुर के ज्ञातव्य विशिष्ट तपस्वी

प्राप्त सूचनानुसार दिनाक 20-08-97 तक निम्नांकित की विशिष्ट तपस्या सम्पन्न होकर सुखसातापूर्वक पारणे हो गये हैं :—

**(1) मुनि श्री पारस कुमारजी 41 उपवास**

(1) श्रीमती उषाजी धर्मपत्नी श्री गौतमचन्दजी सुराना — मास खंमण
(2) श्रीमती पवनजी धर्मपत्नी श्री विमलचन्दजी सुकलेचा — मास खंमण
(3) श्रीमती किरणजी धर्मपत्नी श्री लाभचन्दजी कोठारी — मास खंमण
(4) श्रीमती मन्जूजी धर्मपत्नी श्री विरेन्द्रकुमारजी जामड़ — मास खंमण

उत्कृष्ट तपस्या के लिए हार्दिक अभिनन्दन।

सम्पादक मण्डल

# वरखेडा तीर्थ जीर्णोद्धार में विभिन्न संस्थाओं से प्राप्त योगदान

5,00,000/- श्री आणद जी कल्याण जी पेढी, अहमदाबाद
5,11 000/- श्री चन्द्र प्रभु स्वामी का नया मदिर, मद्रास एव इनके ट्रस्टियो के मार्फत आश्वस्त
2 00,000/- श्री जैन श्वे नाकोडा पार्श्वनाथ तीर्थ पेढी, मेवानगर
51,000/- श्री माटूगा जैन श्वे मूर्तिपूजक तपागच्छ सघ एव चैरीटीज, मुम्बई
31,111/- श्री महावीर जिनालय, देव दर्शन अर्पाटमेन्ट, मद्रास
11,111/- श्री पार्श्वनाथ जैन मदिर, रम्मन पेठ, मद्रास
25,000/- श्री सान्ताक्रुज जैन श्वे तपागच्छ सघ, श्री कुन्थुनाथ जैन देहरासर, मुबई
11,000/- श्री जैन श्वे मूर्तिपूजक सघ (शीव), सायन वेस्ट, मुबई
5 000/- श्री जैन सघ मामलम्, मद्रास
5 000/- श्री चिन्तामणी पार्श्वनाथ जैन देरासर ट्रस्ट मुम्बई
10 000/- श्री प्रेम वर्धक जैन श्वे मूर्तिपूजक सघ धरणीधर, देरासर अहमदाबाद
25,000/- श्री आदिपदमशान्ति जैन देवस्थान पेढी लूणावा
5 100/- श्री चिन्तामणी पार्श्वनाथ जैन श्वे मन्दिर, हरिद्वार
25,000/- श्री शाहीबाग गिरधर नगर जैन श्वे मूर्तिपूजक सघ अहमदाबाद
5 000/- श्री कोटनगीन जैन श्वे मूर्ति पूजक सघ मार्फत श्री आत्मानद जैन सभा, मुबई
31 000/- श्री तीर्थकर शीतलनाथ जैन श्वे ट्रस्ट, पीलीबगा
11,000/- श्री चौमुखा जैन तपागच्छ मदिर गढसिवाना
21,000/- श्री महावीर जैन श्वे मदिर मुलतान वालो का, जयपुर
5 000/- श्री वासुपूज्य जैन श्वे मूर्तिपूजक सघ, बैग्लौर
50 000/- श्री शान्तिनाथ जैन श्वे मदिर रूपनगर (श्री आत्मानद जैन सभा रूपनगर) दिल्ली
31 000/- श्री आदिश्वरजी महाराज जैन मदिर एण्ड चेरेटी ट्रस्ट, मुम्बई
21 000/- श्री जैन श्वे मूर्तिपूजक तपागच्छ सघ क्रिया भवन, जोधपुर
9,333/- श्री वासुपूज्यजी जैन भगवान मदिर उम्मेदपुरा, गढसिवाना
3,111/- श्री वीर मण्डल, गगानगर
3 111/- श्री जैन श्वेताम्बर ट्रस्ट रियाबडी
3 111/- श्री वासूपूज्य स्वामी जैन श्वे मूर्ति पूजक देरासर एव उपाश्रय ट्रस्ट मुबई
25 500/- श्री पावापुरी जैन मदिरजी सादडी
25 500/- श्री न्यू आबादी जैन मदिरजी, सादडी
51 000/- श्री वैपेरी श्वे मूर्ति पूजक जैन सघ चैन्नई

श्री शखेश्वर पार्श्वनाथ ट्रस्ट से 1918 स्का फिट मार्बल 150 रू प्रति स्का फिट की दर से स्वीकृति प्राप्त हो गई है।

# तीर्थ

# र)

27.1" Sikhar

4.1" Patti

12 9" Mandovar

3 1/7 Pith

6.1" Jagnti
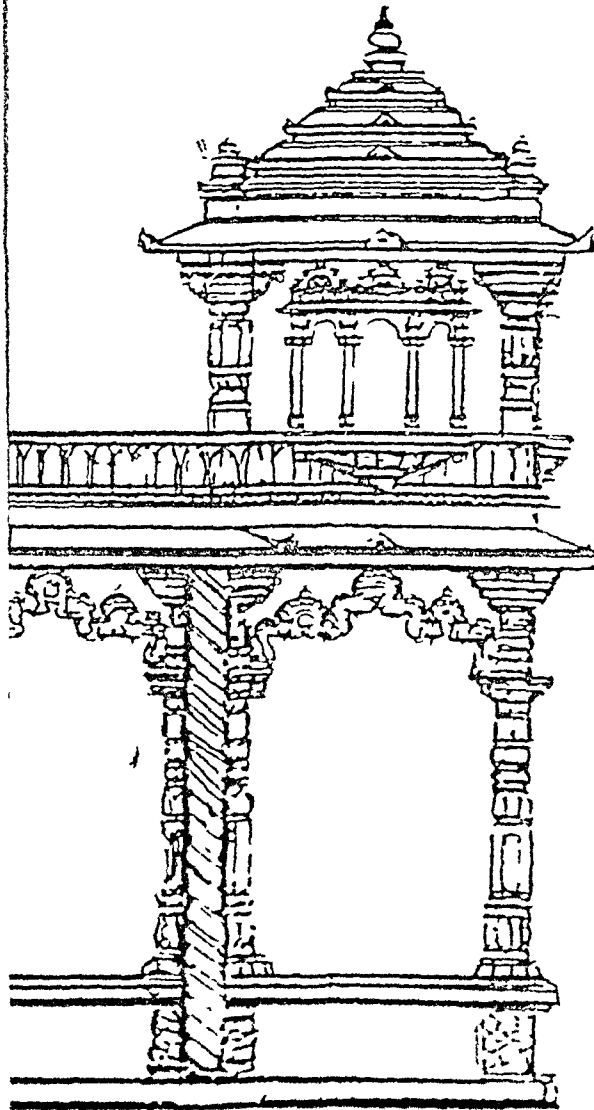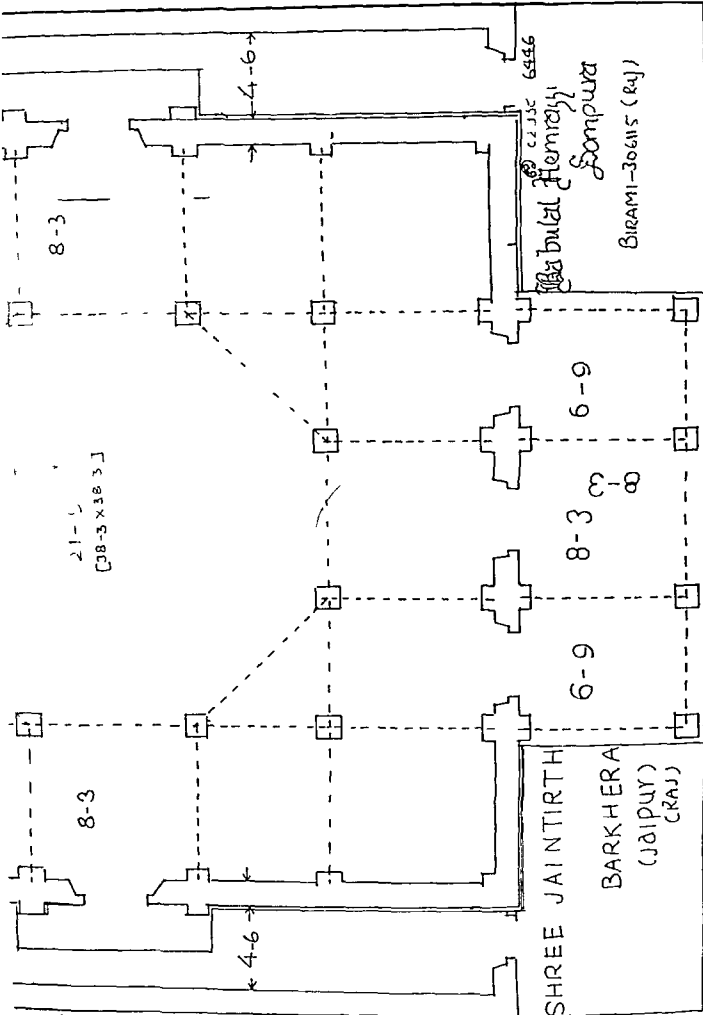
53.9" Total Hight

8.3"

8.3"

75 3" Length

8-3
21-9
[38-3 x 38 3]
8-3
4-6
4-6
SHREE JAINTIRTH
BARKHERA
(Jaipur)
(RAJ)
6-9
8-3
8-3
6-9
Babulal Hemraji
Sompura
6446
BIRAMI-306115 (Raj)

# श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ (पंजी.) जयपुर

## वार्षिक प्रतिवेदन वर्ष 1996-97

(महासमिति द्वारा अनुमोदित)

*—श्री मोतीलाल भडकतिया, संघ मंत्री*

युग प्रधान दादा साहब श्री पार्श्वचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा के समुदायवर्ती अध्यात्म योगी प. पू. गुरुदेव श्री रामचन्द्रजी म.सा. के शिष्यरत्न एवं वर्तमान गच्छनायक श्री विजयचन्द्रजी म. सा. के आज्ञानुवर्ति उत्कृष्ट **संयमी पूज्य मुनिराज श्री पुण्यरत्नचन्द्रजी म. सा.**

एवं

शासन प्रभाविका प.पू. सा श्री ऊंकार श्रीजी म सा. की शिष्या अध्यात्मरत्ना पूज्य साध्वी श्री **पदमरेखाश्रीजी म.सा. पूज्य साध्वी श्री पावरगिराश्रीजी म. एवं पू. साध्वी श्री प्रशांतगिराश्रीजी म.सा.**

एवं

**समस्त श्री सकल संघ,**

वर्ष 1997-99 के लिए निर्विरोध नव-निर्वाचित महासमिति की ओर से श्रीसंघ के वर्ष 1996-97 का अंकेक्षित आय-व्यय विवरण एवं विगत पर्यूषण से लेकर अभी तक हुए कार्य कलापों का संक्षिप्त विवरण आपकी सेवा में प्रस्तुत है।

**संघ का पंजीकरण एवं विधान**

विगत कई वर्षो से संघ का पंजीकरण कराने का प्रश्न विचाराधीन चल रहा था तथा विधान में भी परिवर्तन करना था। विधान में संशोधन हेतु पूर्व में विचार मंथन चलता रहा था। आखिर वह घडी आ ही गई जब संघ का पंजीकरण कराने का निश्चय किया गया। इस हेतु राज्य सरकार द्वारा निर्धारित प्रपत्र के अनुसार विधान का निर्माण करना आवश्यक था। यह कार्य श्री आर सी. शाह, एडवोकेट (सदस्य महासमिति) एवं श्री हीराभाई चौधरी को सौपा गया। पूर्व में गठित समितियों की सिफारिशों एवं राजकीय नियमों के अन्तर्गत विधान का प्रारूप तैयार कर पारित किया गया। आवश्यक संशोधन-परिवर्तन के पश्चात् राज्य सरकार द्वारा स्वीकृति प्रदान की गई और संघ का पंजीकरण सं. 486/जयपुर/96 से हो गया।

**महासमिति का चुनाव**

पंजीकरण के पश्चात् एवं पूर्व महासमिति का त्रि-वर्षीय कार्यकाल पूरा होने के साथ ही चुनाव की प्रक्रिया प्रारम्भ की गई। विधान की धारा 4 व 6 के अनुसार संघ के सदस्य बनाना आवश्यक था। चुनाव प्रक्रिया में वे ही भाग ले सकते थे जो विधान की धारा 4 व 6 के अनुसार पात्र माने जावें। प्रवेश शुल्क एवं सदस्यता शुल्क प्रदान करने तथा महासमिति द्वारा उनकी सदस्यता स्वीकृत करने पर ही वे संघ के सदस्य मान्य होंगे। अतः विस्तृत प्रचार-प्रसार कर तपागच्छ मूर्ति-पूजक आमनाय के भाई-बहिनों से आवेदन पत्र आमंत्रित किए गए। जिन भाई-बहिनों ने प्रवेश एवं सदस्यता शुल्क जमा करा कर आवेदन किया उनकी छानबीन श्री नरेन्द्रकुमारजी लूनावत की अध्यक्षता में गठित समिति द्वारा की गई एवं उनकी सिफारिश के अनुसार महासमिति द्वारा सदस्यता प्रदान की गई। इस प्रकार नव-निर्मित सदस्यता

ूची तैयार कर प्रकाशन किया गया तथा श्री आर के चतर, सी ए को चुनाव अधिकारी नियुक्त कर महासमिति के चुनाव कार्यक्रम की घोषणा की गई।

यह जयपुर तपागच्छ सघ के लिए अत्यन्त गौरव एव सतोष का विषय है कि यो तो सघ की सेवा के लिए अनेक महानुभाव आगे आए एव अपने नामाकन पत्र प्रस्तुत किए लेकिन आखिर मे सघ के चुनाव निर्विरोध सम्पन्न हो सके उसके लिए स्वेच्छा से अपनी उम्मीदवारी वापिस ली। इस प्रकार निर्विरोध चुनाव सम्पन्न होकर धारा 12 के अनुसार तीन वर्ष के लिए वर्ष 1997-99 के लिए कार्यरत महासमिति का गठन हो गया। सहवरण के पश्चात् गठित 25 सदस्यीय निर्वाचित महासमिति के साथ विधान की धारा 10 के अनुसार आत्मानन्द जैन सेवक मण्डल तथा श्री सुमतिजिन श्राविका सघ के अध्यक्ष तो स्थायी आमत्रित होगे ही, साथ ही मदिर श्री ऋषभदव भगवान ट्रस्ट मारुजी का चौक जयपुर (जहा पर तपागच्छ सघ का उपाश्रय स्थित है) के मानद मत्री महोदय को भी महासमिति के स्थायी आमत्रितो मे सम्मिलित किया गया है।

नव-निर्वाचित महासमिति द्वारा रविवार, दिनाक 8 जून, 1997 को कार्यारम्भ किया गया। अपनी प्रथम ओपचारिक बैठक मे महासमिति द्वारा पारित प्रस्ताव सकल सघ की सूचनार्थ अविकल रूप से उद्धृत है —

प्रस्ताव

श्री जैन श्वे तपागच्छ सघ (पजी ) जयपुर की यह नव-निर्वाचित महासमिति पजीकरण के पश्चात् महासमिति वर्ष 1997-99 के त्रैवार्षिक प्रथम चुनाव निर्विरोध सम्पन्न होने पर हार्दिक प्रसन्नता व्यक्त करती है।

श्री सघ के वे सभी महानुभाव जो जिन शासन सेवा की उदात्त भावना से उम्मीदवार के रूप मे प्रत्याशी बन कर आगे आए, साथ ही इस श्रीसघ की उत्कृष्ट परम्परा, प्रतिष्ठा एव भातृत्व भावना मे चुनाव क कारण किसी प्रकार की न्यूनता नही आए इस हेतु निर्विरोध चुनाव सम्पन्न कराने का मार्ग प्रशस्त करने हेतु स्वेच्छा से त्याग भावना का परिचय देते हुए अपनी उम्मीदवारी वापिस लेकर जो अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया है उसके लिए महासमिति हार्दिक आभार एव कृतज्ञता व्यक्त करती है।

महासमिति श्री सघ को भी विश्वास दिलाती है कि जो दायित्व उन्हे सोपा गया है उसको अपनी सम्पूर्ण शक्ति एव सामर्थ्य से निभाने का प्रयास करेगे तथा एकताबद्ध रहकर अपने कृत्यो से जिन शासन एव श्री सघ की प्रतिष्ठा को उत्तरोत्तर आगे बढाने मे प्रयत्नशील रहेगे।

दूसरा प्रस्ताव

श्री जैन श्वे तपागच्छ सघ की यह नव-निर्वाचित महासमिति श्रीसघ के पजीकरण के पश्चात् सम्पन्न हुए प्रथम चुनाव को सम्पन्न कराने मे श्री राजेन्द्रकुमारजी चतर, सी ए (निर्वाचिन अधिकारी) एव श्री राकेश कुमारजी चतर, सी ए (सहायक निर्वाचन अधिकारी), जिन्हाने अपूर्व योगदान कर सफलतापूर्वक चुनाव कार्य सम्पन्न कराया है, के प्रति हार्दिक आभार एव धन्यवाद ज्ञापित करती है।

आशा है कि भविष्य मे भी इनका इसी प्रकार का योगदान एव सहयोग प्राप्त होता रहेगा।

## विगत चातुर्मास

वर्ष 1996 सम्वत् 2053 में परम पूज्य महत्तरा साध्वी श्री सुमंगलाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा-6 का यहां पर चातुर्मास था। विगत पर्यूषण पर्व तक की गतिविधियों का विवरण पिछले अंक में प्रकाशित किया गया था।

तत्पश्चात् पर्यूषण पर्व की आराधनाए आपकी पावन निश्रा में बहुत ही हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुई। पर्यूषण पर्व के प्रथम दिन 10-9-96 को अष्टान्हिका प्रवचन के साथ श्री पार्श्वनाथ पंच कल्याणक पूजा एक सद्गृहस्थ की ओर से, दूसरे दिन 11-9-96 को अन्तराय कर्म निवारण पूजा श्री विजयराजजी लल्लूजी मूथा परिवार एवं तृतीय दिवस 12-9-96 को श्री महावीर पंच कल्याण पूजा श्री ज्ञानचन्दजी तिलकचन्दजी अरुणकुमारजी पालावत परिवार द्वारा पढाई गई। कल्प सूत्रजी घर लेजाकर भक्ति करने का लाभ श्री पूनमचन्दभाई नगीनदास शाह परिवार द्वारा लिया गया। भगवान महावीर जन्म वांचना दिवस पर पूर्ववत् मास क्षमण एवं अति विशिष्ठ तपस्वियों का बहुमान किया गया। ''माणिभद्र'' के 38वें पुष्प का विमोचन श्री पूनमचन्द भाई शाह के कर कमलों से सम्पन्न हुआ। स्वप्नाजी का चढावा भी अच्छा रहा। सम्वत्सरी की आराधना के पश्चात् पारणा कराने का लाभ श्रीमती भीखीबाई वैद परिवार द्वारा लिया गया।

पर्यूषण के पश्चात् चातुर्मास काल में आई हुई संक्रांतियों के महोत्सव मनाए गए। चातुर्मास काल में हुई अनेकविध तपश्चर्या एवं न्यायाम्भोनिधि पू. जैनाचार्य श्रीमद् विजयानन्द सूरीश्वरजी म.सा. की स्वर्गारोहण शताब्दी समापन वर्ष एवं पंजाब केसरी प.पू. आचार्य भगवन्त श्रीमद् विजय वल्लभसूरीश्वरजी म.सा. की 43वीं पुण्यतिथि निमित्त आसोज बदी 9 रविवार दिनांक 6-10-96 से आसोज सुदी 2 सोमवार, दिनांक 14-10-96 तक महापूजनों के साथ नवान्हिका महोत्सव का अनूठा आयोजन सम्पन्न हुआ। प्रथम दिवस से क्रमशः श्री सर्वतोभद्र पूजन श्री बाबूलाल तरसेमकुमारजी पारिख, श्री अष्टादस अभिषेक पूजन-श्री धनरूपमलजी कनकमलजी सुनीलकुमारजी नागौरी, श्री उवसग्गहर पूजन-श्री हीराभाई मंगलचन्दजी चौधरी, श्री सिद्धचक्र महापूजन - श्रीमती कमला बहिन भोगीलाल शाह श्री ऋषि मण्डल पूजन - श्री प्रकाशनारायणजी नरेशकुमारजी, दिनेशकुमारजी राकेशकुमारजी मोहनोत, श्री चौबीस तीर्थकर पूजन - श्री दशरथचन्दजी लखपत चन्दजी रमेशचन्दजी भण्डारी, श्री पार्श्व पद्मावती पूजन श्रीमती कमलाबाई- हीराचन्दजी विजयकुमारजी कोठारी, श्री बृहद् शान्ति स्तोत्र पूजन - श्री संघ की ओर से एवं श्री भक्तामर स्तोत्र पूजन श्री पुष्पमलजी दिलीपकुमारजी श्रीपालजी लोढा परिवार द्वारा पढाकर जिनेश्वर भक्ति का अपूर्व लाभ लिया गया। विधि विधान श्रीमान धनरूपमलजी नागौरी ने सम्पन्न कराए तथा श्री गोपालजी संगीतकार, मेहरूकला से पधारे। श्री सुमति जिन श्राविका संघ सहित विविध मण्डलों द्वारा भक्ति संगीत के कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए।

आसोजी औली कराने का लाभ श्री भागचन्दजी छाजेड (ओसवाल अगरवत्ती) परिवार द्वारा लिया गया।

जिनेन्द्र भक्ति के साथ-साथ महिलाओ एव बालक-बालिकाओ मे आध्यात्मिक ज्ञान एव धार्मिक सस्कारो की अभिवृद्धि हेतु प पू महत्तरा साध्वीजी म सा की प्रेरणा एव साध्वी श्री प्रफुल्लप्रभाश्रीजी म एव सा श्री पीयूषपूर्णाश्रीजी म आदि ठाणा की निश्रा मे विभिन्न प्रतियोगिताओ एव धार्मिक शिविरो का आयोजन किया गया । दिनाक 29-9-96 को श्री आदिनाथ भगवान से सम्बन्धित प्रश्नोत्तरी, (2) दिनाक 8-10-96 को नारी जीवन का उत्थान विषय पर भाषण प्रतियोगिता एव आ श्रीमद् विजय वल्लभसूरीजी का स्वर्गवास दिवस (3) दिनाक 13-10-96 को 'आ' से सम्बन्धित प्रश्न पेपर (4) 20-10-96 को ढाई इच के स्टाम्प पर ढाई मिनिट मे नमस्कार महामत्र लिखना, (5) 22 23, 24, अक्टूबर, 96 को त्रिदिवसीय गहुली प्रशिक्षण शिविर 27-10-96 को युवा मच प्रश्नोत्तर एव (7) 3-11-96 को गच्छाधिपति आचार्यदेव श्रीमद् विजय इन्द्रदिन्नसूरीश्वरजी म के 74वे जन्म दिवस के उपलक्ष मे छप्पन दिक्कुमारी का स्नात्र महोत्सव मनाया गया । चौमासी चौदस को क्रमिक अट्ठम करने वालो का एकत्रित निधि से तथा महत्तरा साध्वीजी म सा की प्रेरणा से बरखेडा तीर्थ मे भगवान की पुनर्प्रतिष्ठा होने तक वर्ष भर निश्चित तारीख को बारह मास तक आयम्बिल करने वालो का भी बहुमान किया गया जिसका लाभ श्री सुरेन्द्र कुमारजी लूनावत एव वर्धमान मेडिकल वालो ने लिया ।

दिवाली, नव-वर्षाभिनन्दन एव चातुर्मासिक चौदस की आराधनाए एव अन्यान्य कार्यक्रमो को सम्पन्न करान के पश्चात् सोमवार दिनाक 25 नवम्बर, 96 को चातुर्मास परिवर्तन हेतु आपने यहा से विहार किया । चातुर्मास परिवर्तन कराने का लाभ श्री देवेन्द्रकुमारजी जैन (ओसवाल साबुन) परिवार द्वारा लिया गया । आपके निवास स्थान 18, मनवाजी का बाग पहुचने पर आपका मगल प्रवचन हुआ । विहार मे साथ पधारे हुए सभी भाई बहिनो की साधर्मी भक्ति की गई ।

बरखेड़ा तीर्थ के चल रहे निर्माण कार्य को गतिमान बनाए रखने हेतु आपसे अधिक से अधिक समय तक जयपुर मे ही विराजने की विनती की गई जिसे मान देकर आपने स्वीकार किया । इस बीच आप विभिन्न कालोनियो मे विचरण करती रही । आपके जयपुर प्रवास काल के बीच चार सक्रातिया आई जिनमे प्रथम 15-12-96 की सक्रान्ति श्री कपिलभाई शाह के यहा (2) 14-1-97 की श्री खेतमलजी जैन, बापू नगर के यहा, (3) दिनाक 12-2-97 की सक्रान्ति श्री बाबूलाल जी तरसेमकुमारजी पारख के यहा तथा 14-3-97 की सक्रान्ति श्री जैन श्वे सस्थान, सोडाला के तत्वावधान मे रत्नापुरी, सोडाला मे मनाई गई ।

इस प्रवास के पश्चात् आगामी चातुर्मास दिल्ली मे करने हेतु आपने दिनाक 8-4-97 को यहा से विहार किया । इससे पूर्व आपके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने तथा जब तक बरखेडा तीर्थ जीर्णोद्धार के अन्तर्गत जिनेश्वर देव की पुन प्रतिष्ठा नहीं हो जाए, अपनी निश्रा एव मार्ग दर्शन प्रदान करते रहने हेतु दिल्ली का चातुर्मास पूर्ण कर पुन जयपुर पधारने की विनती करने हेतु धर्म सभा का आयाजन किया गया । सभा एव विहार मे बडी सख्या मे भाई बहिन सम्मिलित हुए। प्रथम दिवस आप श्री कपिलभाई शाह के निवास स्थान पर विराजी । इसी के साथ दि 13-4-97 की सक्रान्ति को दृष्टिगत रखते हुए आपसे चार दिवस

का प्रवास और करने की विनती की गई। संघ के आग्रह एवं भक्ति को देखते हुए आपने इसकी भी स्वीकृति प्रदान कर दी तथा दिनांक 13-4-97 की संक्रान्ति आमेर में मनाई गई। इस अवसर पर श्रीसंघ की ओर से साधर्मी वात्सल्य का आयोजन रखा गया।

यद्यपि दिनांक 6-7-97 को यहां पर भी नगर प्रवेश का कार्यक्रम था फिर भी प. पू. महत्तरा साध्वीजी म.सा. के नगर प्रवेश पर श्री तरसेम कुमारजी पारख, उपाध्यक्ष के नेतृत्व में एक बस लेकर श्रद्धालुजन उपस्थित हुए। इसी प्रकार प.पू. श्री पूर्णप्रज्ञाश्रीजी म.सा. के नगर प्रवेश पर श्री हीराभाई चौधरी अध्यक्ष के नेतृत्व में ग्यारह सदस्य प्रतिनिधि मण्डल श्री गंगानगर में उपस्थित हुए।

**वर्तमान चातुर्मास**

विगत चातुर्मास पूर्ण होने के साथ ही इस वर्ष के चातुर्मास हेतु प्रयास प्रारम्भ किए गए। श्री तरसेमकुमार जी पारख, उपाध्यक्ष के संयोजकत्व में समिति का गठन कर यह कार्य उन्हें सौपा गया।

सौभाग्य से इसी बीच विहार करते हुए युग प्रधान दादा साहब श्री पार्श्वचन्द्रसूरीश्वर म. सा. के संतानीय अध्यात्म योगी श्री रामचन्द्रजी म. सा. के शिष्यरत्न ओजस्वी प्रवचनकार मुनिराज श्री पुण्यरत्नचन्द्रजी म. सा. एवं इन्हीं के समुदाय की सुशिष्यायें अध्यात्मरत्ना साध्वी श्री पदमरेखाश्रीजी म सा. आदि ठाणा-3 का जयपुर में प्रथम बार आगमन हुआ। आपकी ओजस्वी प्रवचनशैली, शान्त स्वभाव एवं तपमय जीवन शैली ने इतना प्रभावित किया कि आप दोनों से ही यह चातुर्मास जयपुर में करने की विनती की गई। गुरू आज्ञा के आधार पर आपने भी इसकी स्वीकृति प्रदान कर दी तथा दि 26-3-97 को मालपुरा जय बुलाई गई। इस अवसर पर एक बस आपकी सेवा में उपस्थित हुए जिसका द्रव्य श्री हीराभाई चौधरी (मंगलचंद ग्रुप) द्वारा किया गया।

इस बीच आप मालपुरा, कैकडी, सरवाड फतेहगढ आदि विभिन्न स्थानों पर विचरण करते रहे तथा चातुर्मास का समय निकट आने पर आपका जयपुर शहर में पर्दापण हुआ। नगर प्रवेश से पूर्व आप विभिन्न कालोनियों में विचरण कर धर्मोपदेश देते रहे।

विक्रम संवत् 2054 की आषाढ शुक्ला द्वितीया रविवार दि. 6 जुलाई, 97 को प्रातः 9 बजे चैम्बर भवन से भव्य शोभा यात्रा के साथ आपका नगर में प्रवेश हुआ। हाथी, घोडे, बैंड बाजे और बडी संख्या में भाई बहिन जुलूस में सम्मिलित हुए। इस अवसर पर बम्बई, झांसी, नागौर, बीकानेर, मेडता, केकडी, रूण, इन्दौर आदि विभिन्न स्थानों से श्रद्धालु जन उपस्थित हुए।

आत्मानन्द जैन सभा भवन पहुँचने पर धर्म सभा हुई जिसमें पूज्य मुनिराज के मंगलाचरण के पश्चात् श्री सुमति जिन श्राविका संघ द्वारा स्वागत गीत प्रस्तुत किया गया। संघ मंत्री मोतीलाल भडकतिया ने जहाँ एक ओर जयपुर तपागच्छ संघ एवं इसके अन्तर्गत चल रही विभिन्न गतिविधियों का विवरण प्रस्तुत किया वहीं पूज्य मुनिराज एवं साध्वीं जी म. सा. का जीवन परिचय प्रस्तुत किया। संघ के अध्यक्ष श्री हीराभाई चौधरी ने आप सभी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए एवं अभिनन्दन करते हुए कहा कि यह जयपुर तपागच्छ संघ का सौभाग्य है कि ऐसे तपस्वी साधु साध्वीजी

सा का चातुर्मास जयपुर मे हो रहा है और इस र्ष चतुर्विधि सघ के साथ आराधनाये सम्पन्न होने का सौभाग्य प्राप्त होगा । पूज्य मुनिराज एव साध्वीश्री म सा ने चातुर्मास काल के महत्त्व को दर्शाते हुए इस समय मे की जाने वाली तपस्याओ एव धर्म आराधनाओ से होने वाले कर्मो के क्षय पर प्रकाश डाला । साध्वी श्री पावनगिराश्री जी म सा ने भी सभा को सम्बोधित किया । उपाश्रय मत्री श्री अभय कुमारजी चोरडिया ने धन्यवाद ज्ञापित किया ।

इस अवसर पर बाहर से पधारे हुए विभिन्न सघा के आगेवाना का माल्यार्पण श्रीफल के साथ स्मृति चिन्ह भेट कर बहुमान किया गया ।

नगर प्रवेश के उपलक्ष्य मे सामूहिक आयम्बिल कराने का लाभ एक सद्गृहस्थ की ओर से लिया गया तथा दोपहर मे श्री पार्श्वनाथ पच कल्याणक पूजा शाह श्री कल्याणमल जी किस्तूरमलजी परिवार द्वारा पढाई गई । प्रवेश की सघ पूजा करने का लाभ श्री हीराभाई चौधरी (म ग्रुप) परिवार द्वारा लिया गया ।

### आराधनाए

चौमासी चौदस की आराधनाओ के साथ चातुर्मास प्रारम्भ हुआ । श्रावण बदी 5 को सूत्र बोहराने का कार्यक्रम हुआ जिसमे धर्म रत्न प्रकरण सूत्र बोहराने का लाभ श्री हीराभाई मगलचन्दजी चौधरी (म ग्रुप) परिवार द्वारा तथा वीरभान उदयभान चारित्र बोहराने का लाभ श्री पूनमचन्द नगीनदास शाह परिवार द्वारा लिया गया । ज्ञान पूजाओ के पश्चात् सूत्र एव चारित्र पर आपके प्रवचन प्रारम्भ हो गए । प्रतिदिन प्रात 8 30 बजे से श्री भक्तामर स्त्रोत का पाठ तथा बाद मे ओजस्वी प्रवचन हो रहे है । प्रतिदिन सघ पूजाए हो रही है । क्रमिक अट्ठम की आराधनाये भी चौमासी चौदस से प्रारम्भ हो गई ।

तपस्याओ के अन्तर्गत श्रावण बदी 5 को सामूहिक आयम्बिल की तपस्या श्रीमती जसोदा बहिन बाबूलालजी मेहता परिवार की ओर से श्रावण बुदी 8 को दीपक एकासणा श्री हीराभाई मगलचन्दजी चौधरी परिवार द्वारा तथा श्रावण बुदी 11 से अमावस क्रमश दि 30-7-97 से 3 अगस्त 97 तक श्री शत्रुजय मोदक तप की आराधना हुई । इसमे एकासणा कराने का लाभ श्री ज्ञानचन्दजी सुभापचन्द छजलानी परिवार, नीवी कराने का लाभ श्री मूलचन्दजी रतनचन्द जी कोचर बीकानेर वालो ने तथा आयम्बिल कराने का लाभ श्रीमती भीखीबाई वेद परिवार द्वारा लिया गया । तप आराधना का पारणा कराने का लाभ श्री महावीरचन्दजी मेहता (जालोर वाले) परिवार ने लिया ।

पिछले वर्षो से हो रही पचरगी की तपस्या के अन्तर्गत इस वर्ष भी दि 8-8-97 से 12-8-97 तक पचरगी तपस्या तो हुई ही साथ ही दि 10 से 12 अगस्त, 97 तक श्री शखेश्वर पार्श्वनाथ के अट्ठम की तपस्या भी सम्पन्न हुई । तपस्वियो को पाराणा कराने का लाभ श्री सौभाग्यचन्द्रजी बाफना परिवार द्वारा लिया गया । दि 17-8-97 को पचपरमेष्ठी के 121 सामूहिक उपवास हुए । तपस्वियो की प्रभावना का लाभ श्री उमरावमलजी पालेचा ने लिया । पचरगी के तपस्वियो की प्रभावना श्रीमती पद्मावहिन पारख एव अट्ठम के तपस्वियो की प्रभावना तपस्वियो के बहुमान हेतु एकत्रित राशि से की गई ।

इसी के अन्तर्गत शासन प्रभाविका पू. प्रवर्तिनी सा. श्री खान्ति श्रीजी म. सा. की 19वीं पुण्य तिथि निमित्त त्रिदिवसीय महोत्सव का भव्य आयोजन भी रखा गया। श्रावण सुदी 7 रविवार, दि. 10-8-97 को प्रातः गुणानुवाद सभा हुई जिसमें वक्ताओं ने आपके प्रति भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित की। विजय मुहुर्त में श्री पंच परमेष्टी महापूजन श्रीमती केशरबैन मगनलाल, मुम्बई वालों की ओर से पढाई गई। दूसरे दिन 11-8-97 को विजय मुहुर्त में श्री पच कल्याण पूजन श्रीमती बिमला बैन नागजी भाई, मुम्बई की ओर से पढाई गई। तीसरे दिन 12-8-97 को प्रातः भक्ति नृत्य व प्रवचन के साथ भगवान श्री पार्श्वनाथ का थाल का अनूठा एवं दर्शनीय आयोजन सम्पन्न हुआ। द्रव्य-भार श्री हीराभाई चौधरी (मं. ग्रुप) द्वारा वहन किया गया। दिन मे श्री पार्श्व पद्मावती महापूजन एक सद्गृहस्थ की ओर से पढाई गई। विधि विधान श्रीमान् धनरूपमलजी सा. नागौरी ने तथा भक्ति संगीत का कार्यक्रम श्री सुमति जिन श्राविका सघ द्वारा प्रस्तुत किया गया।

दिनांक 15 अगस्त, 97 को टोक फाटक स्थित भगवान महावीर स्वामी के मंदिर में अंजन शलाका की हुई श्री पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमाजी को विराजमान करने का आयोजन भी आपकी पावन निश्रा में सम्पन्न हुआ। प्रतिमाजी को लाने, मंदिरजी में विराजित कराने, अट्ठारह अभिषेक सहित साधर्मी वात्सल्य का सम्पूर्ण लाभ श्री चन्द्रसिंहजी पारसचन्दजी महेन्द्रकुमारजी दोसी परिवार द्वारा लिया गया।

इस प्रकार चतुर्विधि संघ के साथ आपकी पावन निश्रा में तप एवं आराधनाओं की झडी लगी हुई है। प्रति रविवार को महिलाओं में धार्मिक ज्ञान वृद्धि हेतु धार्मिक परीक्षा के अनुरूप ।· आयोजन हो रहे हैं।

अब भादवा बुदी 13 शनिवार दि 30-97 से पर्यूषण महापर्व की भव्य ॱ ।ा न सम्पन्न होने जा रही हैं।

**साधु साध्वीवृन्द का शुभागमन**

विगत प्रस्तुत विवरण के पश्च निम्नांकित साधु साध्वीवृन्द का शुभागमन हुआ :

साध्वी श्री कमलप्रभाश्री जी म सा ठाणा -7

आचार्य श्री अरिहंतसूरीजी म सा -2

साध्वी श्री शुभोदयाश्री जी म सा -6

साध्वी श्री ललित प्रभाश्रीजी म सा -7

साथ ही विभिन्न स्थानो से पधारे हुए संघों तथा श्राविक श्राविकाओ की भक्ति का लाभ भी श्रीसंघ को प्राप्त हुआ है।

**श्री जैन श्वे. मंदिर सोडाला ट्रस्ट में प्रतिनिधि**

श्री जैन श्वे. आदिनाथ मंदिर, सोडाला ट्रस्ट में इस श्रीसंघ से भी प्रतिनिधि मनोनीत करने की मॉग आने पर श्री हीराभाई चौधरी एवं श्री नरेन्द्रकुमारजी लुनावत को महासमिति द्वारा मनोनीत किया गया है।

## स्थायी गतिविधियां

इस प्रकार विगत वर्ष में हुई कतिपय उल्लेखनीय गतिविधियों का विवरण प्रस्तुत करने के पश्चात् अब संघ की स्थायी गतिविधियों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत कर रहा हूँ।

**श्री सुमतिनाथ स्वामी जिनालय**

इस श्रीसंघ के 270 वर्षीय प्राचीन जिनालय की व्यवस्था एवं गतिविधियां वर्ष भर पूर्व

मदिर मत्री श्री नरेन्द्रकुमारजी कोचर की देखरेख मे सुचारू रूप से सम्पन्न होती रही है। अष्ठ प्रकारी पूजा सामग्री निश्चित मात्रा मे वर्ष भर उपलब्ध कराने की व्यवस्था पिछले छ वर्ष से निरन्तर जारी है। भक्तिकर्त्ताओ का उत्साह एव सख्या अधिक रहने पर भी आपसी सहमति से प्रत्येक सामग्री का पृथक-पृथक लाभ दिया जा रहा हे। सामग्री भेटकर्त्ताओ का विवरण पृथक से प्रकाशित किया जा रहा हे।

लगभग 15 वर्ष पूर्व आचार्य श्री ह्रीकारसूरीश्वरीजी म सा की प्रेरणा से प्रारम्भ की गई सामूहिक स्नात्र पूजा पढाने का कार्य निरन्तर जारी है। वर्ष भर के लिए पूर्व ही पूजा पढाने वाले भाग्यशालियो की सूची बन जाती है और वाद्य-वृन्द एव अष्ट प्रकारी पूजा की सामग्री के साथ प्रतिदिन स्नात्र पूजा पढाई जाती है।

जिनालय का वार्षिकोत्सव रविवार, दि 25 जून 97 ज्येष्ठ सुदी 10 सम्वत् 2054 को पूर्ववत धूमधाम एव हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। ध्वजा चढाने का लाभ श्री भवरलालजी मूथा परिवार द्वारा लिया गया। साधर्मी वात्सल्य मे भी बडी सख्या मे भाई बहिनो ने भाग लिया।

इस जिनालय के अन्तर्गत वर्ष 1996-97 मे कुल रू 7,69 707/70 की आय तथा 1,18,763/25 का व्यय हुआ है। बची हुई राशि का उपयोग बरखेडा तीर्थ जीर्णोद्धार मे किया जा रहा है। श्री खीमराजजी पालरेचा मदिर मत्री की देखरेख मे जिनालय की व्यवस्था चल रही है। आवश्यक मरम्मत एव रग रोगन का कार्य कराया गया है।

**श्री सीमन्धर स्वामी मदिर, जनता कालोनी**

इस जिनालय की व्यवस्था भी वर्ष भर सुचारू रूप से सम्पन्न होती रही है। वर्षो से चल रहा निर्माण कार्य अब लगभग पूर्ण हो गया है। यहा का वार्षिकोत्सव भी पूर्व परम्परानुसार रविवार दि 7-12-96 को सानन्द सम्पन्न हुआ। सामूहिक पक्षाल पूजा के पश्चात् सत्रहभेदी पूजा पढाई गई। ध्वजारोहण का लाभ पूर्ववत् डॉ श्री भागचन्दजी छाजेड को ही दिया गया। तत्पश्चात् साधर्मी वात्सल्य सम्पन्न हुआ।

इस जिनालय के अन्तर्गत 19115/25 रू की वार्षिक आय तथा 42410/45 का व्यय हुआ है।

इस जिनालय के पूर्व एव वर्तमान सयोजक श्री मोतीचन्दजी वैद है जिनकी देखरेख मे जिनालय की व्यवस्था सुचारू रूप से सम्पन्न हो रही है।

**श्री ऋषभदेव स्वामी का तीर्थ, बरखेडा**

जैसा कि पूर्व विवरण मे विस्तार से जानकारी उपलब्ध कराई गई थी कि इस तीर्थ के जीर्णोद्धार की योजना ने चातुर्मास हेतु बिराजित महत्तरा साध्वी श्री सुमगला श्री जी म सा की प्रेरणा मार्गदर्शन एव निश्रा मे मूर्त रूप लिया। दि 29-11-95 को भूमि पूजन एव दि 1-12-95 को शीला स्थापनाओ के साथ ही जीर्णोद्धार का कार्य प्रारम्भ हो गया जो निरन्तर अबाध गति से जारी है।

ठोस भराई से निर्मित प्लैटफार्म पर गम्भारे का निर्माण कार्य पूरा होकर दिनाक 16-2-97 को गम्भारे की छत पर शिला

स्थापनायें होकर शिखर निर्माण का कार्य भी प्रारम्भ हो गया है। सम्पूर्ण जिनालय शिखर सहित आरास के पत्थर से बनाया जा रहा है। रंग मण्डप निर्माण हेतु ठोस भराई से प्लेट फार्म बनकर तैयार हो गया है। गम्भारे पर शीला स्थापनायें करने का लाभ सर्व श्री जतनमलजी राजेन्द्र कुमार लूनावत, (पूर्व दिशा की शिला), (पश्चिम दिशा की शिला)- श्रीमती सुनीता जी जैन, वर्धमान मेडिकल, (उत्तर दिशा की शिला)- श्री मंगलचन्द ग्रुप (दक्षिणी दिशा की शिला)- श्री माणकचन्दजी सतीशकुमारजी जैन एवं मुख्य पदम शिला स्थापित करने का लाभ श्री खेतमलजी जैन ने लिया।

यात्रियों के आवास हेतु एक बडा हाल, दो कमरे, लेट्रिन बाथरूम तो विगत वर्ष में ही बना दिए गए थे लेकिन भविष्य की आवश्यकताओं को दृष्टिगत रखते हुए इसी कक्ष पर एक मंजिल और चढाने का निश्चय किया गया और कार्यारम्भ कर दिया गया है। प.पू. साध्वी श्री पूर्णप्रज्ञाश्रीजी म.सा. की सद्प्रेरणा से एक बडा हाल बनाने का दायित्व श्री भोंरीलालजी रानी वालों ने तथा एक छोटा हाल बनाने का दायित्व श्री मोतीचन्दजी वैद ने लिया है। ज्यों-ज्यों निर्माण कार्य आगे बढ रहा है और भूमि क्रय कर यहां पर भोजनशाला धर्मशाला आदि बनाने का कार्य भी हाथ में लिया जावेगा।

निर्माण कार्य पर अभी तक कुल 63,15,699/45 रू. का व्यय हो चुका है। साथ ही दानदाताओं एवं भक्तिकर्त्ताओं का उत्साह भी प्रशंसनीय है। श्री आणन्दजी कल्याणजी, श्री नाकोडा पार्श्वनाथ ट्रस्ट, श्री चन्द्रप्रभू स्वामी का नया मंदिर मद्रास, श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ ट्रस्ट, श्री आत्मानन्द जैन सभा बम्बई आदि विविध संघों से उल्लेखनीय योगदान प्राप्त हुआ है एवं व्यक्तिगत रूप से एक मुश्त एवं 3111/- रू. की एक ईट का नखरा के तहत अभी तक निर्माण कार्य हेतु रू. 46,54,431/- की राशि प्राप्त हो चुकी है। बेलेंस शीट में तो वित्तीय वर्ष की समाप्ति मार्च, 97 तक का विवरण ही प्रकाशित किया गया है लेकिन उपरोक्त आंकडे दि. 9-8-97 तक के श्रीसंघ की सूचनार्थ उदृत किए गए हैं।

कार्य विशाल एवं योजना महत्वांकाक्षी है जिसमें संघों एवं दानदाताओं से अधिक से अधिक योगदान अपेक्षित है।

चूकि मूलनायक भगवान उसी परिसर में बिराजित है अतः वाषिकोत्सव का कार्यक्रम भी पूर्ववत जारी है। इस वर्ष का वाषिकोत्सव फाल्गुन सुदी 8 सम्वत् 2053 रविवार, दिनांक 16 मार्च, 1997 को धूमधाम से मनाया गया। सामूहिक पक्षाल पूजा के पश्चात् श्री आदिनाथ पंच कल्याण पूजा पढाई गई। तत्पश्चात् साधर्मी वात्सल्य का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

श्री उमरावमलजी पालेचा पूर्व एवं वर्तमान संयोजक एवं पुनर्गठित निर्माण समिति की देखरेख में जिनालय की व्यवस्था एवं निर्माण कार्य सम्पन्न हो रहा है।

**श्री शान्तिनाथ स्वामी जिनालय, चन्दलाई**

इस जिनालय की व्यवस्था भी पूर्व संयोजक श्री ज्ञानचन्दजी भण्डारी की देखरेख में सुचारु रूप से सम्पन्न होती रही है। जिनालय का वार्षिकोत्सव रविवार, दि. 1 दिसम्बर, 1996 को सम्पन्न हुआ जिसमें ध्वजा चढाने का लाभ श्री मीठालालजी कुवाड परिवार द्वारा लिया गया। यहां पर 1,752/40 रु. की आय एवं तथा

7 194/- रु का व्यय हुआ है । निर्वाचन के पश्चात् श्री राजेन्द्रकुमारजी लूनावत ने सयोजक का दायित्व वहन किया है ।

### श्री जैन तपागच्छ उपाश्रय

श्री आत्मानन्द जैन सभा भवन, घी वालो का रास्ता एव भगवान आदिनाथ जिनालय मारूजी का चौक परिसर मे स्थित तपागच्छ उपाश्रय की व्यवस्था भी पूर्व एव वर्तमान उपाश्रय मत्री श्री अभयकुमारजी चोरडिया की देखरेख मे सुचारू रूप से सम्पन्न होती जा रही हे ।

अभी हाल ही मे आवश्यक मरम्मत, रग रोगन आदि का कार्य कराया गया है ।

### श्री वर्धमान आयम्बिलशाला

श्री वर्धमान आयम्बिलशाला की व्यवस्था भी सुचारू रूप से सम्पन्न होती रही है । महत्तरा साध्वी म सा की प्रेरणा से प्रतिदिन हो रहे आयम्बिल के का्रण आयम्बिलकर्त्ताओ की सख्या बढी है । कुछ नए बर्तनो की खरीद भी की गई हे तथा इडियन आयल से गैस कनेक्शन भी मिल गया है ।

इस सीगे मे 60,298/- रू की आय तथा 44,481/05 रू का व्यय हुआ है ।

नए खरीदे गए भवन के अन्तर्गत आयम्बिलशाला का भाग क्रय करने हेतु बापू बाजार मे स्थित दुकान का बेचान कर दिया । इससे प्राप्त राशि का स्थायी फण्ड एव क्रय के अन्दर समायोजन किया गया है ।

### श्री जैन श्वेताम्बर भोजनशाला

आचार्य श्रीमद् कलापूर्णसूरीश्वरजी म सा की सद्प्रेरणा से वर्ष 1985 मे स्थापित भोजनशाला की व्यवस्था भी सुचारू रूप से सम्पन्न होती रही है । बाहर से पधारे हुए अतिथि, छात्र एव स्थानीय व्यक्ति इसका पूरा लाभ उठा रहे है ।

इस सीगे के अन्तर्गत 1,64,193/- रू की आय तथा 1,42,530/05 रु का व्यय हुआ है ।

पूर्व मत्री श्री राकेशकुमारजी मोहनोत की देखरेख मे आयम्बिलशाला एव भोजनशाला की व्यवस्था सचालित होती रही । नव-निर्वाचन के पश्चात् श्री सुभाषचन्दजी छजलानी ने यह दायित्व सम्भाला है ।

### श्री समुद्र-इन्द्रदिन्न साधर्मी सेवा कोष

गच्छाधिपति आचार्य श्रीमद् विजय इन्द्रदिन्नसूरीश्वरजी म सा की सद्प्रेरणा से स्थापित इस कोष मे भेट एव ब्याज से कुल 20,758/15 रू की आय तथा 11,161/00 का व्यय हुआ है। मासिक सहायता, शिक्षा चिकित्सा एव अन्य कार्यो हेतु राशि भेट की गई है ।

इसी कोष के अन्तर्गत प्रति वर्ष महिला स्वरोजगार प्रशिक्षण शिविर का आयोजन हो रहा है। इस वर्ष शिविर 1 जून से 15 जुलाई तक लगाया गया जिसम जैन-अजैन महिला एव बालिकाओ ने विविध विषयो मे प्रशिक्षण प्राप्त किया । शिविर के आयोजन एव सचालन मे शिविर सयोजिका सुश्री सरोज कोचर, व्याख्याता वीर बालिका महाविद्यालय का योगदान पशसनीय रहता ही है साथ ही पूर्व शिक्षण मत्री श्री सुरेश कुमार मेहता की सेवाये भी उल्लेखनीय रही है । शिविर का समापन समारोह दि 27 जून 1997 को मनाया गया जिसमे माननीय श्री गुलाबचन्द कटारिया

शिक्षा मंत्री, राजस्थान ने मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित होकर शिविर में योगदान करने वाली प्रशिक्षिकाओं एवं प्रशिक्षणार्थियों को पारितोषिक वितरित् करते हुए शिविर आयोजकों की भी भूरि भूरि प्रशंसा की तथा इसे समाज सेवा का बहुत उपयोगी कार्य बताया । श्री के.एल. जैन, अध्यक्ष स्टाक एक्सचेंज ने समारोह की अध्यक्षता की ।

**श्री साधारण खाता**

विविध कार्य कलापों के अन्तर्गत होने वाले व्यय को समाहित करने वाला यह सीगा सबसे अधिक द्रव्य भार वहन करता है । यह संघ इस पर आत्म संतोष करता रहा है कि विगत कई वर्षो से यह सीगा किसी भी प्रकार की टूट से मुक्त चल रहा है । इस वर्ष भी इस सीगे में 5,25,569/65 रु. की आय तथा 3,40,107/35 का व्यय हुआ है ।

पूर्व व्यवस्थानुसार इस वर्ष भी चारों वार्षिकोत्सवों के आय-व्यय का समायोजन एक साथ किया गया है । इसके अन्तर्गत कुल 96,044/- रू. की आय तथा 83,107/50 रू का व्यय हुआ है । बची हुई राशि से बर्तन खरीदे गए है ।

पिछले तीन वर्षो से सफेदी रंगरोगन आदि का कार्य नहीं हुआ था वह इस बार कराया गया है । मंदिर, उपाश्रय, आयम्बिलशाला, मारुजी के चोक में स्थित उपाश्रय आदि सभी जगह पर मरम्मत एवं रंग-रोगन कराया गया है जिस पर अभी तक साधारण से 55,511/- रु., मंदिर सीगे से 17,555/- एवं आयम्बिल शाला में 9,113/- का खर्चा हो चुका है ।

श्री अभयकुमारजी चोरडिया पूर्व एवं वर्तमान उपाश्रय मंत्री है जिनकी देखरेख में सीगे एवं उपाश्रय, वैय्यावच्छ आदि का सारा का सम्पन्न होता है ।

**ज्ञान -खाता**

इस सीगे के अन्तर्गत इस 1,29,611/40 की आय तथा 52,734/ रू. का व्यय हुआ है ।

पिछले विवरण में अंकित किया गया कि उस समय विराजित साध्वी प्रफुल्लप्रभाश्रीजी म. सा. के अथक प्रयास 'साधना एवं अराधना' नामक पुस्तक का । तो हो गया लेकिन महत्तरा साध्वीजी म. सा. हार्दिक प्रेरणा थी कि वीशस्थानकजी सहित वि तपस्याओं के करने वालों की सुविधा हेतु प्रकाशित की जावे । संघ को प्रसन्नता है कि प्रकाशन भी हो गया और 'तप ज्योत' ( वीशस्थानक आदि विविध तप आराधना वि नामक पुस्तक आराधकों के लिए निःशु उपलब्ध है ।

इसी प्रकार जिनेश्वर भक्ति हेतु जाने वाली पूजाओं के संग्रह की भी बहुत मांग थ यह कार्य भी पूर्ण हो गया और विभिन्न पूजा नाम से पुस्तक अब यहां पर उपलब्ध है गच्छाधिपति आचार्य श्रीमद् इन्द्रदिन्नसूरीश्वरजी म. सा. की नवयुग निर्माता जंगम युग प्रधान-न्यायां पंजाब देशोद्धारक जैनाचार्य विजयानन्दसूरीश्वरजी म. सा. की स्व शताब्दी समापन वर्ष के अन्तर्गत यह पुस्तक को समर्पित करते हुए चारों आचार्य भगवन्तों चित्र इसमें प्रकाशित किए गए हैं ।

सघो के लिए सीमित सख्या मे नि शुल्क एव अधिक की आवश्यकता पर शुल्क सहित पुस्तक प्राप्त की जा सकती है।

इस सीगे का सचालन पूर्व शिक्षण मत्री श्री सुरेश कुमारजी मेहता की देख-रेख मे होता रहा और अब श्री गुणवन्तमलजी साण्ड इस सीगे का सचालन कर रहे है।

**पुस्तकालय एव वाचनालय**

पुस्तकालय एव वाचनालय की व्यवस्था भी वर्ष भर सुचारू रूप से सचालित होती रही है। कतिपय नई पुस्तको की खरीद की गई है।

**उद्योगशाला एव सिलाई शाला**

यह व्यवस्था भी वर्ष भर सुचारू रूप से सचालित होती रही है। जैनियो से अधिक अजैन महिलाये एव बालिकाये इस का अधिक से अधिक उपयोग कर रही है।

**माणिभद्र के 38वे अक का प्रकाशन**

सघ के लिए आत्म सन्तोष का विषय हे कि सघ की गतिविधियो मे प्रमुख गतिविधि माणिभद्र'' स्मारिका का भगवान महावीर जन्म वाचना दिवस पर प्रकाशन हो जाना। विगत 38 वर्षो पूर्व प्रारम्भ की गई यह स्मारिका निरन्तर समय पर प्रकाशित हो रही है। गुरू भगवन्ता, साध्वीजी म सा लेखको आदि सभी का सहयोग ही सम्पादक मण्डल का सम्बल होता है।

38 वे अक का विमोचन श्री पूनमचन्दभाई शाह के कर कमलो से सम्पन्न हुआ था। इस अक के प्रकाशन पर 33,311/75 रू का व्यय तथा विज्ञापन आदि स 53,800/- रु की आय हुई थी।

**श्री सुमति जिन श्राविका सघ**

पूज्य साध्वी श्री देवेन्द्रश्रीजी म सा की सद्प्रेरणा से स्थापित श्राविकाआ की सगठित सस्था के कार्य कलाप भी वर्ष भर सुचारू रूप स सम्पन्न होते रहे है। पूजा पढाने मे एव भक्ति के कार्यक्रम प्रस्तुत करने के साथ सघो म सम्पन्न होने वाले आयोजनो मे श्राविकाओ का सहयोग प्रशसनीय एव उल्लेखनीय रहता ही है।

तपागच्छ सघ के नव-निर्मित विधान की धारा 10 के अन्तर्गत श्री सुमति जिन श्राविका सघ की अध्यक्षा को महासमिति की बैठका मे स्थायी रूप से विशेष आमत्रितो मे सम्मिलित किया गया है। इस समय पदासीन अध्यक्षा श्रीमती सुशीलादेवी छजलानी इसका प्रतिनिधित्व कर रही है।

श्रीमती उषा साण्ड मत्री द्वारा प्रस्तुत श्राविका सघ का विस्तृत प्रतिवेदन पृथक से प्रकाशित किया जा रहा है।

**श्री आत्मानन्द जेन सेवक मण्डल**

मण्डल की गतिविधिया भी वर्ष भर सुचारू रूप से सचालित होती रही है तथा सभी आयोजनो मे मण्डल के सदस्यो का भरपूर सहयोग प्राप्त होता रहा है। श्री अशोक पी जैन मत्री द्वारा प्रस्तुत प्रतिवेदन पृथक से प्रकाशित किया जा रहा है।

श्राविका सघ के समान ही श्री आत्मानन्द जैन सेवक मण्डल के पदेन अध्यक्ष भी महासमिति की बैठको मे स्थायी रूप मे आमन्त्रितो की सूची मे है। श्री विजयकुमार सेठिया अध्यक्ष इस समय मण्डल का प्रतिनिधित्व कर रहे है।

## संघ की आर्थिक स्थिति

इस वर्ष संघ की निधि में कुल 46,73,543/35 रू. की आय तथा 42,52,100/95 रू. का व्यय हुआ है जिसका विस्तृत विवरण संलग्न अंकेक्षित आय-व्यय विवरण 1996-97 में दिया गया है। इस प्रकार शुद्ध बचत 4,21,442/20 रु. की रही है।

आय-व्यय की अब तक की सभी सीमायें लांघने का मुख्य कारण बरखेडा तीर्थ जीर्णोद्धार का विशाल व्यय एवं उसी के अनुरूप विविध श्रोतों से प्राप्त हो रही आय है। बरखेडा तीर्थ जीर्णोद्धार का कार्य सघ के लिए जहां एक ओर महान उपलब्धि है वहीं योजना विशाल एवं महत्वाकांक्षी होने से चुनौती भरा कार्य है।

दूसरा चुनौती भरा कार्य नए खरीदे हुए भवन के पुनर्निर्माण का है। नया भवन खरीद कर उसका अधिकार तो पिछले वर्ष ही प्राप्त कर लिया गया था। बरखेडा का कार्य होने से इस ओर अभी कार्यारम्भ नही किया जा सका है, आगामी समय में नव-निर्माण की योजना, रूप रेखा बनाने का कार्यारम्भ कर इस ओर भी प्रयास प्रारम्भ किए जावेगें।

## कर्मचारी वर्ग

संघ की गतिविधियों को संचालित करने में कर्मचारी वर्ग का सहयोग एवं निष्ठा अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है। वर्ष भर कार्यरत सभी कर्मचारी वर्ग का भरपूर सहयोग प्राप्त होता रहा है तो महासमिति द्वारा भी उनके आर्थिक हितों के प्रति सजगता रखते हुए 1 जनवरी, 97 से ही इनके वेतन में पर्याप्त वृद्धि की गई है तथा अन्य प्रोत्साहन राशि भी प्रदान की गई है।

इस संघ में 25 वर्ष तक निरन्तर भरपूर लगन, निष्ठा एवं ईमानदारी से सेवा प्रदान करने के प्रतिफल स्वरूप श्री सम्पतमलजी मेहता, मुनीम एवं श्री हरिशंकरजी पुजारी का श्रीसंघ के समक्ष साफा पहना कर तथा चान्दी के स्मृति चिन्ह भेंटकर अभिनन्दन किया गया।

## धन्यवाद ज्ञापन

उपरोक्त वर्णित संक्षिप्त एवं दैनन्दिन गतिविधियॉ एवं आयोजनों को सफल बनाने में प्राप्त सहयोगकर्त्ताओं के नाम प्रसंगवश ही उल्लेखित हो सके हैं लेकिन श्रृंखला बहुत विस्तृत है। इस अवसर पर पूर्व एवं वर्तमान में कार्यरत महासमिति की ओर से सभी के प्रति हार्दिक आभार एवं धन्यवाद ज्ञापित है।

श्री राजेन्द्रकुमारजी, चार्टर्ड एकाउन्टेंट निरन्तर कई वर्षो से संघ के अंकेक्षक का दायित्व सेवा भावना से निःशुल्क निभा रहे है जिसके लिए आपको बहुत बहुत धन्यवाद। नव-निर्वाचित महासमिति द्वारा भी आपको ही पुनः अंकेक्षक नियुक्त किया गया है।

## समापन

इस प्रकार महासमिति द्वारा अनुमोदित उपरोक्त विवरण एवं आय-व्यय विवरण को श्री संघ की सेवा में प्रस्तुत करते हुए मैं इस विवरण का समापन कर रहा हूँ।

*जय महावीर।*

# श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ,

## आय—व्यय खाता

(कर निर्धारण

| गत वर्ष का खर्च | व्यय | | इस वर्ष का खर्च |
|---|---|---|---|
| 92 139 20 | श्री मन्दिर खाते नामे | | 1 18,763 00 |
| | श्री आवश्यक खर्च | 1 02 095 25 | |
| | श्री विशेष खर्च | 16 668 00 | |
| | श्री मणीभद्र भण्डार खाते नामे | | |
| 2,67,509 12 | श्री साधारण खाते नामे | | 3,40,107 35 |
| | श्री आवश्यक खर्च खाते | 1 61,789 10 | |
| | श्री अन्य खर्च खाते नाम | 1 78,318 25 | |

# घी वालों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर

## वर्ष 1997-98

वर्ष 1997-98)

| गत वर्ष की रकम | आय | | इस वर्ष की रकम |
|---|---|---|---|
| 9,43,629.60 | **श्री मन्दिर खाते जमा** | | 7,69,707.70 |
| | श्री भण्डार खाते जमा | 7,08,848 55 | |
| | श्री पूजन खाते जमा | 6,321 75 | |
| | श्री किराये खाते जमा | 1,800 00 | |
| | श्री ब्याज खाते जमा | 3,699 00 | |
| | श्री चदलाई मदिर खाते जमा | 1,752 40 | |
| | श्री जोत खाते जमा | 1,806.75 | |
| | श्री चंदलाई जीणोद्धार खाते | 40,000 00 | |
| | श्री मदिर जीर्णोद्धार खाते | 5,479 25 | |
| 77,171 95 | **श्री मणीभद्र भण्डार खाते जमा** | | 83,956 75 |
| 3,32,347 10 | **श्री साधारण खाते जमा** | | 5,25,569.65 |
| | श्री भेंट खाता | 3,08,986.65 | |
| | श्री किराया खाता | 9,804.00 | |
| | श्री मणीभद्र प्रकाशन | 53,800.00 | |
| | श्री ब्याज खाता | 40,665 00 | |
| | श्री साधर्मी वात्सल्य खाता | 96,044.00 | |
| | श्री सदस्यता शुल्क | 7,725.00 | |
| | श्री आवेदन शुल्क | 7,725.00 | |
| | श्री उद्योगशाला | 820.00 | |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 16,591 00 | श्री ज्ञान खर्च खाते नामे | | 52,734 25 |
| | श्री आवश्यक खर्च | 4,117 50 | |
| | श्री विशेष खर्च | 48 616 75 | |
| 46 375 05 | श्री आयम्बिल खर्च खाते नाम | | 44 481 05 |
| | श्री आवश्यक खर्च | 44,481 05 | |
| 10,449 00 | श्री वरखेडा मंदिर खाते नामे | | 7 569 00 |
| 12,96,898 45 | श्री वरखेडा जीर्णोद्धार खाते नामे | | 34,38 346 00 |
| 3,175 00 | श्री वरखेडा जोत खाते नामे | | 6 450 00 |
| 35,791 00 | श्री आयम्बिल फोटो खाते नामे व जीर्णोद्धार | | 2,248 00 |
| 30,377 25 | श्री जनता कॉलोनी मंदिर खाते नामे | | 42 410 45 |
| 1 02,055 00 | श्री जनता कॉलोनी जीर्णोद्धार खाते नामे | | 29,803 00 |
| 2 369 00 | श्री जीव दया खाते नामे | | 9 596 00 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1,15,651.50 | **श्री ज्ञान खाते जमा** | | 1,29,611.40 |
| | श्री भेंट खाता | 1,02,001 40 | |
| | श्री ब्याज खाता | 15,258 00 | |
| | श्री साहित्य प्रकाशन | 12,352 00 | |
| 65,067 00 | **श्री आयम्बिल खाते जमा** | | 60,298.00 |
| | श्री भेंट खाते जमा | 8,284 00 | |
| | श्री ब्याज खाते जमा | 48,714 00 | |
| | श्री किराये खाते जमा | 3,300 00 | |
| 10,491 05 | **श्री बरखेडा मंदिर खाते जमा** | | 26,182.35 |
| 7,23,180 00 | **श्री बरखेडा जीर्णोद्धार खाते जमा** | | 27,43,518.50 |
| | **श्री बरखेडा जोत खाते जमा** | | — |
| 17,776.00 | **श्री आयम्बिल फोटो खाते जमा** | | 11,110.00 |
| 16,265 55 | **श्री जनता कॉलोनी मंदिर खाते जमा** | | 19,115.25 |
| | **श्री जनता कॉलोनी जीर्णोद्धार खाते जमा** | | — |
| 14,873.30 | **श्री जीव दया खाते जमा** | | 13,123.00 |

| | | |
|---|---|---|
| 1 35,745 70 | श्री भोजन शाला खाते नामे | 1,42,530 05 |
| 37 498 70 | श्री वैय्यावच्च खाते नामे | 5,901 55 |
| 57,052 50 | श्री साधर्मी सेवा कोष खाते नामे | 11,161 00 |
| 3 95 102 88 | श्री शुद्ध बचत सामान्य कोष मे हस्तान्तरण किया | 4,21 442 40 |
| 25 29 122 85 | | 46 73,543 35 |

(हीराभाई चौधरी)
अध्यक्ष
श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ सघ

*(मोतीलाल भडकतिया)*
सघ मत्री
श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ सघ

| | | |
|---|---|---|
| 1,36,118.00 | श्री भोजन शाला खाते जमा | 1,64,193 00 |
| | श्री वैय्यावच्च खाते जमा | 969 00 |
| 62,435 00 | श्री साधर्मी सेवाकोष खाते जमा | 20,758 15 |
| 5,219.65 | श्री शासनदेवी खाते जमा | 4,525.00 |
| 8,162 15 | श्री गुरुदेव खाते जमा | 5,703 05 |
| 735 00 | श्री सात क्षेत्र खाते जमा | 21 00 |
| | श्री बरखेडा साधारण खाते जमा | 95,181.55 |
| 25,29,122 85 | | 46,73,543 35 |

(दान सिंह कर्नावट)
अर्थ मत्री
श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ

वास्ते चत्तर एण्ड कम्पनी
चार्टर्ड एकाउन्टैन्ट्स

(आर.के.चत्तर)
स्वामी

# श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ,

## चिट्ठा दिनांक

| गत वर्ष की रकम | दायित्व | | चालू वर्ष की रकम |
|---|---|---|---|
| 23 61 777 61 | श्री सामान्य कोष | | 27,83,220 01 |
| | गत वर्ष की जमा रकम | 23,61,777 61 | |
| | इस वर्ष की आय व खाते से लायी गयी | 4,21,442 40 | |
| 13,805 00 | श्री जोत स्थाई खाते जमा | | 13 805 00 |
| 19 231 00 | श्री ज्ञान स्थाई खाते जमा | | 19,231 00 |
| 1,46,468 00 | श्री आयम्बिल स्थाई कोष खाते जमा | | 1 54,354 00 |
| | गत वर्ष की रकम | 1,46,468 00 | |
| | इस वर्ष की रकम | 7,886 00 | |
| 22 171 05 | श्री श्राविका सघ खाते जमा | | 22,171 05 |
| 1 860 00 | श्री सम्वतसरी पारना कोष खाते जमा | | 1 860 00 |
| 3 844 30 | श्री नवपद पारना खाते जमा | | 3,844 30 |
| 51 000 00 | श्री आयम्बिल जीर्णोद्धार खाते जमा | | 51 000 00 |
| 41 080 00 | श्री भोजनशाला स्थाई खाते जमा | | 41,080 00 |
| 2,74 233 00 | श्री साधर्मी सेवा कोष खाते जमा | | 2,74,233 00 |
| 678 94 | श्री रमेश चन्दजी भाटिया | | — |
| 29,36 148 90 | | | 33 64 798 36 |

(हीराभाई चौधरी)
अध्यक्ष
श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ सघ

(मोतीलाल भडकतिया)
सघ मत्री
श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ सघ

# घी वालों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर

## 31-03-1997 तक

| गत वर्ष की रकम | स्वामित्व | | इस वर्ष की रकम |
|---|---|---|---|
| 86,995.25 | **श्री विभिन्न लेनदारियां** | | 1,345.25 |
| | श्री उगाई खाता | 618.25 | |
| | राजस्थान स्टेट इलै.सिटी बोर्ड | 727 00 | |
| 26,748 45 | **श्री स्थाई सम्पत्ति खाता** | | 6,75,216 45 |
| | पिछला बाकी | 26,748 45 | |
| | जोडी गई इस वर्ष की खरीद | 16,39,470 00 | |
| | | 16,66,218 45 | |
| | घटाया इस वर्ष की बिक्री दुकान | 9,91,002.00 | |
| 21,32,435 65 | **बैंकों में जमा** | | 14,20,316.30 |
| | (क) **स्थायी जमा खाता** | | |
| | स्टेट बैक ऑफ बीकानेर एण्ड जयपुर | 8,98,856 30 | |
| | देना बैक | 5,21,460 00 | |
| 1,435.04 | (ख) **चालू खाता** | | 1,435 04 |
| | स्टेट बैक ऑफ बीकानेर एण्ड जयपुर | 1,435 04 | |
| 1,43,111 08 | (ग) **बचत खाता** | | 11,88,269 58 |
| | बैक ऑफ बड़ौदा | 295.17 | |
| | बैक ऑफ राजस्थान | 2,436 36 | |
| | एस बी.बी.जे | 11,85,538 05 | |
| 94,201 43 | **श्री रोकड बाकी** | | |
| | **श्री अग्रिम भुगतान** | | 27,215 74 |
| 51,000.00 | **श्री डायमण्ड पैलेस, मकराना** | | |
| 2,00,111.00 | **श्रीमती सन्तोष डागा** | | 51,000 00 |
| 2,00,111.00 | **श्री अनिल कुमार डागा** | | — |
| | | | — |
| 29,36,148.90 | | | 33,64,798 36 |

(दान सिंह कर्नावट)
अर्थ मत्री
श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ सघ

वास्ते चत्तर एण्ड कम्पनी
चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट्स

(आर के.चत्तर)
स्वामी

# Auditor's Report

1 (FORM No 10 B)

(See Rule 17 B)

## AUDIT REPORT UNDER SECTION 12a (B) OF THE INCOME TAX ACT, 1961 IN THE CASE OF CHARTABLE OR RELIGIOUS TRUSTS OF INSTITUTIONS

We have examined the Balance Sheet of Shri jain Shwetamber Tapagach Sangh, Ghee Walon Ka Rasta, Jaipur as at 31 march, 1997 and the Income and Expenditure Account for the year ended on that date which are in agreement with the books of account maintained by the said trust of institutions

We have obtained all the informations and explanations which to the best or our knowledge and belief were necessary for the purpose of audit In our opinion proper books of accounts have been kept by the said Sangh, subject to the comments that old immovable properties, jewellery have not been valued and included in the Balance Sheet and Income and Expenditures are accounted for on receipt basis as usual

In our opinion and to the best of our information and according to information given to us the said accounts subjects to above give a true and fair view

(1) In the case of the Balance Sheet of the State of Affairs of the above named trust/institution as on 31st March, 1997

(2) In the case of the Income & Expenditure account of the profit of loss of its accounting year ending on 31st March, 1997

For Chatter & Company<br>
Chartered Accounts

(R K CHATTER)<br>
Proprietor

# श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ (पंजीकृत), जयपुर

## महासमिति वर्ष - 1997-99

| क्र.सं. | पद नाम | पदाधिकारी | पता | दूरभाष निवास | दूरभाष कार्यालय |
|---|---|---|---|---|---|
| 1. | अध्यक्ष | श्री हीराभाई चौधरी | 6, चाणक्यपुरी, बनीपार्क | 363611<br>372611 | 213495<br>214072 |
| 2. | उपाध्यक्ष | श्री तरसेम कुमार पारख | 198, अक्षयराज, आदर्श नगर | 601342 | 606899 |
| 3. | संघ मत्री | श्री मोती लाल भड़कतिया | 32, मनवाजी का बाग, एम.डी.रोड | 602277 | - |
| 4. | संयुक्त संघमंत्री | श्री राकेश मोहनोत | 12 मनवाजी का बाग, एम.डी.रोड | 605002 | 561038 |
| 5. | कोषाध्यक्ष | श्री दान सिंह करणावट | ए-3, विजय पथ, तिलक नगर | 621532 | 565695 |
| 6. | भण्डाराध्यक्ष | श्री जीतमल शाह | शाह बिल्डिंग, चौड़ा रास्ता | 564476 | - |
| 7. | मन्दिर मंत्री | श्री खिमराज पालरेचा | 451, ठा.पचेवर का रास्ता ह.रास्ता | 562063 | 564386 |
| 8. | उपाश्रय मंत्री | श्री अभय कुमार चौरड़िया | जी.सी. इले., 257 जौहरी बाजार | 569601 | 562860 |
| 9. | आ.भो.मंत्री | श्री सुभाष चन्द छजलानी | 570, ठा.पचेवर का रास्ता, ह. रास्ता | 562997 | 569311 |
| 10. | शिक्षा मंत्री | श्री गुणवंतमल सांड | 1842,चौबियों का चौक, रास्ता घीवाला | 560792 | 565514 |
| 11. | संयोजक,बरखेड़ा | श्री उमरावमल पालेचा | 3854, एम.एस.बी. का रास्ता | 564503 | - |
| 12. | सं.ज. कॉ.मंदिर | श्री मोतीचन्द वैद | 1189, जोरावर भवन, रास्ता परतानियों | 565896 | 572006 |
| 13. | सं.चंदलाई मं. | श्री राजेन्द्र कुमार लूणावत | 456, ठा.पचेवर रा. हल्दियों का रास्ता | 571830 | 565074 |
| 14. | सं. उपकरण भं. | श्री महेन्द्र कुमार दोसी | 10, प्रताप नगर, (II), बरकत नगर | 590730 | 563574 |
| 15. | सदस्य | श्री कुशलराज सिंघवी | 2-घ-7, जवाहर नगर | 654409 | 654782 |
| 16. | सदस्य | श्री चिमन लाल मेहता | 1880, जयलालमुंशी रा. चांदपोल बा. | 321932 | - |
| 17. | सदस्य | श्री नरेन्द्र कुमार कोचर | 4350, नथमलजी का चौक, जौहरी बा. | 564750 | - |
| 18. | सदस्य | श्री नरेन्द्र कुमार लूणावत | 2135-36, लूणावत मा., रा. हल्दियों | 561882 | 571320 |
| 19. | सदस्य | श्री नवीन चन्द शाह | ए-5, विजयपथ, तिलक नगर | 620682 | 562167 |
| 20. | सदस्य | श्री भंवर लाल मूथा | 18, कल्याण कॉलोनी, सीकर हाउस | 305196 | 364939 |
| 21. | सदस्य | श्री आर.सी. शाह | आर.सी. शाह एण्ड कम्पनी, जौहरी बा. | 554605 | 565424 |
| 22. | सदस्य | श्री विक्रम शाह | इण्डियन वूलन कारपेट, पानों का दरीबा | 49910 | 45033 |
| 23. | सदस्य | श्री संजीव जैन | 2115, घी वालों का रास्ता | 566448 | 568668 |
| 24. | सदस्य | श्री सुरेन्द्र कुमार ओसवाल | 212, फ्रंटीयर कॉलोनी, आदर्श नगर | 602689 | 316315 |
| 25. | सदस्य | श्री सुशील कुमार छजलानी | 51, देवीपथ, जवाहर लाल नेहरू मार्ग | 570955 | 562789 |

*श्री ऋषभदेवाय नम*

## प्रकट प्रभावी भगवान श्री ऋषभदेव स्वामी का तीर्थ
## ग्राम बरखेडा (जिला-जयपुर)

# यात्रा हेतु अवश्य पधारिए

लगभग सात सौ वर्षीय प्राचीन प्रतिमा जी एव तीन सौ वर्षीय जिनालय का जीर्णोद्धारान्तर्गत आमूल-चूल नव-निर्माण हो रहा है। यात्रियो के आवास की समुचित व्यवस्था है। पास ही दो किलोमीटर पर प्रसिद्ध तीर्थ श्री पदमप्रभुजी स्थित है। साथ ही 3 कि मी पर इसी सघ का श्री शातिनाथ स्वामी का प्राचीन जिनालय चन्दलाई ग्राम मे है। आचार्य श्री हीरसूरीश्वरजी म सा यहाँ पर पधारे थे जिसका शिलालेख लगा हुआ है।

जीर्णोद्धार मे अधिक से अधिक आर्थिक योगदान कर अर्जित लक्ष्मी का सदपुयोग कर अक्षय पुण्योपार्जन का अपूर्व अवसर है।

एक ईट का नकरा 3111/-रू भेट करने वालो के नाम शिलालेख पर अकित किये जावेगे।

वहीवट एव सचालन

## श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ (पंजी) जयपुर

## श्री आत्मानंद जैन सभा भवन

घी वालो का रास्ता जौहरी बाजार

जयपुर - 302 003

फोन 563260/569494

# विज्ञापन दाताओं के प्रति हार्दिक आभार
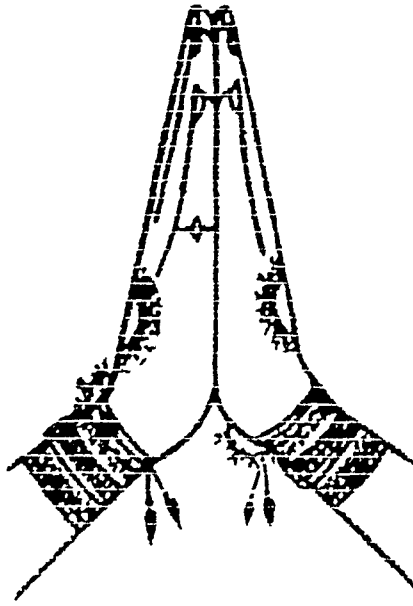
श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ
(पंजी) जयपुर

**आत्मानन्द जैन सभा भवन**

घी वालों का रास्ता, जयपुर-302 003
फोन : 563260/569494

पर्वाधिराज पर्युषण पर्व की शुभ कामनाओं सहित :

# मुन्नीलाल मूसल एवं मूसल परिवार

4320, नथमलजी का चौक,
के.जी.बी. का रास्ता, जौहरी वाजार,
जयपुर (राज.)

*With Best Compliments From :*

# KATARIYA PRODUCTS

*Manufacturers of*

AGRICULTURAL IMPLEMENTS & SMALL TOOLS

Dugar Building, M.I. Road, JAIPUR - 302 001

Ph. 374919, 551139, 546975

# The Publications International

24, SHANTI NIWAS, 2nd Floor, 292, V.P. Road
Imperial Cinema Lane, BOMBAY- 400 004

Phone : Off.: 3863282 Resi.: 3859766 2000216
Fax : 022-3880178

---

हार्दिक शुभकामनाओं सहित :

 


*(लालसोट वाले)*

134, घी वालों का रास्ता, तपागच्छ मंदिर के सामने
जौहरी बाजार, जयपुर- 302 003
टेलीफोन : (दुकान) 562256 (घर) 652256

*मूंगा डोरिया, कोटा डोरिया, कॉटन, प्रिन्ट्स, जयपुर प्रिन्ट्स, सिल्क बंधेज के निर्माता एवं विक्रेता*

*हार्दिक शुभकामनाओं सहित :*

# न्यू गाडन इलेक्ट्रिक डेकोरेटर

शिवजीराम भवन, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता,
जयपुर-302 003
फोन : (घर) 317465 (दुकान) 670529

**(Our Speciality)**

**हमारे यहां पर शादी - विवाह, धार्मिक पर्वों एवं अन्य मांगलिक अवसरों पर लाईट डेकोरेशन का कार्य किया जाता है तथा सभी प्रकार की हाउस वायरिंग का कार्य व ध्वनि प्रसारण आदि का कार्य भी किया जाता है।**

[illegible]

Cont